PERFECT 7

FORTNIGHTLY CURRENT AFFAIRS

मार्च 2022 / Issue-1

जाति के आंकड़ों का महत्व

बहुभाषी शिक्षा प्रणाली के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग

भारत की आर्थिक प्रगति के साधन के रूप में द्विपक्षीय व्यापारिक संधियां

भारत की डिजिटल मुद्रा : चुनौतियाँ तथा संभावनाएं

मानवीय गरिमा पर आघात के रूप में मैन्युअल स्केवेंजिंग

अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाता रूस-यूक्रेन विवाद

भारत में विद्यालयों के बंद होने की विकृति

dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

ध्येय IAS®
most trusted since 2003

IAS PRELIMS FINISHER TEST SERIES 2022

(BILINGUAL)

Starts From

10th April 2022

TOTAL TESTS : 11 (6 GS + 4 CSAT + 1 Full Current Affairs)

OFFLINE & ONLINE

Fee Structure

(All fees are inclusive of GST)

Offline

For Dhyeya Students

Rs. 2,400/-
Who took admission on or after 1st April 2019

Rs. 4,200/-
Who took admission before 1st April 2019

For Non Dhyeya Students
Rs. 6,000/-

Online

For Dhyeya Students
Rs. 2,000/-

For Non Dhyeya Students
Rs. 4,200/-

Test	Date	Timing	Content
TEST-1	10 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2021)
TEST-2	10 APRIL, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-3	17 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. to Jun. 2021)
TEST-4	24 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jul. to Sep. 2021)
TEST-5	24 APRIL, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-6	1 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Oct. to Dec. 2021)
TEST-7	8 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2022)
TEST-8	8 May, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-9	15 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. to May. 2022)
TEST-10	15 May, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-11	22 May, 2022	12 NOON -2 PM	FULL CURRENT AFFAIRS TEST (Jan. 2022- May 2022)

Call : 9205274741 / 42
www.dhyeyaias.com

OUR FACE TO FACE CENTRES

Prayagraj: 0532-2260189, 8853467068 | **Delhi (Mukherjee Nagar):** 9289580074,75 | **Delhi (Laxmi Nagar):** 9205212500, 9205962002 | **Greater Noida:** 9205336037, 38 | **Lucknow (Aliganj):** 0522-4025825, 9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar):** 7234000501, 7234000502 | **Kanpur:** 7887003962, 7897003962 | **Gorakhpur:** 7080847474 | **Bhubaneswar:** 9818244644, 7656949029

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Director’s Message

Mr. Vinay Kumar Singh

हम इस मंत्र में विश्वास रखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है; प्रत्येक व्यक्ति निपुण है एवं प्रत्येक व्यक्ति में असीमित क्षमता है। ध्येय IAS हमेशा से आत्मप्रेरणादायक मार्गदर्शन को प्रोत्साहित करता रहा है जिससे कि छात्रों के भीतर ज्ञान का सृजन हो सके। शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य ज्ञान के सृजन, प्रसार एवं अनुप्रयोग को एकीकृत रूप में पिरोकर एक सह-क्रियाशील प्रभाव उत्पन्न करना है। ध्येय IAS हमेशा से ही छात्रों के भीतर मानवीय मूल्यों एवं सत्यनिष्ठा को विकसित करने का पक्षधर रहा है जिससे कि उनमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो और वे एक ऐसी परिस्थिति का सृजन करें जो न सिर्फ उनके लिए बल्कि समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए भी बेहतर हो। ध्येय IAS नये और प्रभावशाली तरीकों से अपने इस मिशन को पूरा करने के लिए प्रत्येक छात्र को हर प्रयास में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। इसके लिए हम निरंतर और निर्बाध रूप से अपने अध्ययन कार्यक्रम और शिक्षण पद्धति में परिवर्तन एवं परिमार्जन करते रहते हैं।

सिविल सेवा परीक्षा का पाठ्यक्रम प्रतियोगी छात्रों में केवल ज्ञान के प्रति जुनून ही नहीं उत्पन्न करता है बल्कि यथार्थ जीवन में उसका प्रयोग भी सिखाता है। ध्येय IAS प्रतियोगी छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करता है। साथ ही उनमें ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का भी सृजन करता है।

Yours very truly,

Vinay Kumar Singh
CEO and Founder

Mr Q H Khan

ध्येय IAS एक ऐसा संस्थान है जिसका लक्ष्य हमेशा से ही छात्रों के समग्र विकास का रहा है। हमारे संस्थान के शिक्षक अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं जिससे कि छात्रों को प्रत्येक विषय में अधिकतम मदद प्राप्त हो सके। यह एक ऐसा बहुमुखी संस्थान है जहां छात्रों को उच्चस्तरीय कक्षाओं और समृद्धशाली अध्ययन सामग्री के साथ-साथ हरसंभव सहायता उपलब्ध करायी जाती है।

आज ध्येय IAS सिविल सेवा परीक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी पहचान रखता है, क्योंकि हम उच्चस्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण प्रदर्शन में विश्वास रखते हैं। हम छात्रों को ज्ञान की परिधि बढ़ाने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते रहते हैं ताकि वे पाठ्यक्रम के दायरे से सदैव दो कदम आगे रहें। हमारा मुख्य उद्देश्य छात्रों को उनकी आन्तरिक क्षमता का बोध कराना होता है जिससे कि वे अपनी एक अलग पहचान बनाकर कल के समाज का कीर्तिमान बन सकें।

Yours very truly,

Q H Khan
Managing Director

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

UP-PCS PRELIMS KNOCK OUT TEST SERIES 2022

(BILINGUAL)

OFFLINE & ONLINE

Starts From

10th April 2022

TOTAL TESTS : 11 (9 GS + 1 CSAT + 1 Full Current Affairs)

Fee Structure

(All fees are inclusive of GST)

Offline

For Dhyeya Students

Rs. 1,400/- *Who took admission on or after 1st April 2019*

Rs. 2,500/- *Who took admission before 1st April 2019*

For Non Dhyeya Students Rs. 3,500/-

Online

For Dhyeya Students Rs. 1,200/-

For Non Dhyeya Students Rs. 2,500/-

Test	Date	Timing	Syllabus
TEST-1	10 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Apr. 2021)
TEST-2	17 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (May. to Jul. 2021)
TEST-3	24 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Aug. to Oct. 2021)
TEST-4	01 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Nov. 2021 to Jan. 2022)
TEST-5	08 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Feb. 2022 to Mar. 2022)
TEST-6	15 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. 2022 to May 2022)
TEST-7	22 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jul. 2021 to Dec. 2021)
TEST-8 & 9	29 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2022)
		12:00 NOON - 2:00 PM	CSAT
TEST-10 & 11	05 JUNE, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. 2022 to May 2022)
		12:00 NOON - 2:00 PM	FULL CURRENT AFFAIRS TEST (July 2021- MAY 2022)

Call : 9205274741 / 42
www.dhyeyaias.com

OUR FACE TO FACE CENTRES

Prayagraj: 0532-2260189, 8853467068 | **Delhi (Mukherjee Nagar):** 9289580074,75 | **Delhi (Laxmi Nagar):** 9205212500, 9205962002 | **Greater Noida:** 9205336037, 38 | **Lucknow (Aliganj):** 0522-4025825, 9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar):** 7234000501, 7234000502 | **Kanpur:** 7887003962, 7897003962 | **Gorakhpur:** 7080847474 | **Bhubaneswar:** 9818244644, 7656949029

प्रस्तावना

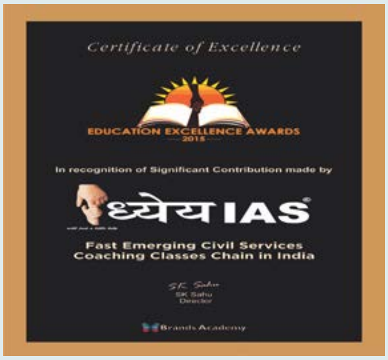

समसामयिक मुद्दे अथवा करेंट अफेयर्स संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर प्रासंगिक सूचनाओं से जुड़ाव होना अभ्यर्थियों के लिए काफी जरूरी समझा गया है और इसी जरूरत को पूरा करने के लिए परफेक्ट 7 मैगजीन को विद्यार्थी जगत के समक्ष माह में दो बार रखा जा रहा है. आईएस और पीसीएस की तैयारी तभी पूर्ण मानी जाती है जब प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू स्तर की गतिशील प्रकृति के तथ्यों और विश्लेषणों को आप सभी तक समावेशी रूप में रखा जाय. परफेक्ट 7 मैगजीन इसी विजन और दृष्टिकोण को ध्यान में रखती है और विद्यार्थियों की कंटेंट के स्तर पर बहुआयामी जरूरतों को समझती है. इसीलिए इस मैगजीन को करेंट अफेयर्स के साथ साथ सामान्य अध्ययन के महत्वपूर्ण खंडों से जुड़े अति प्रासंगिक कंटेंट के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है. एक तरफ जहां करेंट अफेयर्स के स्तर पर सबसे पहले मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखते हुए 7 ज्वलंत विषयों पर समसामयिक लेखों को, पेपर 4 के लिए एथिक्स की केस स्टडीज को, स्वतंत्रता आंदोलन और अन्य क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तित्वों के जीवन और भूमिक. ाओं, सामान्य अध्ययन के विविध खंडों के सर्वाधिक उपयोगी विषयों पर मुख्य परीक्षा के स्तर पर कवरेज दिया जा रहा है, वहीं प्रारंभिक परीक्षा के स्तर पर एक माह के 14 सबसे महत्वपूर्ण करेंट अफेयर्स के मुद्दों को कवर किया जा रहा है जिसमें सर्वाधिक जोर पर्यावरण पारिस्थितिकी, कला और संस्कृति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी , अर्थव्यवस्था के मुद्दों पर है. शब्दावली और अन्य आयामों एक छोटा खंड भी परफेक्ट 7 मैगजीन का पार्ट होगा.

विद्यार्थियों की संकल्पना के स्तर पर समझ को बढ़ाने के लिए ब्रेन बूस्टर्स को 7 ग्राफिक्स के जरिये विषय को संक्षेप और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. इसके अलावा सिविल सर्विसेज की परीक्षा में प्रमुखता से पूछे जाने वाले ग्लोबल इनिशिएटिव्स, वैश्विक संस्थाओं, संगठनों की संरचना, कार्यप्रणाली, महत्वपूर्ण रिपोर्ट्स, सूचकांकों पर अपडेटेड जानकारी इस पत्रिका में शामिल रहेगी. इस मैगजीन को केवल तथ्यों या केवल एनालिसिस पर जोर देते हुए नही बनाया गया है बल्कि इस मैगजीन का विजन यह है कि सिविल सेवा के प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के उभरते हुए ट्रेंड्स और प्रश्नों की नई प्रकृति को देखते हुए हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों को एक ऐसी समावेशी मैगजीन उपलब्ध कराई जाए जिससे वे सिविल सेवा एग्जाम की नई जरूरतों को समझते हुए अपनी तैयारी को एक नई दिशा दे सकें. हमें उम्मीद हैं कि परफेक्ट 7 अपने नए रूप में आप लोगों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगा और इसके साथ ही आप सभी के सुझावों का स्वागत रहेगा.

विनय कुमार सिंह
सम्पादक
ध्येय **IAS**

ध्येय IAS®
most trusted since 2003

PERFECT 7 TEAM

संपादक · विनय कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक · क्यू. एच. खान
सहसंपादक · गौतम तिवारी
उप-संपादक · आशुतोष मिश्र
· सौरभ चक्रवर्ती
प्रकाशन प्रबंधक · डॉ.एस.एम.खालिद
संपादकीय सहयोग · प्रिंस कुमार, गौरव चौधरी, देवेंद्र सिंह, लोकेश शुक्ल
मुख्य लेखक · विवेक ओझा
सहायक लेखक · मृत्युंजय त्रिपाठी,
मुख्य समीक्षक · ए.के श्रीवास्तव
· विनीत अनुराग
· बाघेन्द्र सिंह
आवरण सज्जा एवं विकास · प्रगति केसरवानी
· पुनीष जैन
टंकण · सचिन
· तरून
कार्यालय सहायक · राजू, चन्दन, अरुण

साभार : PIB, द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, जनसत्ता, दैनिक जागरण, डाउन टू अर्थ, इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीक्ली, योजना, कुरुक्षेत्र, द प्रिंट

DHYEYA EDUCATIONAL SERVICES PVT. LTD.
AN ISO 9001:2008 COMPANY

Face to Face Centres

MUKHERJEE NAGAR : 9205274741, 9205274742
RAJENDRA NAGAR : 9205274743
LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002
ALLAHABAD : 0532-2260189, 8853467068
LUCKNOW (ALIGANJ) : 0522-4025825, 9506256789
LUCKNOW (GOMTINAGAR) : 7234000501, 7234000502
GREATER NOIDA : 9205336037, 9205336038
KANPUR : 7887003962, 7897003962
BHUBANESWAR : 8599071555
SRINAGAR (J&K) : 9205962002

PERFECT 7
FORTNIGHTLY CURRENT AFFAIRS

विषय सूची

समसामयिक लेख ———— 1-15
- जाति के आंकड़ों का महत्व
- बहुभाषी शिक्षा प्रणाली के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग
- भारत की आर्थिक प्रगति के साधन के रूप में द्विपक्षीय व्यापारिक संधियां
- भारत की डिजिटल मुद्रा : चुनौतियाँ तथा संभावनाएं
- मानवीय गरिमा पर आघात के रूप में मैन्युअल स्केवेंजिंग
- अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाता रूस-यूक्रेन विवाद
- भारत में विद्यालयों के बंद होने की विकृति

संक्षिप्त मुद्दे राष्ट्रीय ---------- 16-17
संक्षिप्त मुद्दे अंतर्राष्ट्रीय ---------- 18-19
संक्षिप्त मुद्दे पर्यावरण ---------- 20
संक्षिप्त मुद्दे विज्ञान एवं तकनीक ---------- 21-22
संक्षिप्त मुद्दे आर्थिक ---------- 23
राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की महत्वपूर्ण खबरें ---------- 24-27
समसामयिक घटनाएं एक नजर में ---------- 28
ब्रेन बूस्टर ---------- 29-35
पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण तथा समसामयिक बहुविकल्पीय प्रश्न ---------- 36-40
GS Paper IV के लिए हल केस स्टडी ---------- 41
व्यक्ति विशेष ---------- 42
राजव्यवस्था शब्दावली ---------- 43

OUR OTHER INITIATIVES

UDAAN TIMES©
Putting You Ahead of Time...
Hindi & English Current Affairs Monthly News Paper

DHYEYA TV
Current affairs Programmes hosted by Mr. Qurban Ali
Ex. Editor RSTV) & by Dhyeya Team
Broadcasted on YouTube & Dhyeya TV

सात महत्वपूर्ण मुद्दे

जाति के आंकड़ों का महत्व

- चर्चा में क्यों
- सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियां
- न्यायोचित डेटा के बिना लोक लुभावन वादे
- जाति जनगणना के बारे में
- जाति जनगणना का महत्व
- एक विश्वसनीय अभ्यास की आवश्यकता
- निष्कर्ष

चर्चा में क्यों :-

- हाल ही में, सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट) के लिए अखिल भारतीय कोटा सीटों में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए 27% कोटा को बरकरार रखा.
- सर्वोच्च न्यायालय ने दोहराया कि पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण कोई अपवाद नहीं है बल्कि संविधान के अनुच्छेद 15(1) के तहत समानता के सिद्धांत का विस्तार है.

सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियां :-

- निर्णय ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि कैसे खुली प्रतियोगी परीक्षाएं, शैक्षिक सुविधाओं में व्यापक असमानताओं, सामाजिक पूर्वाग्रहों की अनदेखी कर समान अवसर प्रदान करने का भ्रम देती हैं.
- न्यायालय ने बताया कि इस तरह की असमानताएं केवल अच्छी शिक्षा या वित्तीय बाधाओं तक पहुंच के मुद्दे तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि विरासत में मिली सांस्कृतिक पूंजी (संचार कौशल, किताबें, उच्चारण, शैक्षणिक उपलब्धियां, सामाजिक नेटवर्क, आदि) के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभावों तक उनका विस्तार है.
- यह उच्च-श्रेणी के प्रदर्शन के लिए उच्च जाति के बच्चों के अचेतन प्रशिक्षण को सुनिश्चित करता है.
- संविधान सभा ने संवैधानिक प्रावधानों को प्रस्तुत करते हुए समानता के सिद्धांत को अपनाया जो सरकार को "निचली जातियों" के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान करने में सक्षम बनाता है.
- कई लोग आरक्षण जैसी सकारात्मक कार्यवाई का विरोध करते हैं. उनका मानना है कि इस तरह के प्रावधान केवल जातिगत मतभेदों को कायम रखते हैं और वे "जातिहीन समाज" का आह्वान करते हैं.
- जैसा कि न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़ ने कहा है कि "जातिविहीनता" एक विशेषाधिकार है जिसे केवल उच्च जाति ही वहन कर सकती है क्योंकि उनके जातिगत विशेषाधिकार का सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक पूंजी में रूपांतरण किया जा चुका है.
- दूसरी ओर, जो व्यक्ति निचली जातियों से संबंधित हैं, उन्हें आरक्षण जैसे उपायों के लाभों का दावा करने के लिए अपनी जातिगत पहचान को बनाए रखना चाहिए, जो जाति व्यवस्था के कारण हुए ऐतिहासिक नुकसान को पहचानने में सक्षम हैं.

न्यायोचित डेटा के बिना लोक लुभावन वादे :-

- आज देश में चलने वाली जाति और वर्ग की राजनीति के कारण, विश्वास की कमी के चलते राज्य की मंशा पर प्रश्न उठ रहे हैं.
- निर्णय को सही ठहराने के लिए किसी भी विश्वसनीय डेटा संग्रह प्रक्रिया के बिना राजनीतिक दल सत्ता में आने पर समुदायों के लिए आरक्षण का वादा करते हैं.
- कुछ समय पहले, सर्वोच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र में मराठा समुदाय के लिए 50% से अधिक आरक्षण को रद्द कर दिया था, जो इंद्रा साहनी मामला में निर्धारित सीमा से अधिक था.
- यह देखा गया है कि "जब अधिक लोग आगे बढ़ने के बजाय पिछड़ेपन की आकांक्षा रखते हैं, तो देश खुद ही स्थिर हो जाता है. यह स्थिति संवैधानिक उद्देश्यों के अनुरूप नहीं है"

जाति जनगणना के बारे में :-

- जाति जनगणना का अर्थ है जनगणना प्रक्रिया में भारत की जनसंख्या को जाति-वार सूचियों में सम्मिलित करना, जो प्रत्येक दशक में एक बार आयोजित की जा सकती है.
- अंतिम जाति जनगणना के एकत्रित और प्रकाशित आंकड़े जनगणना 1931 के अनुरूप हैं.
- 1941 में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा की गई अंतिम जनगणना ने जाति के आंकड़े एकत्रित किए लेकिन आंकड़े प्रकाशित नहीं किए गये.
- स्वतंत्रता के बाद, 1951 की जनगणना में सरकार ने केवल एससी और एसटी के जाति संबंधित डेटा एकत्रित और प्रकाशित किये थे.
- 1951 से 2011 तक धर्म, भाषा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, आदि के डेटा के साथ ही अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की आबादी से संबंधित डेटा को प्रकाशित किया जाता रहा है.
- हालाँकि, इसने कभी भी ओबीसी, निचली और मध्यम जातियों की गिनती नहीं की, जो

मंडल आयोग के अनुसार देश की आबादी का लगभग 52 प्रतिशत है.

- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के अलावा अन्य सभी जातियों को सामान्य श्रेणी में गिना जाता है.
- चूंकि महामारी के कारण 2021 में जनगणना नहीं की जा सकी थी, इसलिए यह 2022 में आयोजित की जायेगी.

एसईसीसी और जनगणना के बीच अंतर :-

जनगणना	एसईसीसी
जनगणना भारतीय आबादी की एक तस्वीर प्रदान करती है.	एसईसीसी राज्य सहायता के लाभार्थियों की पहचान करने का एक उपकरण है.
जनगणना 1948 के जनगणना अधिनियम के अंतर्गत आती है और सभी डेटा को गोपनीय माना जाता है.	एसईसीसी में दी गई सभी व्यक्तिगत जानकारी सरकारी विभागों द्वारा परिवारों को लाभ देने और/या प्रतिबंधित करने के लिए उपयोग के लिए उपलब्ध है

जाति जनगणना का महत्व :-

- ताजा जाति जनगणना के आंकड़ों के अभाव का अभिप्राय है कि 2022 में कल्याणकारी नीतियां बनाने के लिए 1931 की जाति आँकड़ों का उपयोग किया जा रहा है.
- नीति निर्माण के लिए एक ताजा और अद्यतन डेटा सेट करने की आवश्यकता है.
- एनएसएसओ (राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन) के सर्वेक्षणों ने 1999 और 2007 के बीच अलग-अलग अनुमान प्रदान किए हैं, जो ओबीसी के लिए लगभग 36 प्रतिशत से 45 प्रतिशत तक भिन्न हैं.
- हाल ही में, यूनाइटेड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस (यूडीआईएसई प्लस) के आंकड़े प्रत्येक जाति समूह के लिए स्कूली शिक्षा के आंकड़ो को दर्शाते हैं.
- यूडीआईएसई प्लस के आंकड़ों से पता चलता है कि प्राथमिक विद्यालयों में ओबीसी बच्चे 45 फीसदी, अनुसूचित जाति के 19 फीसदी और अनुसूचित जनजाति के 11 फीसदी छात्र शामिल हैं.
- शेष 25 प्रतिशत सवर्ण वर्ग के थे.
- नमूना सर्वेक्षणों के आधार पर उपलब्ध अलग-अलग डेटा सेट भारत में वर्तमान जातिगत जनगणना को सही रूप में प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है.
- ये डेटा सेट मंडल आयोग के अनुमानों से भी भिन्न हैं जो जाति-आधारित आरक्षण और नीति निर्माण का आधार बनते हैं.

एक विश्वसनीय अभ्यास की आवश्यकता :-

- **नागरिकों का विश्वास बहाल करना :-** जब तक जाति के संबंध में डेटा संग्रह के विश्वसनीय प्रक्रिया नहीं अपनाई जाती, तब तक नागरिकों का विश्वास बहाल नहीं किया जा सकता है.
- **ओबीसी पर कोई डेटा नहीं :-** यद्यपि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों से संबंधित आंकड़ों को जनगणना में शामिल किया गया है, पर ओबीसी पर ऐसा कोई डेटा उपलब्ध नहीं है.
- **दोषपूर्ण एसईसीसी डेटा:-** 2011 में आयोजित सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना (एसईसीसी) को "दोषपूर्ण" "अविश्वसनीय" और "अनुपयोगी" कहा गया है.
- **मंडल आयोग की सिफारिशें :-** मंडल आयोग की सिफारिशों की आलोचना की जाती है क्योंकि यह आयोग के सदस्यों के व्यक्तिगत ज्ञान पर आधारित हैं, किसी प्रमाणिक साक्ष्य पर नहीं.
- **जातियों के वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन की आवश्यकता :-** इंद्र साहनी केस में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि राज्यों को उचित और वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के बाद ही एक विशेष वर्ग के लोगों के "पिछड़े" होने का निष्कर्ष निकालना चाहिए. सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि इस तरह के निष्कर्ष (पिछड़े वर्ग में शामिल जातियों की) की विशेषज्ञों के स्थायी निकाय द्वारा समय-समय पर समीक्षा होती रहनी चाहिए.
- **जाति सूची का आवधिक संशोधन :-** राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग अधिनियम, 1993, धारा 11 के तहत प्रावधान है कि केंद्र सरकार हर 10 साल में सूचियों को संशोधित कर सकती है जो वर्ग पिछड़े नहीं रह गये हैं उनको सूची से बाहर किया जाएगा और नए पिछड़े समूह को सूची में शामिल किया जायेगा.
- इस प्रक्रिया का आज तक पालन नहीं किया गया है. पिछले साल, 2021 की जनगणना में जाति डेटा (ओबीसी सहित) को शामिल करने के लिए कई बार मांग उठाई गई, और अब मामला सर्वोच्च न्यायालय में लंबित है.
- जाति के आंकड़े न केवल स्वतंत्र शोध को सक्षम करेंगे, बल्कि इस सवाल का भी समाधान करेंगे कि किसे सकारात्मक कार्यवाई की आवश्यकता है और किसे नहीं.
- जब तक हिंसक आंदोलनों और राजनीतिक दबावों से आरक्षण का परिणाम तय होता रहेगा, तब तक किसी भी सकारात्मक कार्यवाई के प्रयास जाति और वर्ग की राजनीति की छाया में होते रहेंगे.

निष्कर्ष :-

- प्रमाणिक डेटा के बिना जाति जनगणना अप्रभावी होगी. शायद डेटा को स्वीकार करने में निहित कई स्वार्थों की प्रतिस्पर्धा के कारण जाति जनगणना के आंकड़े हमेशा विवादित रहे हैं.
- निष्पक्ष डेटा और उसके बाद के शोध सबसे पिछड़े वर्गों के उत्थान के वास्तविक प्रयासों को जाति और वर्ग की राजनीति की छाया से बचा सकते हैं और स्पेक्ट्रम के दोनों पक्षों (आरक्षण के पक्ष और विपक्ष) के लोगों के लिए सूचनात्मक अर्थात आरक्षण की वास्तविक तस्वीर को प्रदर्शित करने वाले हो सकते हैं.

बहुभाषी शिक्षा प्रणाली के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग

- **चर्चा में क्यों**
- **लुप्त हो रही भाषा : चिंता का कारण**
- **मातृभाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति**
- **हमें एक प्रभावी बहुभाषी शिक्षा प्रणाली बनाने की आवश्यकता क्यों है**
- **कुछ हाल के घटनाक्रम**
- **आगे की राह**

सदियों से, भारत कई भाषाओं और बोलियों का घर रहा है, जिससे इसकी भाषाई और सांस्कृतिक विविधता दुनिया में सबसे अद्वितीय है. वास्तव में, हमारी भाषाई विविधता हमारी प्राचीन सभ्यता की आधारशिलाओं में से एक है. यह हमारी मातृभाषा है जो हमारी दृष्टि, आकांक्षाओं, हमारे मूल्यों और आदर्शों के साथ-साथ हमारे रचनात्मक और साहित्यिक प्रयासों को भी अभिव्यक्ति देती है. कुछ साल पहले एक भाषण में, यूनेस्को के पूर्व महानिदेशक, कोइचिरो मात्सुउरा(**Koïchiro Matsuura**)ने मातृभाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए टिप्पणी की कि "हम अपनी माताओं (मातृभाषा) से जो भाषा सीखते हैं, वह हमारे आंतरिक विचारों की मातृभूमि है". उन्होंने उचित रूप से प्रत्येक भाषा को हर अपूरणीय मानव जीवन के रूप में मूल्यवान और अलग प्रदर्शित होने के लिए वर्णित किया.

लुप्त हो रही भाषा : चिंता का कारण

- भाषाएं उस सेतु के सामान हैं जो सांस्कृतिक और सभ्यता की निरंतरता सुनिश्चित करती हैं, वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण ने न केवल विकास को प्रभावित किया है, बल्कि इस समृद्ध सांस्कृतिक और भाषाई टेपेस्ट्री में हमारी कई बोलियों के अस्तित्व को भी प्रभावित किया है.
- नवंबर 1999 में, यूनेस्को के आम सम्मेलन ने, कई भाषाओं की घटती स्थिति की प्रतिक्रिया में 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में घोषित किया था. ख संयुक्त राष्ट्र एजेंसी के अनुसार, दुनिया में बोली जाने वाली अनुमानित 6,000 भाषाओं में से कम से कम 43% विलुप्त हो गई हैं – वास्तव में यह एक खतरनाक आंकड़ा है.

भाषाएं क्यों मरती हैं?

आर्थिक सफलता

- उदाहरण के लिए, कम बोली जाने वाली भाषा के बोलने वाले यह तय कर सकते हैं कि उनके बच्चों के भविष्य के लिए बेहतर है कि वे उन्हें ऐसी भाषा सिखाएं जो आर्थिक सफलता से जुड़ी हों.
- उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में दूसरी पीढ़ी के अप्रवासियों में बहुत से लोग अपने माता-पिता की भाषाओं को प्रखरता से नहीं बोलते हैं क्योंकि अंग्रेजी बोलना आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से अधिक फायदेमंद है.

प्रवासन

- माइग्रेशन, भाषा परिवर्तन और भाषा की मृत्यु में एक बड़ी भूमिका निभाता है. जब प्रोटो-इंडो-यूरोपीय के वक्ताओं ने 6,000 और 8,000 साल पहले यूरोप के अधिकांश हिस्सों और एशिया के बड़े हिस्सों में प्रवास किया था, तो शायद उस समय बड़े पैमाने पर भाषा परिवर्तन और भाषा की मृत्यु की घटना हुई होगी.

स्क्रिप्ट की कमी

- स्कूलों और कॉलेजों में आधिकारिक भाषाओं में ही करवाई जाती है. बिना लिपियों वाली भाषाओं का शिक्षा प्रणाली में कोई स्थान नहीं होता है. नतीजतन, गोंडी, भिली और संथाली जैसी कई भाषाएं अब एक अल्पसंख्यक भाषा बन गई हैं.

इस साल के विषय

2022 में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का विषय " **Using Technology for Multilingual Learning% Challenges and Opportunities**" विशेष रूप से प्रासंगिक है.

- इस विषय का केंद्रीय भाव यह है कि बहुभाषाई स्तर पर शिक्षण-सीखने के अनुभव का समर्थन और समृद्ध करने के लिए हमे प्रौद्योगिकी का लाभ लेना चाहिए.
- इसका उद्देश्य एक गुणात्मक, न्यायसंगत और समावेशी शैक्षिक अनुभव प्राप्त करना भी है. अनिवार्य रूप से, प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग तेजी से विकास को ट्रैक करने भी होगा.
- इसे जब भारतीय स्कूलों की कक्षाओं में लागू करते है, तो बहुभाषी दृष्टिकोण, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर उभरती चुनौतियों का सामना करके सीखने के नए रास्ते भी बनाएगा. संपूर्णता में देखा जाए तो यह प्रधानमंत्री के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के दृष्टिकोण के अनुरूप भी है.

मातृभाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- यह ध्यान रखना प्रासंगिक होगा कि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (**NEP**) 2020 एक दू.रदर्शी दस्तावेज है जो कम से कम कक्षा 5 तक शिक्षा के माध्यम में मातृभाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करता है, लेकिन कक्षा 8 और उससे आगे में प्राथमिकता का आध.ार रखा गया है.

- एनईपी भविष्य के लिए एक रोड मैप तैयार करने में, शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया का नया निर्माण करना चाहता है और इसे समग्र, मूल्य-आधारित और सम.ावेशी बनाकर इसे संशोधित करना चाहता है. शिक्षण में मातृभाषा का उपयोग सीखन के परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करता है, साथ ही छात्रों के संज्ञानात्मक संकायों का विकास भी करता है.
- भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली बनाने और सुधारने की आवश्यकता है. यह शिक्षार्थियों के लिए विषयों को आसान करके मौजूदा ज्ञान प्रणा.लियों को व्यवस्थित कर शैक्षिक अनुभव को बदलने में मदद करेगा.
- प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी, सर सी.वी. रमन के शब्दों को याद करना प्रासंगिक होगा, जिन्होंने बड़ी स्पष्टता और दृष्टि के साथ देखा कि हमें अपनी मातृभाषा में विज्ञान को सिखाना चाहिए. अन्यथा, विज्ञान एक दिखावे की गतिविधि बन जाएगा और ऐसी गतिविधि में सभी लोग भाग नहीं ले सकेंगे.

हमें एक प्रभावी बहुभाषी शिक्षा प्रणाली बनाने की आवश्यकता क्यों है?

- सर सी.वी. रमन के कथन के तथ्य के प्रकाश में देखते हैं कि हम एक बड़ी अंग्रेजी-आधारित शिक्षा प्रणाली बनाने में सक्षम हैं जिसमें ऐसे कॉलेज शामिल हैं जो चिकित्सा और इंजीनियरिंग के कई विषयों में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं. यह प्रभावशाली प्रणाली विरोधाभासी रूप से हमारे देश में शिक्षार्थियों के एक विशाल संख्या को उच्च शिक्षा की पहुंच से बाहर करती है.
- ध्यातव्य है कि 2020 में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) द्वारा 83,000 से अधिक छात्रों पर किए गए एक सर्वेक्षण में, लगभग 44% छात्रों ने अपनी मातृभाषा में इंजीनियरिंग का

अध्ययन करने के पक्ष में मतदान किया, जिसने तकनीकी शिक्षा में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को उजागर किया.

- अपनी मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करना, आत्मसम्मान और पहचान की भावना निर्माण के मूल में है। लोगों को सभी भाषाओं को समान सम्मान देना चाहिए, लेकिन एक ऐसी प्रवृत्ति देखी गई है, जिसे खेद के साथ नोट किया जाना चाहिए, कि कुछ शिक्षक और माता-पिता, अंग्रेजी भाषा सीखने को वरीयता देते हुए भारतीय भाषाओं में शिक्षा के बारे में ढीला रवैया अपनाते हैं.
- परिणामत:, बच्चों की अपनी मातृभाषा तक पहुंच सीमित हो जाती है, जिससे एक प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतिक जड़हीनता हो जाती है, खासकर अगर सुधारात्मक कदम नहीं उठाए जाते हैं. हमें अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि वे अंग्रेजी में योग्यता को बौद्धिक श्रेष्ठता का पैमाना या जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए एक शर्त के रूप में मानने की गलती न करें.

कुछ हाल के घटनाक्रम

- इस संदर्भ में, केंद्र सरकार के ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म पर कुछ पाठ्यक्रमों का अनुवाद करने के लिए एआईसीटीई और आईआईटी मद्रास का सहयोग लिया गया .

इस प्लेटफार्म युवा आकांक्षी दिमागों के लिए अध्ययन वेब्स पर सक्रिय शिक्षा (**SWAYAM**) पर तमिल, हिंदी, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली, मराठी, मलयालम और गुजराती जैसी आठ क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करना सराहनीय कदम रहा.

इस तरह की तकनीक आधारित पहल, उच्च शिक्षा के लोकतंत्रीकरण के लिए काम करेगी. इसी समय, एनईपी के अनुरूप 11 देशी भाषाओं हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, गुजराती, मलयालम, बंगाली, असमिया, पंजाबी और उड़िया में बी.टेक कार्यक्रमों की अनुमति देने के लिए एआईसीटीई का निर्णय एक ऐतिहासिक कदम है जो छात्रों के लिए अवसरों के दरवाजे खोल देगा .

आगे की राह-

- हमारे नीति-निर्माताओं, शिक्षकों, माता-.पिता को मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं में शिक्षा के परिणाम को यूरोपीय देशों, जापान, चीन और कोरिया जैसी एशियाई शक्तियों से समझना चाहिए.
- भाषा जनगणना के अनुसार, जिनके निष्कर्षों को 2018 में व्यापक रूप से रिपोर्ट किया गया था, भारत 19,500 भाषाओं या बोलियों का घर है, जिनमें से 121 भाष.ाएं हमारे देश में है जो 10,000 या उससे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं.
- यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम 196 भारतीय भाषाओं को पुनर्जीवित करें जो "लुप्तप्राय" श्रेणी में आती हैं.
- हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर एक भाषा एक सांस्कृतिक पहचान को बनाती है जो विशुद्ध ज्ञान और हमारी सामूहिक चेतना को संग्रहीत करती है, जो हमारे मूल्यों, परंपराओं, कहानियों, व्यवहार और मानदंडों, कहावतों, और मुहावरों आदि के रूप में होती हैं. सदियों से सह-अस्तित्व की भा.वना, एक-दूसरे का सहयोग लेना, पोषण करना, हमारी भाषाएं आदि हमारी व्यक्तिगत, स्थानीय और राष्ट्रीय पहचान के साथ जुड़ी हुई हैं.

NOTES

भारत की आर्थिक प्रगति के साधन के रूप में द्विपक्षीय व्यापारिक संधियां

- सन्दर्भ
- परिचय
- हालिया समय में भारत द्वारा किये गए द्विपक्षीय समझौते
- विभिन्न प्रकार के द्विपक्षीय व्यापार समझौते
- द्विपक्षीय व्यापारिक समझौतों की प्रासंगिकता
- द्विपक्षीय व्यापार समझौतों का लाभ उठाने के लिए किन क्षेत्रों में करना होगा सुधार
- निष्कर्ष

सन्दर्भ

पिछले कुछ समय में भारत द्वारा लगातार द्विपक्षीय व्यापारिक संधियों को बढ़ाया जा रहा है. ये संधियां कोरोनोत्तर विश्व में भारत की आर्थिक प्रगति के साधन के रूप में अत्यंत प्रभावी होंगी.

परिचय

पिछले कुछ समय से भारत सहित संपूर्ण विश्व कोरोना के प्रभाव से प्रभावित था. इस दौरान आर्थिक गतिविधियां कम हो रही थी तथा व्यय में वृद्धि हो रही थी जिससे आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई थी. अब कोरोना के उपरांत सभी देश आर्थिक प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं. भारत ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है. हाल ही में भारत के द्वारा कई द्विपक्षीय संधियां की गई हैं जो को कोरोनोत्तर विश्व में भारत की आर्थिक प्रगति का संकेतक बन रही हैं.

हालिया समय में भारत द्वारा किये गए द्विपक्षीय समझौते :

भारत - ब्रिटेन का अर्ली हार्वेस्ट एग्रीमेंट : भारत तथा यूनाइटेड किंगडम में औपचारिक मुक्त व्यापार समझौता की वार्ता आरंभ की गई है. इस वार्ता का उद्देश्य कुछ माह में अर्ली हार्वेस्ट एग्रीमेन्ट्स (सीमित व्यापार समझौता) करना है. इस अंतरिम समझौते का लक्ष्य 65% वस्तु तथा 40% सेवाओं के लिए मुक्त व्यापार समझौता करना है. समझौते के पूर्ण होने पर 90% वस्तुओं के मुक्त व्यापार की संभावना है.अर्ली हार्वेस्ट एग्रीमनेट्स का उपयोग दो देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं की प्रतिबंधित सूची पर द्विपक्षीय व्यापार को आरम्भ करने के लिए किया जाता है. यह व्यापक मुक्त व्यापार समझौते का आरंभिक चरण माना जाता है.

भारत-ऑस्ट्रेलिया का सीईसीए समझौता

कैनबरा के व्यापार, पर्यटन और निवेश मंत्री द्वारा हाल ही में यह कहा गया है कि ऑस्ट्रेलिया भारत के साथ एक "अंतरिम" मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए)करने के लिए प्रतिबद्ध है. इस सन्दर्भ में भारत तथा ऑस्ट्रेलिया ने सीईसीए समझौता करेगा जिसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच व्यापार को प्रोत्साहित करने और सुधारने के लिए एक संस्थागत तंत्र प्रदान करना है.दोनों देशो के मध्य वस्तुओं तथा सेवाओं का द्विपक्षीय व्यापार 2007 में 10.12 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2020 में 18.08 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया.अत: यह स्थिति दोनों देशो के मध्य मुक्त व्यापार समझौते पर आगे बढ़ने की उचित स्थिति है.

भारत-यूएई सीईपीए समझौता :-

भारत और संयुक्त अरब अमीरात ने एक व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते(सीईपीए) पर हस्ताक्षर किए. यह समझौता भारत द्वारा इस क्षेत्र में किया जाने वाला पहला समझौता है. इस समझौते के फलस्वरूप पांच वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार को 60 अरब डॉलर से बढ़ाकर 100 अरब डॉलर करने की उम्मीद है.सीईपीए एक प्रकार का व्यापार समझौता है जो सेवाओं और निवेश और आर्थिक साझेदारी के अन्य क्षेत्रों, व्यापार सुविधा और सीमा शुल्क सहयोग, प्रतिस्पर्धा और बौद्धिक संपदा अधिकारों, तथा व्यापार के नियामक आयामों को भी संदर्भित करता है. संयुक्त अरब अमीरात के साथ बातचीत के अतिरिक्त, भारत की कनाडा के साथ लंबे समय से बातचीत चल रही है. दक्षिण कोरिया तथा जापान के साथ भारत के सीईपीए समझौते क्रियान्वित हो रहे हैं. भारत बांग्लादेश के साथ भी द्विपक्षीय समझौते पर विचार कर रहा है.

विभिन्न प्रकार के द्विपक्षीय व्यापार समझौते :

- **मुक्त व्यापार समझौता:** एक मुक्त व्यापार समझौता एक ऐसा समझौता है जिसमें दो या दो से अधिक देश, भागीदार देश को तरजीही व्यापार शर्तें, टैरिफ रियायत आदि प्रदान करने के लिए सहमत होते हैं. यहां उत्पादों और सेवाओं की एक नकारात्मक सूची भागीदार देशों द्वारा रखी जाती है, जिन पर एफटीए की शर्तें लागू नहीं होती हैं, इसलिए यह तरजीही व्यापार समझौते की तुलना में अधिक व्यापक है. भारत ने कई देशों के साथ एफटीए पर बातचीत की है उदाहरण श्रीलंका तथा आसियान. हालाँकि भारत आसियान द्वारा प्रस्तावित क्षेत्रीय मुक्त व्यापार समझौते आरसीईईपी से बाहर भी हो चुका है.

- **वरीयता व्यापार समझौता:** इस प्रकार के समझौते में, दो या दो से अधिक भागीदार कुछ उत्पादों में प्रवेश का अधिमान्य अधिकार देते हैं. इसमें टैरिफ लाइनों की एक सहमत संख्या पर शुल्क को कम करके किया जाता है. यहां एक सकारात्मक सूची ,अर्थात उन उत्पादों की सूची, जिन पर दोनों भागीदारों ने तरजीही पहुंच प्रदान करने के लिए सहमति व्यक्त की है, निर्धारित की जाती है . पीटीए में भी कुछ उत्पादों के लिए टैरिफ को शून्य तक घटाया जा सकता है. भारत ने अफग. ानिस्तान के साथ एक पीटीए पर हस्ताक्षर किए.
- **व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता:** यह एफटीए की तुलना में अधिक व्यापक हैं. सीईसीए/सीईपीए व्यापार के नियामकीय पहलुओं को भी संदर्भित करता है . सीईपीए सेवाओं और निवेश, और आर्थिक साझेदा. री के अन्य क्षेत्रों में व्यापार पर वार्ता को सम्मिलित करता है. यह व्यापार सुविधा और सीमा शुल्क सहयोग, प्रतिस्पर्धा और आईप. ीआर जैसे क्षेत्रों में समझौते को भी संदर्भित करता है. भारत ने दक्षिण कोरिया और जापान के साथ सीईपीए पर हस्ताक्षर किए हैं.
- **अर्ली हार्वेस्ट स्कीम:** अर्ली हार्वेस्ट स्कीम (ईएचएस) दो व्यापारिक भागीदारों के बीच एफटीए/सीईसीए/सीईपीए का अग्रदूत है. उदाहरण के लिए आरसीईपी के लिए अर्ली हार्वेस्ट योजना शुरू की गई है. इस स्तर पर, बातचीत करने वाले देश वास्तविक एफटीए वार्ता के समापन तक टैरिफ उदा. रीकरण के लिए कुछ उत्पादों की पहचान करते हैं. इस प्रकार एक अर्ली हार्वेस्ट योजना संवर्धित जुड़ाव और विश्वास निर्माण की दिशा में पहला कदम है. हाल ही में भारत ने ब्रिटेन से अर्ली हार्वेस्ट स्कीम पर वार्ता की है.

द्विपक्षीय व्यापारिक समझौतों की प्रासंगिकता

पिछले कुछ समय से संपूर्ण विश्व में संरक्षण ावादी प्रवृत्ति में वृद्धि हो रही है. यह संरक्षण ावाद की प्रवृत्ति वैश्वीकरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी. इस संरक्षणवादी प्रवृत्ति के आर्थिक प्रभाव से बचने के लिए द्विपक्षीय समझौते महत्वपूर्ण हो जाते हैं.

- हाल ही में भारत ने आरसीईपी (आ. सियान द्वारा प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौता) से अपना नाम वापस लिया है. इससे भारत एक बड़े मार्केट से वंचित हो गया. अत: अब द्विपक्षीय व्यापार समझौतों के माध्यम से भारत इस नुकसान की भरपाई करने में सक्षम होगा.
- कोरोना काल के दौरान सभी देशों की आर्थिक प्रगति प्रभावित हुई. कई देश संरक्षण ावाद की तरफ अपना रुख कर चुके हैं. इस दौरान भारत ने भी महत्वकांक्षी आत्मनिर्भर भारत की योजना बनाई. आत्मनिर्भर भारत योजना के साथ-साथ मेक इन इंडिया एक निर्यातोन्मुखी मुखी अभियान है इसके उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए द्विपक्षीय समझौते आवश्यक हो जाते हैं.
- ये द्विपक्षीय समझौते 2030 तक 1 ट्रिलियन डालर के व्यापारिक निर्यात तथा 1 ट्रिलियन डालर के सेवाओं के निर्यात के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगा. इसके साथ ही डी-ग्लोबलाइजेशन की स्थिति में भारत के 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था तक पहुंचने के लिए ये द्विपक्षीय समझौते सहयोगी होंगे.
- वर्तमान समय में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों पर पश्चिमी देशों का वर्चस्व है . कृषि सब्सिडी, निर्यात सब्सिडी इत्यादि पर लगातार भारत का इन देशों के साथ विवाद बना रहता है. द्विपक्षीय समझौतों से भारत को चयन की स्वतंत्रता मिलती है जिससे भारत आर्थिक प्रगति तथा वंचित वर्ग के कल्याण दोनों को एक साथ लेकर चल सकता है.
- वर्तमान में बहुपक्षीय व्यापार समझौते संकटापन्न हैं. 10 दिसंबर 2019 से, विश्व व्यापार संगठन की अपीलीय संस्था यानी एबी का कामकाज,गणपूर्ति न पूरा होने की वजह से ठप पड़ा है. अमेरिकी राष्ट्रपति, इस संस्था के नए सदस्यों के नाम पर अपनी सहमति नहीं दे रहे हैं. यह बहुपक्षीय व्यापार को प्रभावित कर रहा है.

द्विपक्षीय व्यापार समझौतों का लाभ उठाने के लिए किन क्षेत्रों में करना होगा सुधार??

- यद्यपि भारत द्विपक्षीय समझौते लगातार कर रहा है परंतु इन समझौतों का वास्तविक लाभ उठाने के लिए भारत को कुछ क्षेत्रों में सुधार करने होंगे.
- अभी तक भारत एक मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में विकसित नहीं हो सका है. भ. ारत का उद्योग विभाग निर्यात उन्मुख नहीं है. भारत लगातार व्यापार घाटे का सामना करता रहता है .इस स्थिति में मुक्त व्यापार समझौते भारत के स्थानीय उद्योगों को क्षति पहुंचा सकते हैं.
- मैन्युफैक्चरिंग हब बनने के लिए यह आवश्यक है कि भारत ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करें. भारत द्वारा ग्लासगो में किए गए पर्यावरण संरक्षण के दावों के उपरांत यह मार्ग और अधिक कठिन दिखता है.
- भारत को स्थानीय स्तर पर विनिर्माण को बढ़ावा देना होगा. इसके साथ ही साथ भारत को ऐसी कृषि तथा उद्योग नीति बनानी होगी जो एक दूसरे को समर्थन दे.
- औद्योगिक नीति तथा आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को साथ लेकर चलना भारत के लिए बड़ी चुनौती होगी.

निष्कर्ष

इस वर्ष के बजट में निर्यात को बढ़ाने के लिए उपयुक्त प्रावधानों की संभावना व्यक्त की जा रही थी परंतु बजट निर्यात बढ़ाने के संबंध में मौन रहा. सरकार द्वारा द्विपक्षीय समझौतों के माध्यम से आर्थिक प्रगति तथा व्यापार के अवसर खोले जा रहे हैं जो कालांतर में भारतीय व्यापार, उद्योग, विनिर्माण तथा निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सहायक होंगे. द्विपक्षीय समझौतों के माध्यम से पश्चिमी देशों का व्यापारिक वर्चस्व सम. ाप्त होगा बल्कि भारत तथा अन्य देशों को डी-ग्लोबलाइजेशन के युग में व्यापक चयन की स्वतंत्रता भी प्राप्त होगी.

भारत की डिजिटल मुद्रा : चुनौतियाँ तथा संभावनाएं

- परिचय
- क्या है डिजिटल मुद्रा (सीबीडीसी)
- भारत में डिजिटल मुद्रा
- भारत में डिजिटल मुद्रा लॉन्च करने में आने वाली चुनौतियाँ
- भारत को डिजिटल मुद्रा की तरफ क्यों बढ़ना चाहिए
- डिजिटल मुद्रा लांच करने के पूर्व आरबीआई को किन तथ्यों का ध्यान रखना होगा
- निष्कर्ष

परिचय

इस वर्ष पारित बजट में केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण जी ने डिजिटल मुद्रा लांच करने का प्रस्ताव रखा है. बिटकॉइन तथा ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी आने के उपरांत सम्पूर्ण विश्व डिजिटल मुद्रा की तरफ बढ़ रहा था. ऐसे में भारत ने तकनीकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए डिजिटल मुद्रा लॉन्च करने का विचार बनाया. इसे लांच करने के पूर्व भारत के केंद्रीय बैंक को इसकी रूपरेखा, कार्य क्षमता, तथा उपयोगिता का मूल्यांकन अनिवार्य होगा.

क्या है डिजिटल मुद्रा (सीबीडीसी):-

वैश्विक स्तर पर सर्वप्रथम 2009 में सतोशी नाकामोतो नामक व्यक्ति द्वारा बिटकॉइन नामक क्रिप्टोकरेंसी (आभाषी मुद्रा) का आरंभ किया गया. यह मुद्रा ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर आधारित थी तथा एक विकेंद्रीकृत प्रक्रिया का भाग थी. इसी के उपरान्त सम्पूर्ण विश्व में डिजिटल मुद्रा की अवधारणा को बल मिला. इसी के उपरान्त कई देशो की सरकारों द्वारा डिजिटल मुद्राएं जारी की गईं. हाल ही में भारत द्वारा भी डिजिटल मुद्रा लॉन्च करने पर विचार किया जा रहा है. यह डिजिटल मुद्रा, क्रिप्टोकरेंसी से अलग है. डिजिटल मुद्राओं को सरकार द्वारा इलेक्ट्रॉनिक रूप से जारी किया जाता है वही क्रिप्टो करेंसी इंक्रिप्शन द्वारा सुरक्षित रहते हैं, तथा इनके जारीकर्ताओं के बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है. किसी देश की केंद्रीय बैंक द्वारा जारी मुद्रा को सीबीडीसी (सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी) कहते हैं. सीबीडीसी वास्तव में एक आभासी मुद्रा है जो केंद्रीय बैंक द्वारा सम.थिंत रहती है. क्रिप्टोकरेंसी की लोकप्रियता ने दुनिया के केंद्रीय बैंकों को डिजिटल मुद्रा के महत्व को प्रदर्शित किया.

वैश्विक स्तर पर सीबीडीसी की स्थिति

- वर्तमान में 87 देश (जो वैश्विक जीडीपी में 90% से अधिक योगदान करते हैं) सी. बीडीसी पर विचार कर रहे हैं. जबकि 2020 में मात्र 35 देश इस दिशा में प्रयत्नशील थे.
- 9 देशों में पूर्णरूप से डिजिटल करेंसी लॉन्च हो चुकी है. नाइजीरिया सीबीडीसी, ई-नायरा लॉन्च करने वाला नवीनतम देश है.
- हाल ही में दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर, मलेशिया और ऑस्ट्रेलिया के बीच प्रोजेक्ट डनबर नामक पायलट प्रोजेक्ट का परीक्षण किया जा रहा है. यह सीमापारीय भुगतान को सक्षम करेगा.
- 4 सबसे बड़े केंद्रीय बैंकों (अमेरिका, यूरो क्षेत्र, जापान और यूके) वाले देशों में, संयुक्त राज्य अमेरिका डिजिटल करेंसी लॉन्च करने में सबसे पीछे है.
- चीन और दक्षिण कोरिया सहित 14 देश अब अपने सीबीडीसी के साथ प्रायोगिक चरण में हैं तथा जल्द-से जल्द इसे लॉन्च करने पर विचार कर रहे हैं.
- हाल ही में भारत की वित्त मंत्री ने यह घोषणा की है कि अगले वित्त वर्ष तक भारत अपनी डिजिटल मुद्रा लॉन्च कर देगा.

सीबीडीसी की प्रमुख विशेषताएं

- केंद्रीय बैंक की डिजिटल मुद्रा किसी देश की फिएट मुद्रा का डिजिटल रूप है.
- सीबीडीसी को किसी देश के मौद्रिक प्राधिकरण या केंद्रीय बैंक द्वारा जारी और विनियमित किया जाता है.
- सीबीडीसी वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देते हैं तथा ये मौद्रिक और राजकोषीय नीति के कार्यान्वयन को सरल बनाते हैं.
- मुद्रा के एक केंद्रीकृत रूप के होने के कारण इनमे अनामता का सिद्धांत लागू नहीं होता जबकि क्रिप्टोकरेंसी में अनामता का सिद्धांत लागू होता है.

भारत में डिजिटल मुद्रा :

इस वर्ष पारित बजट में केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण जी ने डिजिटल मुद्रा लॉन्च करने का प्रस्ताव रखा है. केंद्रीय बैंक की डिजिटल मुद्राएं एक केंद्रीय बैंक द्वारा जारी क्रिप्टोकरेंसी के समान डिजिटल टोकन हैं. इनका मापन उस देश की फिएट मुद्रा के मूल्य से किया जाता है. हालाँकि अभी डिजि. टल मुद्रा को लांच करने के लिए डिजाइनिंग सामाजिक तथा आर्थिक पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी.

भारत में डिजिटल मुद्रा करने में आने वाली चुनौतियाँ :

- भारत में बहुसंख्यक जनसंख्या में डिजिटल

साक्षरता की कमी है. इसके साथ ही साथ इंटरनेट नेटवर्क में कमी , डिजिटल डिवाइसों की अनुपलब्धता इत्यादि के सन्दर्भ में डिजि. टल मुद्रा की उपयोगिता संदेह के घेरे में है.

- ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी की विकेन्द्रीकृत प्रणाली पर आधारित होने के कारण क्रिप्टो. करेंसी में साइबर अपराध (हैकिंग) लगभग असंभव होती है. वहीं सीबीडीसी केंद्रीय बैंक द्वारा जारी की जायेगी क्योंकि यह केन्द्रीयकृत प्रणाली पर आधारित होगा.
- अभी भी भारतीय अर्थव्यवस्था में नकदी का प्रचलन का प्रतिशत अधिक है. डिजि. टल लेन देन में वृद्धि के उपरान्त भी इस समय जीडीपी के प्रतिशत के रूप में नकद परिचालन विमुद्रीकरण के पहले की तुलना में अधिक है. भारत का असंगठित क्षेत्र तथा कृषि मुख्य रूप से नकद प्रवाह पर ही निर्भर है. यह समस्या भी डिजिटल मुद्रा के लिए एक चुनौती है.
- वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था वि. मुद्रीकरण, जीएसटी तथा कोरोना इत्यादि के प्रभाव से ग्रस्त है. इस स्थिति में किसी भी नए अनुप्रयोग के पूर्व अर्थव्यवस्था को स्थायी करना आवश्यक है.
- डिजिटल मुद्रा के साथ निजता की समस्या बनी रहेगी. ध्यातव्य है कि निजता का अधि कार भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत वर्णित किया गया है.

भारत को डिजिटल मुद्रा की तरफ क्यों बढ़ना चाहिए ?

- वर्तमान में भारत सर्वाधिक युवा देश है. डिजिटल भारत अभियान के उपरांत देश में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तेजी से बढ़ रहा है. वर्तमान में भारत **5G** की तरफ आगे बढ़ रहा है. स्थितियां स्पष्ट रूप से दिखा रही हैं कि भारत का डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रगति कर रहा है तथा अब भारत को वैश्विक स्टैंडर्ड के अनुरूप डिजिटल मुद्रा की तरफ बढ़ना चाहिए.
- भारत में पहले से ही एक मजबूत भुगतान अवसंरचना मौजूद है. घरेलू भुग. तान इकोसिस्टम में न्यून लेनदेन लागत तथा त्वरित बदलाव इस समय अर्थव्यवस्था की विशेषता बन चुका है. इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी राज्य मंत्री ने लोकसभा में यह बताया कि पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल भुग. तान लेनदेन में कई गुना वृद्धि देखी गई है. भारत में डिजिटल भुगतान वित्त वर्ष 2016-17 में 1,004 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2020-21 में 5,554 करोड़ हो गया है.
- भारत में आईटी प्रोफेशनल्स की संख्या बढ़ रही है. डिजिटल मुद्रा लांच होने से इन आईटी प्रोफेशनल्स के लिए रोजगार सृजन भी हो सकता है
- पिछले कुछ समय से सरकार निरंतर अर्थव्यवस्था को संगठित करने के लिए प्रयास. रत है. डिजिटल मुद्रा अर्थव्यवस्था को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है.

डिजिटल मुद्रा लॉन्च करने के पूर्व आरबी. आई को किन तथ्यों का ध्यान रखना होगा :-

अन्तर्निहित प्रौद्योगिकी का चयन:

- सर्वप्रथम आरबीआई को डिजिटल मुद्रा में अन्तर्निहित प्रौद्योगिकी का चयन महत्वपूर्ण होगा. यदि सीबीडीसी को बि. टकॉइन जैसी विकेन्द्रीकृत लच्चर तकनीकी पर रखा गया तो सभी उपयोगकर्ताओं को लोकतांत्रिक नियंत्रण और वित्तीय संप्रभुता प्राप्त होगी परन्तु इसके साथ ही साथ निर्णय प्रणाली अत्यंत धीमी हो जायेगी (यथा - बिटकॉइन लेनदेन के निस्तारण में औसतन 10 मिनट लगते हैं) जो आर्थिक गति. विधियों में विलम्ब को जन्म देगा. यदि इसे केंद्रीयकृत प्रणाली पर रखा गया तो साइबर अपराध की समस्या जन्म ले सकती है.

डिजिटल मुद्रा का स्वामित्व

- इसके साथ ही एक मूल समस्या यह है कि यदि डिजिटल मुद्रा के स्वामित्व को खाता आधारित (अकाउंट बेस्ड) आधार पर लॉन्च किया गया तो बैंको के लिए संभ. ावित जोखिम बढ़ेगा तथा यदि टोकन-आध ारित ढांचे में अनामता अधिक होती है जिससे मनी लॉन्ड्रिंग की समस्या आएगी.

आपूर्ति की सुनिश्चितता

- यदि सीबीडीसी को भौतिक मुद्रा के ऊपर जारी किया जाता है जिसे आरबीआई प्रति वर्ष अर्थव्यवस्था में प्रिंट और इंजेक्ट करे, तो यह प्रक्रिया बैलेंस शीट में महत्वपूर्ण विस्तार करेगी. इसके उपरान्त आरबीआई को

सरकारी ऋण या किसी अन्य प्रतिभूति के बराबर अतिरिक्त राशि लेनी होगी. इससे यह चिंता उत्पन्न होगी कि आरबीआई अपने नि. वेश पोर्टफोलियो को किस विधि से आवंटित करेगा? हालांकि, भारतीय रिजर्व बैंक डिजि. टल मुद्रा की आपूर्ति को सीमित करने के लिए इसे प्रत्येक वर्ष इंजेक्ट की जाने वाली वृद्धिशील भौतिक मुद्रा के कुछ भाग को प्रतिस्थापित करके इस समस्या को हल कर सकता है.

लोक कल्याण की स्थिति

- भारत एक कल्याणकारी राज्य है. डिजि. टल मुद्रा को लागू करने के पूर्व भारत को अति वंचित लोगों की आर्थिक स्थिति तथा डिजिटल मुद्रा पर इनके प्रभाव को देखना अनिवार्य है.
- डिजिटल मुद्रा लॉन्च करने के साथ साथ साइबर हमले , डिजिटल मुद्रा की तकनीकी जानकारी इत्यादि से जन सामान्य को परिचित कराना होगा.

निष्कर्ष

- आरबीआई को डिजिटल मुद्रा लागू करने के साथ ही साथ इसके भारतीय समाज पर पड़ने वाले आर्थिक तथा सामाजिक प्रभावों को देखना होगा. आरबीआई को पहले इसे पायलट परियोजना के रूप में आरम्भ करने के पूर्व इसके डिजाइन, रूपरेखा, उपयोगिता इत्यादि अभी बहुत काम करना होगा.
- सीबीडीसी को अपनाने के पूर्व आरबीआई को कई पहलुओं यथा अंतर्निहित प्रौद्योगिकी और नकदी परिसंचरण पर प्रभाव तथा इसके डिजाइनिंग पर ध्यान देने की आवश्यकता है. डिजिटल मुद्राओं रूपरेखा के निर्धारण में आरबीआई को अपनी मौद्रिक संप्रभुता का ध्यान रखना होगा.

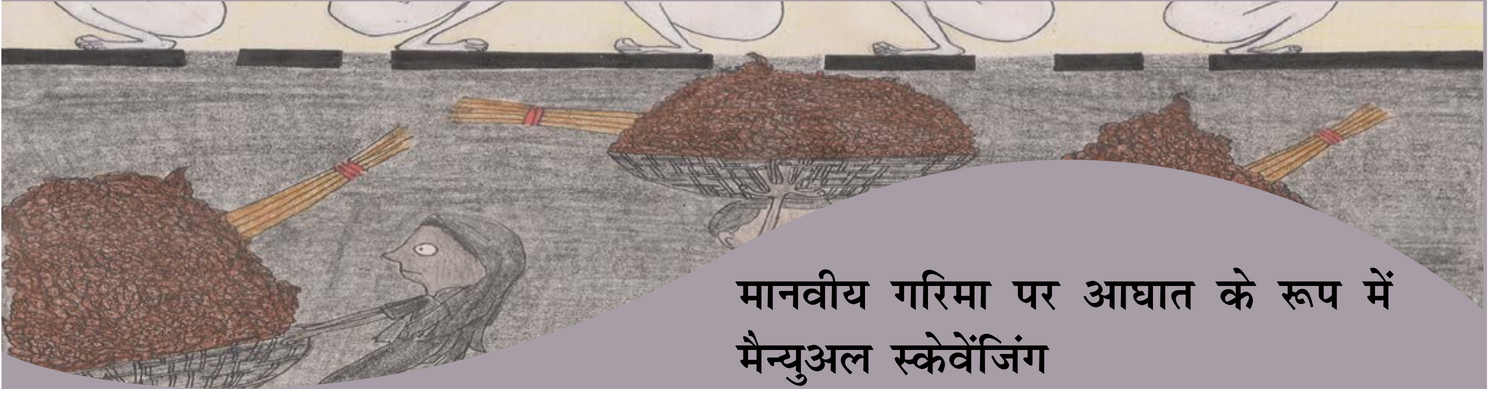

मानवीय गरिमा पर आघात के रूप में मैन्युअल स्केवेंजिंग

- **संदर्भ**
- **पृष्ठभूमि**
- **क्या है मैन्युअल स्केवेंजिंग**
- **मैन्युअल स्कवेंजर्स के समक्ष चुनौतियाँ**
- **मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने के लिए किए गए उपाय**
- **विधिक प्रयास**
- **आगे की राह**

संदर्भ

स्वतंत्रता के उपरान्त भारतीय लोकतंत्र में चुनाव के निर्धारक तत्वों की मानसिकता के सन्दर्भ में व्यापक परिवर्तन आया है. परन्तु चुनावी कारको में "जाति" एक ऐसा कारक रहा है जो अब तक विद्यमान है. हम यह कह सकते हैं कि जाति व्यवस्था भारतीय समाज की विशेषता बन चुका है. इस जातिव्यवस्था के एक गंभीर प्रभाव के रूप में उपस्थित मैन्युअल स्केवेंजिंग (हाथ से मैला ढोने की प्रथा) आज भी मानवीय गरिमा को आघात पंहुचा रही है.

पृष्ठभूमि

- मैला ढोने की प्रथा शताब्दियों से ही भारत में विद्यमान है. फाह्यान ने अपनी यात्रा विवरण में यह बताया है कि समाज के निम्न वर्ग के लोगों को चाण्डाल कहकर पुकारा जाता था, उन्हे समाज से अलग गाँव और नगर के बाहर रखा जाता था. यह वर्ग अस्पृश्य माना जाता था तथा यह वर्ग मुख्य रूप से साफ-सफाई विशेषकर सड़कों, नालियों और मैला ढोने के कार्य करता था.
- आधुनिक भारत में सर्वप्रथम महात्मा गाँधी जी ने अस्पृश्यता के विरुद्ध आवाज उठायी तथा सभी व्यक्तियों को स्वयं स्वच्छता के लिए प्रेरित किया. स्वतंत्रता के उपरान्त से भारत की सभी सरकारों ने भी इस अम. ानवीय कार्य का संज्ञान लिया. पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इसे जातीय रंगभेद **(Caste Apartheid)** कहा तो वहीं मौजूदा प्रधानमंत्री ने इसे माथे पर कलंक बताया. यद्यपि सभी दलों द्वारा इसे कलंक बताया गया परन्तु इसे दूर करने के लिए इन दलों द्वारा दृढ़ इच्छशक्ति नहीं दिखाई गई.

क्या है मैन्युअल स्केवेंजिंग :-

किसी व्यक्ति द्वारा हाथों से शुष्क शौचालयों या खुली नालियों, सीवर आदि से मानवीय अपशिष्ट को निकालने, सिर पर रखकर ले जाने, निस्तारण करने को हाथ से मैला ढोना या मैनुअल स्कैवेंजिंग कहा जाता है.

मैन्युअल स्केवेंजिंग : भारत की स्थिति

- जुलाई, 2019 में संसद में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने बताया था कि देश के 18 राज्यों के 170 जिलों में मैन्युअल स्केवेंजिंग के 54,130 मामले दर्ज किए गए हैं.
- भारत में इस अवांछनीय तथा जोखिमपूर्ण कार्य के लिए सामान्यतया असंगठित क्षेत्र के अस्थायी लोगों को ही काम पर रखा जाता है. ये प्राय: किसी जाति विशेष से ही आते हैं.
- काम के दौरान मैन्युअल स्कवेंजर्स के पास पर्याप्त सुरक्षा उपकरण भी नहीं होते. जिससे इस कार्य में मृत्यु तक होने की सम्भावना रहती है. एक अनुमान के अनुसार भारत में हर पाँच दिन में हाथ से सीवर की सफाई करने वाला एक सफाई कर्मी की मृत्यु हो जाती है.
- ह्यूमन राइट्स वॉच के अनुसार भारत में निम्न स्तरीय मैनुअल सफाई कार्य का पारिश्रमिक भी बहुत कम है. निश्चित आय के आभाव में इनकी बार्गेनिंग क्षमता भी कम हो जाती है. कई बार भोजन जैसी बुनियादी जरूरत के बदले ही सफाई का कार्य करवाया जाता है.
- ऐसे कार्यों में सिर्फ पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाएं भी नियोजित होती हैं. ये सभी कथित रूप से निम्न जाति के होते हैं जिनके साथ स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, भूमि मजदूरी आदि के संबंध में भेदभाव होता रहा है.
- यद्यपि भारत में मैन्युअल स्केवेंजिंग को निषिद्ध किया गया है परन्तु आज भी यह जाति व्यवस्था के साथ संलंग्न होकर मानवीय गरिमा का कलंक बना हुआ है.

मैन्युअल स्कवेंजर्स के समक्ष चुनौतियाँ:-

मैन्युअल स्कवेंजर्स को यह कार्य अपनी गरिमा, सुरक्षा और स्वास्थ्य को दांव पर लगाकर करना पड़ता है. मैनुअल स्कवेंजर्स सुभेद्य श्रमिकों में भी सुभेद्य हैं. इन्हे कार्य के दौरान कई बार अनचाही चुनौतियों का सामना करना पड़ता है परन्तु इन्हे उचित कार्यदशा तथा कार्यस्थल पर दुर्घटना से सुरक्षा भी प्राप्त नहीं है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट के अनुसार स्वच्छता कर्मियों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों और जोखिमों को चार आयामों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

- स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ: मैन्युअल स्कवे. जर्स के लिए सबसे बड़ी चुनौती स्वास्थ्य संबंधी चिंता है. इनके कार्य की दशाओं में

स्वास्थ्य और सुरक्षित उपकरणों के अभाव के कारण सफाई कर्मियों की मौत तक हो जाती है. सीवर के सफाई के दौरान सफाई कर्मी जहरीली गैसों और हानिकारक रसायनों के सम्पर्क में आते हैं जिससे उन्हें गम्भीर बिमारियों का सामना करना पड़ता है.

- **कमजोर कानूनी सुरक्षा:** असंगठित तथा अस्थायी मैन्युअल स्कवेंजर्स का मुख्य कारण कानूनों का निष्क्रिय होना है. इन कर्मियों के अधिकारों और इनकी कार्य दशाओं में सुधार की मांग करने वाले समूह और संगठन भी पर्याप्त मजबूत नहीं हैं. मैनुअल स्कैवेजर के रूप में रोजगार निषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम के प्रावधानों का पालन नहीं किया जाता.
- **वित्तीय असुरक्षा:** सफाई कर्मियों के रूप में नियोजित लगभग सभी व्यक्ति तथाकथित निम्न जातियों से आते हैं जो अत्यधिक गरीबी और अभाव का जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं. जागरूकता की कमी तथा वंचना के फलस्वरूप इनका पारिश्रमिक अत्यंत कम तथा अनिश्चित होता है.
- **सामाजिक भेदभाव:** सफाई कर्मियों के साथ सामाजिक भेदभाव बहुत गहराई के साथ विद्यमान है. यहाँ तक कि इनको अस्पृश्यता तथा पूर्ण रूपेण सामाजिक विच्छेद का भी सामना करना पड़ता है.

मैला ढोने की प्रथा की निरंतरता का कारण

- जाति व्यवस्था भारतीय समाज की एक अनावश्यक विशेषता बन चुकी है. चूँकि मैन्युअल स्कैवेंगजिंग एक निश्चित जाति के लोगों द्वारा ही सदियों से किया और कराया जा रहा था, इसके साथ ही उन्हें सामाजिक रूप से अछूत भी घोषित किया गया था. फलत: इनका सामाजिक-आर्थिक विकास इतना पीछे हो गया कि सफाई के कार्य के अतिरिक्त उनके पास जीवन यापन के लिए अन्य कोई उपाय बचा ही नहीं. डब्ल्यूएसओ ने हेल्थ, सेफ्टी एंड डिग्निटी ऑफ सैनिटेशन वर्कर्स- एन इनिशियल एसेसमेंट रिपोर्ट ने भी जाति आधारित भेदभाव को इस समस्या का मूल माना है.
- मैला ढोने और शुष्क शौचालयों के निर्माण को प्रतिबंधित करने बावजूद भी भारत में

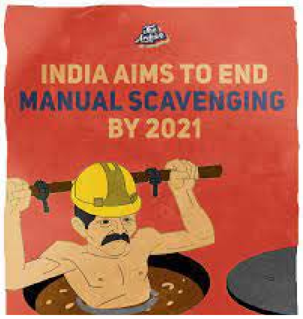

1,82,505 हाथ से मैला ढोने वाले और 7,40,048 परिवार जो शुष्क शौचालयों की सफाई के लिए मैला ढोनें वालों की सेवा का उपयोग करते हैं. मैला ढोने वालों में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में बहुत ज्यादा है जो 95-98% तक है, जिसका एक प्रमुख कारण पुनर्वास से संबंधित अधिकांश योजनाओं का लाभ पुरुषों तक ही पहुँच पाना है.

- राष्ट्रीय गरिमा अभियान के सर्वे के अनुसार 60% से अधिक मैन्युअल स्कवेंजर्स ग्रामीण क्षेत्रों में नियोजित होते हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में पुनर्वास की योजनाएं तथा अधिकारों के प्रति जागरूकता का अभाव रहता है. इसके कारण बहुसंख्यक मैन्युअल स्कवेंजर्स पुनर्वास योजनाओ में सम्मिलित नहीं हो पाते.

मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने के लिए किए गए उपाय

संवैधानिक प्रयास:

प्रस्तावना

- प्रतिष्ठा तथा अवसर की समता व मानवीय गरिमा की स्थापना

मूल अधिकार :

- समानता का अधिकार- अनुच्छेद 14, 15, 16, 17
- अनुच्छेद 19 में व्यवसाय के चयन की स्वतंत्रता दी गई है.
- अनुच्छेद-21 गरिमायुक्त जीवन जीने की स्वतंत्रता से सम्बंधित है.
- अनुच्छेद-23 में नागरिको को शोषण के विरूद्ध अधिकार प्राप्त है.

नीति-निर्देशक तत्व

- अनुच्छेद-42 में राज्य के नीतिनिर्देशक तत्वों में काम की न्याय संगत और मानवोचित दशाओ के सम्बन्ध में प्रावधान हैं.
- अनुच्छेद-43 कर्मकारों के लिए निर्वाह मजदूरी की व्यवस्था को गई है.

विधिक प्रयास

मैनुअल स्कैवेंजर्स का रोजगार और शुष्क शौचालय निर्माण (निषेध) अधिनियम, 1993 **(Employment of Manual Scavengers and Construction of Dry Latrines (Prohibition) Act**, 1993, का प्रावधान

- इस अधिनियम के तहत हाथ से मैला साफ करने को संज्ञेय अपराध मानते हुए आर्थिक दण्ड और कारावास दोनों ही आरोपित करने का प्रावधान है, इसके तहत एक वर्ष का कारावास अथवा 2,000 रुपये का दण्ड या दोनों हो सकता है.

मैनुअल स्कैवेजर के रूप में रोजगार निषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम, 2013 **(Prohibition of Employment as Manual Scavengers and their Rehabilitation Act 2013)**

- इस अधिनियम के तहत मैला ढोने वालों के परिवार के पुनर्वास की जिम्मेदारी राज्य की होगी. साथ ही मैनुअल स्कैवेंजर्स को प्रशिक्षण प्रदान करना, आवास उपलब्ध करवाना आदि, राज्य की जिम्मेदारी होगी.

अन्य प्रयास

- राष्ट्रीय गरिमा अभियान तथा स्वच्छ भारत अभियान के द्वारा इस समस्या के सन्दर्भ में जागरूकता फैलाने तथा इस समस्या के मूल (अस्वच्छता) को कम करने का प्रयास किया गया है.

आगे की राह

- हाथ से मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयास सराहनीय हैं. परन्तु अभी भी यह प्रथा विद्यमान है अत: इस सन्दर्भ में निम्न उपायों को स्वीकारा जा सकता है.
- मैला ढोने की प्रथा में 98% महिलाएँ नियोजित होती है जिसका कारण जातिगत के साथ महिलाओं का आर्थिक रूप से कमजोर होना भी है. उनका आर्थिक सशक्तिकरण उन्हें इस कलंक से बाहर निकालनें में सहायक होगा.

अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाता रूस-यूक्रेन विवाद

- संदर्भ
- परिचय
- क्या है अंतर्राष्ट्रीय विधि
- कुछ अन्य विधिवेत्ताओं के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय विधि

सन्दर्भ :

हाल ही में रूस द्वारा यूक्रेन पर किए गए आक्रमण के उपरांत अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता संदेह के घेरे में आ चुकी है.

परिचय:

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते हुए व्यापक तनाव के मध्य रूस द्वारा यूक्रेन पर हमला कर दिया गया. नाटो के प्रसार को यूक्रेन तक पहुंचने से रोकने तथा क्रीमिया मामले में अपने द्वारा किए गए गतिविधि को विधि मान्यता प्रदान कराने के लिए रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण किया गया. ज्ञातव्य हो कि इसके पूर्व यूक्रेन सोवियत संघ का भाग था तथा 1991 में शीत युद्ध की समाप्ति के साथ यूक्रेन स्वतंत्र अस्तित्व में आया. यूक्रेन के साथ रूस तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के कई समझौते हुए हैं जिनमें यूक्रेन की सुरक्षा सुनिश्चित की गई थी. परंतु हाल ही में वह द्वारा किए गए हमले ने न सिर्फ यूक्रेन की सीमाओं का उल्लंघन किया है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय विधि की सीमाओं को भी पार किया है. यह रूस द्वारा उठाया गया कदम अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता को संदेह के घेरे में ला रहा है.

क्या है अंतर्राष्ट्रीय विधि :

अंतरराष्ट्रीय विधि से तात्पर्य राष्ट्रों के आपसी संबंधों को विनियमित करने वाले नियमों से है. पूर्व में इसे "लॉ ऑफ नेशंस" के नाम से जाना जाता था. परंतु इस शब्द के प्रयोग से भ्रामक स्थिति उत्पन्न होती थी. सर्वप्रथम बेंथम द्वारा 1789 में अपनी पुस्तक प्रिंसिपल आफ मोरल्स एंड लेजिसलेशन में अंतरराष्ट्रीय शब्द का प्रयोग किया गया.

कुछ अन्य विधिवेत्ताओं के अनुसार अंत. र्राष्ट्रीय विधि :

- **हाल के अनुसार:-** अन्तर्राष्ट्रीय विधि आचरण के उन नियमो को कहते है जिन्हें सभ्य राज्य पारस्परिक सम्बन्धों में अपने लिये बाध्यकारी मानते हैं.
- **ब्रायरली के अनुसार:-** राष्ट्रों की विधि अन्तर्राष्ट्रीय विधि उन नियमों तथा कार्यों के सिद्धांत का समूह है, जो सभ्य राज्यों पर उनके पारस्परिक सम्बन्धों में बाध्यकारी है.
- **ओपेनहाइम के अनुसार:-** राष्ट्रों की विधि या अंतर्राष्ट्रीय विधि उन रूढ़िजन्य तथा संधिबद्ध नियमो के समूह का नाम है जिन्हे राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धो में बैध रूप से बाध्यकारी माना जाता है.

क्या वर्तमान विश्व में अंतर्राष्ट्रीय विधि अप्रासंगिक हो चुकी है? अंतराष्ट्रीय विधि की मान्यता के विपक्ष में तर्क

विभिन्न विधिवेताओं में प्रायः अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता के संदर्भ में विवाद की स्थिति बनी रहती है. आस्टिन, बेन्थैम, हालैंड, होब्ब्स जैसे चिंतक तथा उनके समर्थक यह मानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय विधि वास्तव में विधि नहीं है. इसके संबंध में इन विधि वेत्ताओं द्वारा निम्नलिखित तर्क दिए जाते हैं-

आस्टिन के अनुसार: विधि किसी सम्प्रभू सत्ता द्वारा निर्मित हो तथा सम्प्रभू सत्ता ही उसे लागू करे. अंतर्राष्ट्रीय विधि सम्प्रभू सत्ता द्वारा निर्मित नहीं होती अतः इसे विधि नहीं माना जा सकता.

हालैंड के अनुसार: ऐसे नियम जिनका पालन राज्यों की इच्छा पर निर्भर हो तथा एक दूसरे के प्रति व्यवहार से प्रेरित हो. उन्हें मात्र नम्रतावश कानून की श्रेणी में रखा जा सकता है.

इन परिभाषाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य तर्क हैं जिससे विधिवेत्ता "विधि" के रूप में अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न उठाते हैं -

ज्येष्ठ राजनैतिक सत्ता का अभाव :-

- अंतर्राष्ट्रीय विधि किसी भी राजनीतिक सत्ता से रहित है. कोई भी ऐसी संस्था नहीं है जो राज्यों को अंतर्राष्ट्रीय विधि के प्रावधानों को मानने के लिए विवश कर सके.
- हमने प्रायः यह देखा है कि सशक्त राष्ट्र विधियों का उल्लंघन करते रहते हैं. फिलीपींस तथा चीन के मामले में अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण ने फिलीपींस के पक्ष में निर्णय दिया परंतु चीन ने उस निर्णय को नहीं माना. हाल ही में रूस का यूक्रेन पर हमला यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर रहा है कि रूस भी अंतरराष्ट्रीय समुदाय के नियमों का उलंघन कर रहा है.
- संयुक्त राष्ट्र इन राष्ट्रों को दंडित करने में असफल है जो अंतरराष्ट्रीय विधि की प्रासंगिकता को प्रभावित कर रहे हैं.

विधि निर्माणकारी निकाय का अभाव

- अंतर्राष्ट्रीय विधि के निर्माण में कोई विधि निर्माणकारी संस्था नहीं है. राज्य पारस्परिक संधियों से अंतर्राष्ट्रीय विधि का निर्माण करते हैं. चुकी संधियां राज्यों से निर्मित है अत: राज्य संधियों को आवश्यकता पड़ने पर संप्रभुता के नाम पर तोड़ देते हैं.

अंतर्राष्ट्रीय न्यायलय की अक्षमता

- अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के अतिरिक्त कोई अन्य न्यायाधिकरण नहीं है जिसको अंतरराष्ट्रीय विधियों को राज्य पर लागू करने की सक्षमता प्राप्त हो.
- सबसे बड़ी समस्या यह है कि अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के पास अवमानना की शक्ति नहीं है.

वैश्विक संस्थानों में लोकतंत्र का अभाव

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (जिसे वैश्विक कार्यपालिका के रूप में जाना जाता है) के राजनीतिकरण के कारण यह अधिक विश्वसनीय नहीं रहा. यहां 5 देशो (अमेरि. का, चीन, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन) को विशेष. ाधिकार प्राप्त है. ये देश संयुक्त राष्ट्र महासभा के द्वारा बहुमत से पारित नियमो को भी वीटो का प्रयोग कर रोक देते हैं.
- वैश्विक आर्थिक संगठनों तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में पश्चिमी देशो का बोलबाला है.जहां वे अपनी इच्छा के अनुसार नियम बनाते हैं. कोरोना काल के दौरान विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका पर भी प्रश्न उठे थे.

राष्ट्र-राज्य की अवधारणा

- आधुनिक काल में आई राष्ट्र -राज्य अवध ारणा के कारण राज्य सम्प्रभुता को अधिक महत्व देते हैं. कई बार संप्रभुता को महत्व देने के कारण राज्य अंतर्राष्ट्रीय विधियों को तोड़ते समय किसी भी प्रकार के दंड के भय से रहित होते हैं.
- प्राय: राष्ट्र राज्यों द्वारा आईएमएफ, विश्वबैंक इत्यादि के नियमो का उलंघन किया जाता है.

निकायों का सशक्त होना :-

- राज्यों में विधि व्यक्तियों पर लागू होती है. जबकि अंतर्राष्ट्रीय विधि में राज्य पक्षकार हैं. राज्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक सशक्त होते हैं अत: वे विधियों का उलंघन करते हैं. भारत ,पकिस्तान तथा इजराइल द्वारा परमाणु नि:शस्त्रीकरण पर, चीन द्वारा दक्षिणी चीन सागर पर अतिक्रमण, अमेरिका द्वारा प्राय: अन्य देशो पर प्राय: एकतरफा प्रतिबंधों तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के दुरूपयोग ने अंतरराष्ट्रीय विधियों की प्रासंगिकता को कम किया है. इसीलिए कई विधिशास्त्री अंत. र्राष्ट्रीय विधि को वास्तविक विधि न मानकर महज "सुनिश्चित अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता (स्वेछा पर आधारित)" मानते हैं. इस मान्यता को रूस के यूक्रेन पर आक्रमण ने और अधिक मजबूत कर दिया है.

अंतर्राष्ट्रीय विधि की उपयोगिता के पक्ष में तर्क :

ओपेनहाइम अंतरराष्ट्रीय विधि को वास्तविक विधि मानते हैं तथा वे इसकी प्रभावशीलता के सन्दर्भ में भी तर्क देते हैं.

ओपेनहाइम के अनुसार, "विश्व के राज्य एक साथ एक निकाय का गठन करते हैं, जो उनके सामान्य हितो के साथ आबद्ध होते हैं. यह नियम उनके मध्य व्यापक संपर्क को सृजित करते हैं. ये नियम राज्यों की संस्कृति, आर्थिक संरचना या राजनीतिक प्रणाली में भिन्नता को प्रभावित नहीं करती. यद्यपि राज्यों की पारस्परिक अधिकारिता तथा व्यक्तियों की परस्पर अधिकारिता में अंतर है परंतु या निश्चित ही कहा जा सकता है कि अंतरराष्ट्रीय विधि का अस्तित्व राज्यों के कतिपय आचरणों को विनियमित करता है.

- ओपेनहाइम के समर्थको ने आगे कई ऐसे तर्क दिए हैं जो अंतर्राष्ट्रीय विधि की उपयोगिता को सिद्ध करते हैं यह आधार की रूढ़ियों तथा संधियों का प्राय: उल्लंघन होता है वास्तव में सही नहीं है. रूस- यूक्रेन विवाद में ही हम देखें तो यह विवाद 30 वर्ष बाद अपने प्रखर रूप में आया है परंतु इस मामले को 30 वर्ष तक शांत रखने में अंतरराष्ट्रीय विधि की प्रमुख भूमिका रही है.
- सभी राज्यों में विदेशी कार्यालय, राजदूत, तथा न्यायालय व अन्य सरकारी निकायों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संधियों का पालन कराया जाता है जो अंतरराष्ट्रीय विधि की महत्व को प्रदर्शित करता है.
- जब भी कोई राज्य अंतर्राष्ट्रीय विधि का उल्लंघन करता है तो वह अंतर्राष्ट्रीय विधि का विरोधाभासी व्याख्यान कर अपने कार्यवा. ही को उचित सिद्ध करने का प्रयास करता है. यदि राज्य अंतरराष्ट्रीय विधि को महत्व नहीं देते तो वह अपनी कार्यवाही के लिए किसी के प्रति उत्तरदाई नहीं रहते परंतु उनके द्वारा दिए गए तर्क यह प्रदर्शित करते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय विधि का महत्व है.
- यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय विधि के प्राय: उल्लंघन के मामले देखे जाते हैं परंतु यदि अंतरराष्ट्रीय विधि की अनुपस्थिती में सभी देश इसका उल्लंघन करते रहेंगे तथा विश्व में अशांति हो जाएगी.
- कई राज्यों द्वारा अपने संविधान में अंतरराष्ट्रीय वित्त की बाध्यता को स्वीकार किया गया है उदाहरण स्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान के अनुच्छेद 6 में यह प्रावधान है कि, "अंतर्राष्ट्रीय विधि देश की सर्वोच्च विधि है" जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यायालय ने भी मान्यता दी है.
- अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय आईएमएफ विश्व बैंक अथवा विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे संग. ठनों में प्राय: राज्य अपनी शिकायतें दर्ज करते हैं. एक विवादों के संदर्भ में प्रक्रियाओं का पालन किया जाता है. ऐसी व्यवस्था अंत. र्राष्ट्रीय विधि के कारण ही संभव हो पाई है.
- जब कोई देश अंतरराष्ट्रीय विधियों का उल्लंघन करता है तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्व ारा उस पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं. उदा. हरण स्वरूप भारत पर 1974 में लगाए गए वैज्ञानिक तथा आर्थिक प्रतिबंध, ईरान पर लगाए गए परमाणु प्रतिबंध, रूस पर हालिया मामले को लेकर के कई देशों द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंध.

- यह देखा जाता है कि अक्सर राजनैतिक मुद्दों पर ही अंतर्राष्ट्रीय विधियों का उलंघन होता है, पर्यावरणीय मुद्दों, वैश्वीकरण, आतं. कवाद, संगठित अपराध , साइबर क्राइम जैसे मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय विधियों को मान्यता दी जाती है.

इस प्रकार हम या देखते हैं कि रूढ़ियों तथा संधियों को प्राय: राज्य मानते हैं, तथा कुछ राज्यों द्वारा कभी- कभार ही इसका उल्लंघन होता हैं अंतर्राष्ट्रीय विधि के उल्लंघन में अनुशस्तियों का भी प्रावधान आ जाता है जो विधि के रूप में अंतर्राष्ट्रीय विधि के प्रासंगिकता को सिद्ध करता है. इस प्रकार यह वर्तमान विश्व के लिए उपयोगी और प्रासंगिक है.

वर्तमान संकट को समाप्त करने में अंतरराष्ट्रीय विधि की भूमिका

- वर्तमान संकट के उपरांत यूक्रेन में शरण ार्थी संकट आरंभ हो जाएगा. इस शरणार्थी संकट के दौरान अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार विधियां प्रभावी रहेंगे.
- विश्व समुदाय द्वारा रूस पर जिनेवा समझौता तथा बुडापेस्ट कन्वेंशन को मानने का दबाव बनाया जाना चाहिए.
- रूस द्वारा वैश्विक समुदाय की बात ना मानने पर प्रतिबंधो की भी स्थिति बन रही है. जर्मनी द्वारा नॉर्ड स्ट्रीम 2 को प्रतिबंधित कर रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए हैं.
- यूक्रेन को दो भागों में बांटने के लिए आवश्यक "राज्य मान्यता के सिद्धांत" पर विश्व समुदाय को सभी हितधारकों से बात करके कोई निर्णय लेना चाहिए.
- इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को प्रभावी भूमिका निभानी होगी.

भारत तथा रूस- यूक्रेन संकट

भारत की पहली प्राथमिकता यूक्रेन में फंसे भारतीय निवासी हैं. भारत को सर्वप्रथम उन नागरिकों को भारत लाने के संदर्भ में विचार करना चाहिए.

यूक्रेन के द्वारा निवेदन के उपरांत भारतीय प्रध ानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्ला. दिमीर पुतिन से इस संकट पर बात करने का निर्णय लिया है.भारत रूस का परंपरागत मित्र रहा है. इसके साथ ही साथ भारत वैश्विक शांति का प्रबल समर्थक है. इस संकट को समाप्त करने के लिए भारत अपनी कूटनीति का प्रयोग कर सकता है.

भारत इस संकट को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तो यह भारत के वैश्विक कद को मजबूत करेगा.

निष्कर्ष

वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय समस्याएं बढ़ रही हैं. ग्लोबल वार्मिंग, साइबर अपराध, क्रिप्टो करेंसी, आतंकवाद, संगठित अपराध, मनी लॉन्ड्रिंग जैसी कई समस्याएं हैं जिनके लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय को साथ आना होगा. इन मामलों में अंतरराष्ट्रीय विधि अत्यधिक प्रासंगिक है. कई बार राजनी. तिक महत्वाकांक्षा के कारण राष्ट्रीय राज्य अंतरराष्ट्रीय विधियों का उल्लंघन करते रहते हैं. परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि अंतर्राष्ट्रीय विधि अप्रासंगिक हो चुकी है. इस मामले में वैश्विक समुदाय को महत्वपूर्ण भूमिका बनाते हुए रूस तथा यूक्रेन के विवाद को कूटनी. तिक तरीके से हल किए जाने पर प्रयास करना चाहिए.

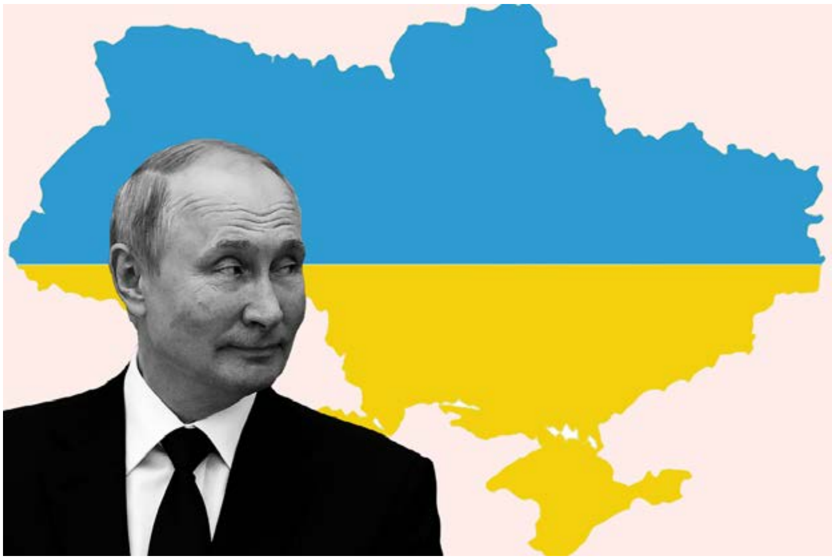

NOTES

भारत में विद्यालयों के बंद होने की विकृति

- चर्चा में क्यों
- भारत में स्कूल बंदी के मूल मूल कारणों का विश्लेषण
- स्कूल खुलने में विलम्ब ने कुछ सामाजिक पहलुओं को प्रस्फुटित किया है
- पेरी (PERI)दृष्टिकोण को अपनाना
- आगे की राह

चर्चा में क्यों :-

पिछले दो वर्षो में, कोविड-19 महामारी के कारण सबसे अधिक समय तक स्कूल बंद करने के मामले में भारत (युगांडा के बाद) दूसरे स्थान पर रहा.

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, अनुमानत: 82 सप्ताहों से कक्षाएं कुछ बाधाओं के साथ संचालित हो रही हैं. विद्यालयों की बंदी से होने वाले अधिगम हानियों पर कई संस्थाओं द्वारा बहुत कुछ कहा, लिखा तथा प्रकाशित किया गया है.

भारत में स्कूल बंदी के मूल मूल कारणों का विश्लेषण :-

- प्रथमतया, विद्यालयो की लगातार बंदी का सबसे बड़ा तथा प्रमुख कारण गलत सूचनाओं की व्यापकता है. प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा दिए गए कुछ निराधार वक्तव्यों यथा "तीसरी लहर बच्चों को प्रभावित करेगी", "स्कूल खोलने के पूर्व बच्चो के टीकाकरण की प्रतीक्षा करनी चाहिए", और इन वक्तव्यों के सोशल मीडिया पर प्रसारित होने से अभिभावकों तथा बच्चो में भय व्याप्त हो गया. इन स्थितियों के कारण बच्चे तथा माता-पिता बच्चो के टीकाकरण के उपरान्त ही बच्चों को स्कूलों भेजने के लिए सहमत हुए.
- विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों में बच्चो के हॉस्पिटल में भर्ती होने की खबरों को सनसनीखेज बनाकर टेलीविजन चैनलों पर प्रसारित किया गया. जिससे इन चैनलों का लक्ष्य रेटिंग बिंदु (TRP) बढ़ता था, परन्तु यह खबरे बच्चों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती थी. दूसरा मुख्य कारण यह था कि विशेषाधिकार प्राप्त अभिभावक वर्ग तथा इस संघ के स्वघोषित प्रतिनिधि (जिन्हे प्राय: मुद्दे की जटिलता का पूर्ण संज्ञान नहीं था) के वक्तव्य मुख्यधारा के निर्णयन में अत्यंत प्रबल तथा प्रभावी रहे. कुछ सर्वेक्षणों में यह भी बताया गया कि निर्णय प्रक्रिया में गरीब और मध्यम वर्ग के अभिभावकों (जो स्कूल खुलने के समर्थक थे) के राय की अवहेलना की गई. स्कूल बंदी के सन्दर्भ में लिए गए निर्णय प्राय: समाचार पत्रों के सनसनीखेज रिपोर्टो तथा उच्चस्तरीय टीवी डिबेट से प्रभावित रहे.
- कई विशेषज्ञों ने टेलीविजन चैनलों पर यह तर्क दिया कि "महामारी में सावधानी बरतने के लिए कुछ गलतियां की जा सकती है" परन्तु यह तर्क महामारी के वैज्ञानिक साक्ष्यों के कसौटी पर उचित नहीं था. इन विशेषज्ञों तथा विशेषाधिकार प्राप्त अभिभावकों के वक्तव्यों ने गरीब तथा वंचित वर्ग के बच्चो को अवसर तथा शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया. पुन: इस तथ्य को दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि पूर्वव्यापी शैक्षिक असमानता, पिछले दो वर्षो में और अधिक विस्तृत हुई है.
- तीसरा मुख्य कारण यह है कि गलत सूचना के सभी स्तरों पर सरकार की प्रतिक्रिया अत्यंत विलम्ब से हुई जो स्थिति को संभालने के लिए अपर्याप्त थी. यद्यपि संचार में समय के साथ वृद्धि हुई है परन्तु यह मिसइंफॉर्मेशंस को नियंत्रित करने की क्षमता नहीं रखता. कई राजनेताओं द्वारा इस मुद्दे का राजनीतिकरण किया गया. कई राज्यों में विपक्ष ने महज इस मुद्दे का प्रयोग सरकार को घेरने के लिए किया तथा स्कूल खुलने में विलम्ब को एक राजनैतिक मुद्दे के रूप में प्रस्तुत किया.
- इसका चौथा कारण यह था कि, भारत के नागरिकों ने कोरोना के दूसरी लहर के दौरान स्वयं संघर्ष किया था जिससे इनका विश्वास सरकारी तंत्र के प्रति कम हुआ था. इसके साथ ही साथ बढ़ रही गलत सूचनाओं का सरकार द्वारा पर्याप्त विरोध नहीं किया गया तथा सरकार ने विश्वास प्राप्त करने के लिए हितधारकों से न उलझना ही उचित समझा.
- इसका पांचवा कारण यह था कि, स्कूलों के बंद होने के कई माह तक स्कूलों को खोलने के लिए आवश्यक वस्तुनिष्ठ मानदंडों पर कोई चर्चा नहीं की गई थी. जनवरी 2021 में भारत ने कोरोना महामारी के सन्दर्भ में विजय की घोषणा कर दी परन्तु स्कूलों को खोलने के सन्दर्भ में अत्यंत कम चर्चा की गई. हालाँकि स्कूलों को फिर से खोलना एक अत्यावशयक विषय है.

स्कूल खुलने में विलम्ब ने निम्न सामाजिक पहलुओं को प्रस्फुटित किया है :-

सर्वप्रथम यह स्पष्ट नहीं है कि क्या प्रभावशाली वर्ग के लोग गरीबो तथा वंचितों का प्रतिनिधित्व करेंगे ?

दूसरे, स्कूल बंद होने से सर्वाधिक नका.

.रात्मक प्रभाव उन बच्चो पर पड़ा है जो पहले से ही वंचित थे. तीसरा, कोरोना वाय. रस महामारी के दौरान अधिगम का अर्थ (गलत तरीके से) महज पाठ्यक्रम पूरा करने से लगाया गया.

"पेरी (PERI)दृष्टिकोण"को अपनाना :
आगे आने वाले कुछ सप्ताहों में, कई राज्यों में अतिरिक्त कक्षाओं/ग्रेड के लिए स्कूलों के फिर से खुलने की संभावना है. हालांकि पर्याप्त उपायों के बिना स्कूलों को पूर्ण क्षमता के साथ आरम्भ करना बच्चो के लिए अनुचित होगा. **P-E-R-I** (प्रिपरेशन, इंगेज, रीथिंक, इन्नोवेट) दृष्टिकोण को लागू कर इस समस्या को हल करना होगा.

प्रिपरेशनः- स्कूली शिक्षा की निरंतरता के लिए तैयार (प्रिपेयर) होना होगा. कोविड-19 के जोखिम पर एक दृष्टिकोण विकसित कर इस समस्या के लिए आवश्यक योजना बनाना आवश्यक है. इस महामारी के समाप्त होने के उपरान्त भी कोविड-19 के मामले सामने आते रहेंगे. कभी कभी कोरोनावायरस के मामलों में वृद्धि भी हो सकती है. अतः सभी राज्यों को निर्बाधित स्कूली शिक्षा के लिए एक रोडमैप, योजना तथा रणनीति तैयार करनी होगी. स्कूल बंद करने के उद्देश्य (यदि आवश्यक हो) के सम्बन्ध में मानदंड विक. सित करने की आवश्यकता है. इन मानदंडों के सम्बन्ध में निर्णय को ब्लॉक अथवा जिला स्तर पर विकेन्द्रीकृत तरीके से लागू करना आवश्यक है. हम सभी को बच्चों पर COVID-19 के प्रभाव के बारे में एक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है. उदाहरणार्थ- कई बार डेंगू, मलेरिया या डायरिया के कारण बच्चों के अस्पताल में भर्ती होने का जोखिम COVID-19 की तुलना में कहीं अधिक है, यदि इन स्थितियों में स्कूल बंद नहीं किये जाते तो कोविड-19 में स्कूल क्यों बंद किये जायें ?

इंगेज :- माता-पिता तथा प्रमुख हितधारकों से इंगेज होकर (जुड़कर) व्यक्तिगत शिक्षा के महत्व तथा बाल विकास की अवधारणा के बारे में जागरूकता बढ़ानी होगी. किसी भी स्थिति के दौरान मिसइन्फॉर्मेशन से बचने तथा अधिगम को बढ़ावा देने के लिए सभी

प्रमुख हितधारकों- माता-पिता, समुदाय के सदस्यों, स्कूलों, सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों और स्थानीय सरकारों की निरंतर भागीदारी की आवश्यकता है. छोटे बच्चो को अधि गम हानि के साथ साथ पोषण हानि का भी सामना करना पड़ रहा है. अधिकांश राज्यों में प्री-नर्सरी और नर्सरी स्कूल और कई राज्यों में प्राथमिक स्कूल तथा आंगनबाड़ी अभी भी बंद हैं, जिन्हें त्वरित तथा तत्काल रूप से खोला जाना चाहिए.

रीइमेजिनः- बेहतर वेंटिलेशन, मिश्रित शिक्षण गतिविधियों के साथ साथ स्कूली गतिविधियों के समस्त पहलुओं को रीइमेजिन (पुनर्परिक. ल्पित) करना होगा. ऐसी खबरे हैं कि कई गरीब तथा वंचित वर्ग के लोग महामारी के कारण स्कूली शिक्षा से बाहर हो गये हैं तथा ये अब शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित नहीं हो सकते, यह भी संभव है कि ये बच्चे अब बाल श्रम और अन्य भुगतान और अवैतनिक कार्यों में संलग्न होंगे. अतः यह कहा जा सकता है कि स्कूलों को खोलना महज आधा कार्य है स्कूलों को खोलने के साथ साथ सामाजिक-राजनैतिक जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है जिससे हर एक बच्चा जिसे शिक्षा की आवश्यकता है, वह व्यक्तिगत अधिगम में वापस आ सके. इसके साथ ही यह भारतीय राज्यों में स्कूली स्वास्थ्य सेवाओं को पुनर्जीवित करने तथा स्कूली उम्र के बच्चों, विशेष रूप से किशोरों के लिए नियमित परामर्श और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को संस्थागत बनाने का भी एक अवसर है.

इन्नोवेट :- अधिगम हानि की भरपाई करने तथा विद्यालय को समग्र बाल विकास के स्थान के रूप में विकसित करने के लिए नवाचार करने की आवश्यकता है. स्कूल की परिकल्पना महज पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले स्थान से कहीं अधिक है. एक बच्चे के स्कूल में अन्य बच्चों के साथ मिलने तथा बातचीत करने से उस बच्चे के भावनात्मक, सामाजिक, संज्ञानात्मक, संचार और भाषा के विकास के साथ-साथ उसके वास्तविक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है. वर्तमान समय में अधिगम हानि की भरपाई का प्रयास किया जा रहा है तथा इसके लिए अगले शैक्षणिक सत्र के शुरू होने से पहले के महीनों को छूटे हुए पाठों पर समझ स्थापित करने का सुझाव दिया जा रहा है. यह एक संकीर्ण दृष्टिकोण होगा तथा इस कार्य के लिए प्राप्त अवधि अत्यंत कम है.

आगे की राह :-
अधिकांश गरीब, निम्न तथा मध्यम आय वाले परिवारों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा गरीबी के दुष्चक्र से निकल कर एक उज. जवल भविष्य की तरफ जाने की एक आशा है. व्यापक शैक्षिक असमानता का यह अर्थ है कि इस महामारी के फलस्वरूप समाज के गरीब तथा वंचित वर्ग शिक्षा के अवसर से वंचित हो चुका है.

स्कूलों में निरंतर बंदी तथा शैक्षणिक संस्थानों को फिर से खोलने की अनिच्छा भारत के शिक्षा प्रणाली की एक बड़ी समस्या है इसके साथ ही साथ यह शिक्षा से जुड़े निर्णय निर्माताओं की नीतियों का भी प्रतिबिम्बन करता है. यह हमारी सामाजिक-राजनैतिक जिम्मेदारी है कि देश के प्रत्येक बच्चे की स्कूल में सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, वह किया जाए. यह चयन से सम्बंधित नहीं है परन्तु एक जिम्मेदार समाज के रूप में हमे तत्काल इस विषय पर ध्यान देना चाहिए.

प्रत्येक सरकार को समग्र बाल विकास पर ध्यान देने के साथ अधिगम हानि की भरपाई के लिए मध्यावधिक तथा दीर्घकालिक रणनी. ति तैयार करने की आवश्यकता है. इसके लिए रणनीति, नवीन सोच पर आधारित स्थ. यी समाधान की आवश्यकता है.

संक्षिप्त मुद्दे

राष्ट्रीय

1 भारत में किसान ड्रोन की शुरुआत

ड्रोन टेक्नोलॉजी आज सिक्योरिटी, वाइल्ड लाइफ **conservation**, डिफेंस, बॉर्डर की मॉनिटरिंग और अनेकों क्षेत्रों में उपयोगी साबित हो रहा है और देश की प्रगति और सुरक्षा के लिए इसके और बेहतर इस्तेमाल को **ensure** किया जा रहा है। इसी कड़ीं में कृषि क्षेत्र के विकास और किसानों को उनके कृषि कार्यों में एक जरूरी मदद पहुचाने के लिए भारत में किसान ड्रोन्स के उपयोग की शुरुआत की गई है.

देश के किसानों की सहायता करने के उद्देश्य से एक विशेष अभियान के हिस्से के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किसान ड्रोन का उद्घाटन किया है। सबसे पहले पंजाब और फिर गोवा में किसान ड्रोन यात्रा शुरू की गई है. उत्तर प्रदेश के कन्नौज, मध्यप्रदेश के नीमच और आंध्र प्रदेश के राजा मनगरम में भी किसान ड्रोन यात्रा शुरू हो गई है वहीं तमिलनाडु के सलेम, असम के गोलाघाट राजस्थान के जयपुर और तेलंगाना के करीमनगर में किसान ड्रोन ने काम करना शुरू कर दिया है . हरियाणा के मानेसर में भी इसका उद्घाटन हो गया है. यह 21वीं सदी की आधुनिक कृषि व्यवस्था की दिशा में एक नया अध्याय है. यह न्यू एज रिवॉल्यूशन की शुरुआत है. किसान ड्रोन्स के लांच किए जाने से न केवल ड्रोन सेक्टर का विकास होगा बल्कि बहुत से क्षेत्रों में इसके उपयोग की संभावनाएं खुलेंगी और इससे देश में ड्रोन स्टार्ट अप का एक इकोसिस्टम विकसित होकर सामने आ जायेगा. इन्ही उद्देश्यों के साथ भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के कृषि भूमियों, खेतों में कीटनाशकों का छिड़काव करने के लिए 100 किसान ड्रोन का उद्घाटन किया।

इसे लांच करते हुए पीएम ने कहा कि पहले ड्रोन के नाम पर यह सोचा जाता था कि यह सेना से जुड़ी प्रणाली है या दुश्मनों से लड़ने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली चीजें हैं, लेकिन अब यह आधुनिक कृषि प्रणाली की दिशा में एक नया अध्याय है. पीएम ने कहा कि मुझे यकीन है कि यह लॉन्च न केवल ड्रोन सेक्टर के विकास में मील का पत्थर साबित होगा बल्कि संभावनाओं का एक अनंत आकाश भी खोलेगा। खेतों में ड्रोन से दवाई का छिड़काव किया जाएगा.

इसी के साथ ही गरुड़ एयरोस्पेस ने अगले 2 वर्षों में 1 लाख मेड इन इंडिया ड्रोन बनाने का लक्ष्य रखा है. इससे युवाओं के लिए नए रोजगार और नए अवसर पैदा होंगे.

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि केंद्र वित्तीय वर्ष 2022-23 देश भर में किसानों को डिजिटल और उच्च तकनीक सेवाओं के वितरण के लिए किसान ड्रोन, रासायनिक मुक्त प्राकृतिक खेती, सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देगा. उन्होंने कहा था कि फसल मूल्यांकन, भूमि अभिलेखों के डिजिटलीकरण और कीटनाशकों और पोषक तत्वों के छिड़काव के लिए किसान ड्रोन को बढ़ावा दिया जाएगा.

2 नदी जोड़ो परियोजनाओं के बजट में बढ़ोत्तरी

हाल ही में बजट 2022-23 में, 44,605 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत के साथ केन-बेतवा लिंक परियोजना के कार्यान्वयन के लिए घोषणा की गई. बजट में यह भी घोषणा की गई है कि पांच अन्य नदी लिंक परियोजनाओं दमनगंगा-पिंजाल, ट्रांस-तापी-नर्मदा, गोदावरी-कृष्णा, कृष्णा-पेन्नार और पेन्नार-कावेरी के मसौदे को भी अंतिम रूप दे दिया गया है.

पृष्ठभूमि:

- राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (एनपीपी): नदियों को आपस में जोड़ने के प्रस्ताव ने तब गति पकड़ी जब जल संसाधन मंत्रालय ने 1980 के दशक के दौरान देश के जल संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (एनपीपी) तैयार की.
- नदियों को जोड़ने की इस महत्वाकांक्षी योजना को तब और बढ़ावा मिला जब अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे. एनपीपी के अंतर्गत, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (एनडब्ल्यूडीए) ने जल के अंतर-बेसिन अंतरण के लिए उत्तरी हिमालयी नदी विकास घटक में 14 और दक्षिणी प्रायद्वीपीय नदी विकास घटक में 16 नदी लिंक परियोजनाओं की पहचान की.

केन-बेतवा लिंक परियोजना के बारे में

- केन-बेतवा लिंक परियोजना में केन नदी से बेतवा नदी (यमुना की दोनों सहायक नदियों) में पानी स्थानांतरित करने का प्रस्ताव है.
- 2 किमी लंबी सुरंग के साथ, इस लिंक परियोजना में कुल 221 किमी लंबी नहरें होंगी.
- इस परियोजना को उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में पानी की कमी वाले बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए रामबाण के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें कुल 13 जिलों को शामिल किया गया है, जो मुख्य रूप से इस परियोजना से लाभान्वित होंगे.
- इस नदी लिंक से 9.08 लाख हेक्टेयर सिंचित क्षेत्र, 62 लाख लोगों के लिए पीने

का पानी, 103 मेगावाट हाइड्रो और 27 मेगावाट सौर ऊर्जा पैदा होने की उम्मीद है.

आरएलपी के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ

- विशेषज्ञों ने कहा कि आरएलपी एक असाधारण योजना है जिसमें भारी लागत शामिल है.
- कुछ पर्यावरणविदों और जलविज्ञानियों ने जोर देकर कहा कि आरएलपी अपरिवर्तनीय क्षति कर सकता है:
- बांधों और नहरों का बड़ा नेटवर्क बाढ़ के लिए अग्रणी प्राकृतिक जल निकासी को बदल देगा.
- भूमि के विशाल क्षेत्र जलमग्न हो जाएंगे जिससे असंख्य लोगों का विस्थापन होगा।
- हिमालय, पश्चिमी घाट जैसे पहले से ही बहुत नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की भेद्यता बढ़ सकती है.
- कुछ नदी बेसिन विशेषज्ञों ने कहा कि अधिशेष पानी को बड़े पैमाने पर नदी से नहीं मोड़ा जाना चाहिए क्योंकि नदी बेसिनों को स्वस्थ रखने के लिए अतिरिक्त पानी आवश्यक है क्योंकि यह मिट्टी में नीचे फैलता है, भूजल को रिचार्ज करता है.

3 भारतीय मंदिर वास्तुकला पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2022

आजादी का अमृत महोत्सव भारत के सांस्कृतिक एकीकरण को गति देने के उद्देश्य से अलग-अलग स्तरों और रूपों में मनाया जा रहा है. इसी महोत्सव के तत्वाधान में, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआ.ई) ने कर्नाटक के हम्पी में श्देवायतनमश - भारतीय मंदिर वास्तुकला की एक लंबी यात्रा विषय पर 25 - 26 फरवरी, 2022 को दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया है। भारत के केंद्रीय संस्कृति, पर्यटन और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन किया गया था। उद्घाटन सत्र हम्पी के पट्टाभिराम मंदिर में आयोजित किया गया। सम्मेलन में मंदिर वास्तुकला की नागर, वेसर, द्रविड़ और कलिंग जैसी विभिन्न शैलियों और स्वरूपों पर विचार विमर्श किया गया.

सम्मेलन का उद्देश्य मंदिर के दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी, वै.ज्ञानिक, कला और स्थापत्य पहलुओं पर विचार-विमर्श करना है. सम्मेलन में नागर, वेसर, द्रविड़ और कलिंग जैसी अन्य मंदिर वास्तुकला की विभिन्न शैलियों के विकास और प्रगति पर एक संवाद भी आयोजित किया गया। चर्चा के विभिन्न सत्रों में मंदिर-निराकार से साकार रूप तक, मंदिर- मंदिर वास्तुकला का विकास, मंदिर-क्षेत्रीय विकास स्वरूप और शैलियाँ, मंदिर-कला, संस्कृति, शिक्षा, प्रशासन और अर्थव्यवस्था का केंद्र, मंदिर-पर्यावरण का रक्षक, मंदिर- दक्षिण पूर्व एशिया में संस्कृति का प्रसार पर विचार विमर्श किया गया.

यह सम्मेलन विद्वानों, भारतीय इतिहास, पु.रातत्व, संस्कृति और वास्तुकला के छात्रों और आम जनता के लिए लाभदायक होगा. सम्मेलन का उद्देश्य विद्वानों और छात्रों में समान रूप से रुचि पैदा करना, हमारी वि.रासत को सीखना और उसका सम्मान करना है.

मंदिर हमेशा अपने तरीके से भारतीय जीवन और इसके इकोसिस्टम का एक अभिन्न अंग रहा है. मंदिर निर्माण का अभ्यास न केवल उपमहाद्वीप में एक पवित्र कार्य के रूप में किया गया था, बल्कि यह विचार दक्षिण-पूर्व और पूर्वी एशिया जैसे निकटतम पड़ोस में भी गया था; इसलिए, यह एक दिलचस्प अध्ययन बन जाता है कि कैसे मंदिर वास्.तुकला की कला और तकनीक भारत से अन्य क्षेत्रों में फैली और इस कला को कैसे संशोधित किया गया.

हम्पी का भारतीय मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्व :

चौदहवीं शताब्दी के दौरान मध्यकालीन भारत के महानतम साम्राज्यों में से एक विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी कर्नाटक राज्य में स्थित है. यह भारत के सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक रहा है. इसकी स्थापना हरिहर और बुक्का ने वर्ष 1336 में की थी.

यूनेस्को (वर्ष 1986) द्वारा विश्व विरासत स्थल के रूप में वर्गीकृत, यह "विश्व का सबसे बड़ा ओपन-एयर संग्रहालय" भी है. हम्पी, उत्तर में तुंगभद्रा नदी और अन्य तीन ओर से पथरीले ग्रेनाइट के पहाड़ों से घिरा हुआ है. हम्पी के चौंदहवीं शताब्दी के भग.नावशेष यहाँ लगभग 26 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए हैं. विजयनगर शहर के स्मा.रक जिन्हें विद्या नारायण संत के सम्मान में विद्या सागर के नाम से भी जाना जाता है, को वर्ष 1336-1570 ईस्वी के बीच हरिहर-I से लेकर सदाशिव राय आदि राजाओं ने बनवाया था। यहाँ पर सबसे अधिक इमारतें तुलुव वंश के महान शासक कृष्णदेव राय (1509 -30 ईस्वी) ने बनवाई थीं. हम्पी के मंदिरों को उनकी बड़ी विमाओं, पुष्प अलंकरण, स्पष्ट नक्काशी, विशाल खम्भों, भव्य मंडपों एवं मूर्ति कला तथा पारंपरिक चित्र निरुपण के लिये जाना जाता है, जिसमें रामायण और महाभारत के विषय शामिल किये गए हैं.

हम्पी में मौजूद विठ्ठल मंदिर विजय नगर साम्राज्य की कलात्मक शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है. एक पत्थर से निर्मित देवी लक्ष्मी, नरसिंह तथा गणेश की मूर्तियाँ अपनी विशालता एवं भव्यता के लिये उल्लेखनीय हैं. यहाँ स्थित जैन मंदिरों में कृष्ण मंदिर, पट्टाभिराम मंदिर, हजारा राम चंद्र और चंद्र शेखर मंदिर प्रमुख हैं.

अंतरराष्ट्रीय

1 भारत-यूएई सीईपीए

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, भारत और संयुक्त अरब अमीरात ने एक व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते पर वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और यूएई के अर्थव्यवस्था मंत्री अब्दुल्ला बिन तौक अल मर्री ने हस्ताक्षर किए.

यह द्विपक्षीय व्यापार समझौता इस क्षेत्र में भारत का प्रथम समझौता तथा एक दशक में किसी भी देश के साथ पहला व्यापक व्यापार समझौता है.

टैरिफ में कमी

- इस समझौते के अंतर्गत, भारत सोने के आयात पर टैरिफ रियायतें देने पर सहमत हुआ, जबकि संयुक्त अरब अमीरात ने भारत से आभूषण आयात पर शुल्क समाप्त कर दिया.
- यह समझौता अमीरात को भारत के निर्यात के 90% सेगमेंट पर शुल्क-मुक्त पहुंच की अनुमति प्रदान करेगा.
- CEPA से लगभग 26 बिलियन डॉलर मूल्य के भारतीय उत्पादों को लाभ होने की संभावना है. इनमे ऐसे भारतीय उत्पाद भी सम्मिलित हैं जिनपर वर्तमान में UAE द्वारा 5% आयात शुल्क लगाया जाता है.
- इस समझौते के द्वारा 80 प्रतिशत सामानों पर टैरिफ कम करने का प्रावधान है.
- उन 20% सामानों पर टैरिफ नहीं कम किया गया है जो घरेलू व्यवसायों के लिए "संवेदनशील" हैं.
- अगले 5 वर्षो में दोनों पक्षों द्वारा और अधिक टैरिफ रियायत अपेक्षित हैं जिससे निर्यात के 98 प्रतिशत और यूएई से आयात के 90 प्रतिशत सेगमेंट पर टैरिफ कम होने की सम्भावना है.
- भारतीय निर्यात को अगले 5 से 10 वर्षों के भीतर शून्य शुल्क पहुंच प्राप्त करने के लिए निर्धारित किया गया है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक सामान, रसायन और पेट्रोकेमिकल्स सीमेंट, सिरेमिक और मशीनरी शामिल हैं, जो संयुक्त अरब अमीरात को वर्तमान निर्यात के मूल्य का लगभग 9 प्रतिशत है.

समझौते का महत्व :-

- इस समझौते के फलस्वरूप पांच वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार को 60 अरब डॉलर से बढ़ाकर 100 अरब डॉलर करने की उम्मीद है.
- यह समझौता वर्ष 2030 तक यूएस +1 ट्रिलियन व्यापारिक निर्यात और यूएस +1 ट्रिलियन सेवाओं के निर्यात के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगा.
- इस समझौते के माध्यम से, भारतीय निर्यातकों को बड़े अरब और अफ्रीकी बाजारों तक पहुंच प्राप्त होगी.
- भारत के श्रम प्रधान और रोजगार पैदा करने वाले उद्योगों जैसे रत्न और गहने, कपड़ा, चमड़ा, जूते, खेल के सामान, फर्नीचर, फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरण और ऑटोमोबाइल को इस समझौते से सबसे अधिक लाभ होने की उम्मीद है.
- यह समझौता भारतीय निवेशकों के लिए अबू धाबी में विशेष औद्योगिक उन्नत प्रौद्योगिकी क्षेत्र स्थापित करने में निवेश के अवसर पैदा करेगा. इससे जो रसद और सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स कृषि, स्टील और एल्यूमीनियम के व्यापार में वृद्धि होगी.

यूएई के साथ यह सीईपीए, भारत के लिए यूएई के रणनीतिक भागीदार के रूप में स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त करेगा. इसके साथ ही यह भारत को अफ्रीका के बाजार और इसके विभिन्न व्यापार भागीदारों तक अपेक्षाकृत आसान पहुंच प्रदान करेगा. यह समझौता भारत को आपूर्ति श्रृंखला, विशेष रूप से हथकरघा, हस्तशिल्प कपड़ा और फार्मा का भाग बनने में सहायक हो सकता है.

NOTES

2 हिंद प्रशांत क्षेत्र में 'यूरोपीय संघ-भारत साझेदारी' का महत्व

चर्चा में क्यों?

यूरोपीय संघ और उसके प्रमुख हिंद प्रशांत क्षेत्र के साझेदार देश, हिंद प्रशांत क्षेत्र के लिए एक सकारात्मक एजेंडा तैयार करने के लिए फ्रांस की अध्यक्षता में (पेरिस में होने वाले) मंत्री स्तर की बैठक करेंगे। अपनी तरह के इस पहले आयोजन में, फ्रांस, यूरोपीय संघ के सह-अध्यक्ष के रूप में यूरोपीय संघ के सदस्य देशों और भारत के विदेश मंत्री जयशंकर सहित 30 हिंद प्रशांत देशों के विदेश मंत्रियों को एक साझा मंच प्रदान कर रहा है.

सुरक्षा चुनौतियों सहित इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में दांव पर लगे मुद्दे यूरोपीय संघ के सभी देशों के लिए चिंता का विषय हैं. यूरोप सैन्य टकराव के तर्क के बजाय समाधान का एक व्यापक और सकारात्मक एजेंडा लागू करना चाहता है. यह हिंद-प्रशांत में सहयोग के लिए यूरोपीय संघ की रणनीति का मार्गदर्शक सिद्धांत भी है, जिसका सितंबर 2021 में अनावरण किया गया था. यूरोप इस क्षेत्र के देशों को उनकी संप्रभुता के संरक्षण के लिए एक स्थायी, पारदर्शी मॉडल के साथ ही अन्य मॉडलों के विकल्प की पेशकश कर सकता है, जैसे-चीन का मॉडल. इस रणनीति को कार्रवाई में बदलने में फ्रांस के टुमॉरोज फोरम की महत्वपूर्ण भूमिका है.

भारत, यूरोपीय संघ और हिंद प्रशांत क्षेत्र :-

- सुरक्षा और रक्षा, कनेक्टिविटी और सामान्य वस्तुओं के मुद्दों पर भारत की केंद्रीय भूमिका है.
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थित एक राष्ट्र के रूप में फ्रांस की इस क्षेत्र में समुद्री कानून को बनाए रखने के लिए लंबे समय से प्रतिबद्धता रही है, विशेष रूप से स्थायी नौसैनिक उपस्थिति और संयुक्त अभ्यास के माध्यम से. जैसे भारत के साथ फ्रांस वार्षिक रूप से नौसैनिक अभ्यास "वरुण" का आयोजन कर रहा है.
- अन्य यूरोपीय संघ के देश भी राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से इस क्षेत्र में अपनी सक्रियता बढ़ा रहे हैं। जैसे ब्रिटेन, अमेरिका और आस्ट्रेलिया के मध्य हिंद प्रशांत क्षेत्र के लिए हुआ आक्स (एयूकेएस) समझौता.
- मजबूत यूरोपीय जुड़ाव इस विशाल क्षेत्र की सुरक्षा चुनौतियों का बेहतर बनाने में सहायता करेगा.
- यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा जो इस क्षेत्र में स्थिरता के प्रदाता के रूप में यूरोपीय संघ की भूमिका को प्रदर्शित करेगा.

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में यूरोपीय शक्तियों के साथ भारत की हालिया भागीदारी :-

- हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आ.ईओआरए) में फ्रांस की सदस्यता के लिए भारत का समर्थन.
- हिंद प्रशांत में यूरोप की बड़ी भूमिका के लिए भारत का समर्थन.
- भारत द्वारा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक नई भू-राजनीतिक स्थिति के निर्माण में जर्मनी और नीदरलैंड की रुचि का स्वागत किया गया है.
- भारत और यूरोपीय संघ जिन कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एक साथ काम कर सकते हैं, उनमें समुद्री डकैती, आतंकवाद विरोधी चुनौतियों के खिलाफ क्षमता निर्माण में संयुक्त प्रयास के साथ ही इंटरऑपरेबिलिटी, डोमेन जागरूकता, समुद्री प्रौद्योगिकियों और नीली (ब्लू) अर्थव्यवस्था आदि को बढ़ाने में सहयोग के बिंदु शामिल हैं.

निष्कर्ष :-

- बढ़ते तनाव की दुनिया में, फ्रांस की यूरोपीय संघ में अध्यक्षता का मुख्य लक्ष्य यूरोप की संप्रभुता को मजबूत करना और अपने भविष्य का निर्णय करने की क्षमता को मजबूत करना है.
- यह प्रयास सामरिक स्वायत्तता के लिए भारत की मौलिक आकांक्षा से सुसंगत है. इसलिए फ्रांस का मानना है कि महामारी के बाद की दुनिया को नया आकार देने और मल्टीपोलर व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए यूरोपीय संघ भारत का स्वाभाविक भागीदार हो सकता है.

NOTES

पर्यावरण

1 होप आइलैंड

चर्चा में क्यों ?

आंध्र प्रदेश सरकार ने हाल ही में "का. कीनाडा बे" में स्थित काकीनाडा शहर और होप आइलैंड के बीच एयर कनेक्टिविटी के विकास के लिए योजना बनाई है जिससे आंध्र प्रदेश में गोदावरी मुहाने की खूबसूरती को भी नई दिशा दी जा सकेगी.

होप आइलैंड आंध्र प्रदेश के कोरिंगा वन्यजीव अभ्यारण का भाग है और ओलिव रिडले टर्टल्स का भारत में सुरक्षित आवास भी है जिनके संरक्षण के लिए एनटीपीसी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) के मानकों के हिसाब से भी यहां काम कर रहा है.

होप आइलैंड प्राकृतिक ब्रेक वाटर का काम करता है और बंगाल की खाड़ी में आने वाले चक्रवातों से काकीनाडा शहर को बचाता है. बंगाल की खाड़ी से उठने वाले तूफान इस द्वीप से पहले टकराते हैं. मछुआरों को शिफ्ट होने की सलाह दी जाती है लेकिन वो कभी यहां से जाने की बात नहीं करते. यह द्वीप बंगाल की खाड़ी में टैडपोल के आकार में 8.04 वर्ग किमी में है. यह 200 वर्षों में कोरिंगा नदी की रेत से बना है.

कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य **(Coringa Wildlife Sanctuary)** को यूनेस्को विश्व ध रोहर स्थल का दर्जा दिलवाने की प्रक्रिया भी राज्य सरकार द्वारा शुरू कर दी गई है.

इस वन्यजीव अभयारण्य में पक्षियों की कुल 120 प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनमें बगुला, राजहंस और तीतर आदि प्रमुख हैं. इसके अतिरिक्त यहाँ पर सुनहरा सियार, समुद्री कछुआ और ऊदबिलाव भी पाए जाते हैं.

बड़ी मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध होने के कारण इस अभयारण्य में पक्षियों की विविध ता पाई जाती है.

इस वन्य अभयारण्य की महत्त्वता का अंदा. जा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें विलुप्त होने की कगार पर खड़ी कुछ प्रजातियाँ जैसे – लंबी चोंच वाला गिद्ध और सफेद इबिस आदि भी पाई जाती हैं.

कोरिंगा वन्यजीव

- अभ्यारण आंध्रप्रदेश के काकीनाडा के समीप स्थित है. यह भारत में पश्चिम बंगाल के सुंदरवन डेल्टा के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र है.
- इस अभयारण्य में पक्षियों की 120 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं.
- इस अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल 235. 70 वर्ग किमी. है.

2 भारत में वन्यजीवों को वरमिन घोषित करने का विरोध

हाल ही में पीपल्स फॉर दि एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स यानी पेटा ने भारत में पशुओं को कानूनी स्तर पर वरमिन **(Vermin)** घोषित करने का विरोध किया है और अपील की है कि एनिमल्स को वरमिन घोषित करने वाले प्रावधान हटा दिए जाएं. दरअसल भारत सरकार ने वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन अमेंडमेंट बिल 2021 के जरिए वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए कुछ नए प्रावधान जोड़े हैं और इसी कड़ी में पेटा ने कहा है कि एनिमल को **Vermin** न घोषित किया जाय. भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 62 में कुछ वन्यजीवों को वरमिन घोषित करने का प्रावधान किया गया है. इसमें प्रावध ान किया गया है कि केंद्र सरकार एक अधि सूचना के जरिए शेड्यूल 1 और शेड्यूल 2 में विनिर्दिष्ट वन्यजीवों को छोड़कर किसी अन्य जीव को वर्मिन घोषित कर सकती है. कितने अवधि के लिए इन्हें वर्मिन घोषित किया जाएगा इसके लिए अधिसूचना में जितना दिया गया हो उतना ही किया जा सकता है. जितने समय तक यह नोटिफिकेशन बना रहेगा तब तक ऐसे वन्य जीवों को शेड्यूल 5 स्पीसीज के रूप में जाना जाएगा.

2016 में उत्तराखंड और बिहार ने जंगली सुअरों **(boars)** को वरमिन घोषित किया था.वर्ष 2020 में उत्तराखंड ने नीलगाय को भी वरमिन घोषित किया था जिसका मतलब है कि 1 साल तक ऐसे जीवों को मारने के लिए किसी अनुमति की जरूरत नही होगी.

हाल के समय में उड़ीसा के किसानों ने भी जंगली सुअरों को वरमिन **(vermin)** घोषित करने की मांग इस आधार पर की थी कि ये फसलों को बहुत नुकसान पहुचाते हैं। इसके पूर्व हिमाचल प्रदेश में बंदरों को भी वर्मिन घोषित किया जा चुका है. 2016 में हिमाचल प्रदेश सरकार के कृषि विभाग ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि वन्य जीवों खासकर बंदरों के चलते 184.28 करोड़ रुपये का **crop loss** हुआ था.

इसी प्रकार केरल में नीला कोझी पक्षी , गोवा में जंगली सूअर को वरमिन घोषित करने की मांग हाल के समय में हो चुकी है.

विज्ञान एवं तकनीक

1 चंद्रयान -2 ऑर्बिटर ने सौर प्रोटॉन घटनाओं का पता लगाया

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संग. ठन (इसरो) ने कहा कि चंद्रयान -2 लार्ज एरिया सॉफ्ट एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (क्लास) ने सौर प्रोटॉन घटनाओं (एसपीई) का पता लगाया है जो अंतरिक्ष में मनुष्यों के लिए विकिरण के जोखिम में काफी वृद्धि करता है.

संदर्भः

- चंद्रयान -2 लार्ज एरिया सॉफ्ट एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (क्लास) ऑन-बोर्ड चंद्रयान -2 ऑर्बिटर ने 20 जनवरी, 2022 को हुई M5.5 क्लास सोलर फ्लेयर के कारण SPE का पता लगाया. CLASS इंस्ट्रूमेंट ने 18 जनवरी को हुई एम1.5 श्रेणी के सौर ज्वाला के कारण चंद्रमा के माध्यम से CME इवेंट का भी पता लगाया.
- सीएमई लगभग 1,000 किमी / सेकंड की गति से यात्रा करता है और पृथ्वी तक पहुंचने में लगभग 2-3 दिन लगते हैं.
- इस घटना को नासा के GOES उपग्रह द्वारा दर्ज नही किया जा सका क्योंकि पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र ऐसी घटनाओं से सुरक्षा प्रदान करता है. इस घटना को चंद्रयान -2 द्वारा रिकॉर्ड किया गया. चंद्रयान -2 पर क्लास पेलोड ने सूर्य पर दो तीव्र फ्लेयर्स से गुजरते हुए एसपीई और सीएमई दोनों घटनाओं को देखा.
- 18 जनवरी को इस ऑर्बिटर ने कोरोनल मास इजेक्शन (सीएमई) भी दर्ज किया, जिसमे सूर्य से प्लाज्मा और चुंबकीय क्षेत्रों की एक शक्तिशाली धारा निकलती है, जो कुछ दिनों बाद पृथ्वी पर पहुंचती है, जिससे भू-चुंबकीय तूफान आते हैं और औरोरा के साथ आकाश में रोशनी होती हैं.
- इस तरह के बहु-बिंदु अवलोकन हमें विभिन्न ग्रहों की प्रणालियों पर इसके प्रसार और प्रभाव को समझने में मदद करते हैं.
- एसपीई घटना को नासा के भूस्थैतिक परिचालन पर्यावरण उपग्रह (जीओईएस) उपग्रह द्वारा पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करते हुए देखा गया था. परन्तु CME ईवेंट GOES द्वारा पता नहीं लगाया गया है.

SOLAR सिंतम क्या है?

जब सूर्य सक्रिय होता है, तो सौर फ्लेयर्स नामक रोशनीयुक्त विस्फोट होते हैं जिससे कभी-कभी ऊर्जावान कणों (जिसे सौर प्रोटॉन ईवेंट्स या एसपीई कहा जाता है) को इंटरप्लेनेटरी स्पेस में भी निकल आते हैं. इनमें से अधिकांश उच्च ऊर्जा प्रोटॉन हैं जो अंतरिक्ष प्रणालियों को प्रभावित करते हैं और अंतरिक्ष में विकिरण उत्पन्न होते है जो मनुष्यों के लिए जोखिम उत्पन्न करते हैं. वे पृथ्वी के मध्य वायुमंडल में बड़े पैमाने पर आयनीकरण का कारण बन सकते हैं.

कई तीव्र सौर सिंतमे सीएमई, प्लाज्मा और चुंबकीय क्षेत्रों की एक शक्तिशाली धारा के होती हैं, जो कुछ दिनों बाद पृथ्वी पर पहुंचते हैं, जिससे भू-चुंबकीय तूफान आते हैं और औरोरा के साथ ध्रुवीय आकाश में प्रकाश उत्पन्न करते हैं.

आगे की राहः

- ये प्राकृतिक घटना हैं और इसे रोका नहीं जा सकता. इन तूफानों के प्रभाव को कम करने के लिए पूर्वानुमान और बचाव ही एकमात्र विकल्प है.
- उदाहरण के लिए अंतरिक्ष मौसम पूर्वानुमान केंद्र लगातार सूर्य की निगरानी करते हैं (अंतरिक्ष से और पृथ्वी की सतह दोनों जगह से) जब पृथ्वी को प्रभावित करने की क्षमता के साथ एक सौर तूफान उत्पन्न होता है तो वे इसके लिए चेतावनी जारी करते हैं.
- सरकारें और वैज्ञानिक इस मुद्दे पर अधिक ध्यान दे रहे हैं, सूर्य से इस तरह के शक्तिशाली प्रभावों का सामना करने में मदद करने के लिए सिस्टम और प्रक्रियाओं को बनाने के लिए सभी एकजुट हैं.

NOTES

2 इंडिजिनस स्टील्थ फाइटर

चर्चा में क्यों :-

रक्षा अधिकारियों के अनुसार, भारत तथा फ्रांस अगले कुछ माह में पांचवीं पीढ़ी के 125**KN** इंजन के स्वदेशी उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (एएमसीए) के संयुक्त विक. ास हेतु समझौता कर सकते हैं.

उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान क्या है?

- उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (एएमसीए) भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना के लिए पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान विक. सित करने का एक भारतीय कार्यक्रम है. इसमें छठी पीढ़ी की कुछ प्रौद्योगिकियां भी सम्मिलित की जाएंगी.
- विमान का डिजाइन, वैमानिकी विकास एजेंसी (एडीए) द्वारा किया जाता है। यह रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआ. रडीओ) के तहत गठित संस्थान है.
- इसे डीआरडीओ, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल), और फ्रांसीसी इंजन निर्माता सफरान के मध्य सार्वजनिक-निजी मॉडल पर आधारित संयुक्त उद्यम द्वारा निर्मित किया जायेगा.
- इस कार्यक्रम का लक्ष्य 2028 तक विमान का उत्पादन करना है. विमान की संभावित लागत लगभग 15000 करोड़ रूपये आने की सम्भावना है.
- एएमसीए सिंगल-सीट, ट्विन-इंजन, स्टील्थ ऑल-वेदर स्विंग-रोल लड़ाकू विमान होगा. एएमसीए के दो वेरिएंट चरणबद्ध प्रोडक्शन मॉडल में तैयार किए जाएंगे. एएमसीए मार्क 1 पांचवीं पीढ़ी की तकनीकों से लैस होगा तथा मार्क 2 में छठी पीढ़ी की प्रौद्योगिकी का भी प्रयोग किया जायेगा.
- एएमसीए का प्रारंभिक डिजाइन 2009 में आरम्भ किया गया था. इसे इंटरनल वेपन वे तथा डायवर्टरलेस सुपरसोनिक इंटेक के एक जुड़वां इंजन वाले स्टील्थ विमान के रूप में परिकल्पित किया गया है. अब इसकी डिजाइन तैयार हो चुकी है तथा यह विमान विनिर्माण प्रक्रिया की तरफ बढ़ा जा चुका है. यह 25 टन का विमान होगा जिसमें 1,500 किलोग्राम का आंतरिक पेलोड, 6,500 किलोग्राम आंतरिक ईंधन तथा 5,500 किलोग्राम बाह्य पेलोड होगा.
- इस विमान के कॉन्फिगरेशन को फ्रीज कर दिया गया है. प्रारंभिक सेवा गुणवत्ता आवश्यकताओं (**PSQR**) को अंतिम रूप देकर प्रारंभिक डिजाइन समीक्षा पूर्ण कर ली गई है. इस वर्ष के अंत तक इस विमान का क्रिटिकल डिजाइन रिव्यू (सीडीआर) होने की सम्भावना है. 2025 में इसके प्रथम उड़ान (ट्रायल) की योजना बनाई गई है.
- एसीएमए में स्टील्थ और नॉन-स्टील्थ कॉन्फिगरेशन होंगे, इसके साथ ही इसे दो चरणों में विकसित किया जाएगा. मौजूदा **GE**414 इंजन के साथ एसीएमए एमके-1 का निर्माण किया जायेगा इसके उपरान्त एक उन्नत, अधिक शक्तिशाली इंजन के साथ एसीएमए एमके- 2 को संयुक्त रूप से विक. सित करने की योजना है.
- इसके साथ ही इस परियोजना में नौसेना के वायुयान वाहकों से उड़ान भरने के लिए दो इंजन वाले डेक-आधारित लड़ाकू जेट के विकास पर भी बात हो रही है. डॉ. देवधारे ने कहा कि इन दोनों ही विमानों की प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों में समानता है.
- एसीएमए का उद्देश्य वायवीय श्रेष्ठता, जमीनी हमले, शत्रु वायु रक्षा (**SEAD**) के दमन तथा इलेक्ट्रॉनिक युद्ध (**EW**) मिशन सहित कई मिशनों को पूरा करना है। यह विमान सुखोई **Su-30MKI** का बेहतर प्रतिस्थापन होगा.
- एएमसीए डिजाइन को निम्न रडार क्रॉस सेक्शन और सुपरक्रूज क्षमता के लिए अनुकू. लित किया गया है.

स्टील्थ टेक्नोलॉजी के लाभ :-

- पारंपरिक वाहनों के स्थान पर स्टील्थ वाहनों के उपयोग से युद्ध क्षेत्र की दक्षता को बढ़ाया जा सकता है. इसके साथ ही साथ इसमें दीर्घकालिक वित्तीय बचत भी प्राप्त होगी.
- एक स्टील्थ लड़ाकू विमान द्वारा किये गए आक्रमण की स्थिति में शत्रु प्रतिकार करने की स्थिति में नहीं रहता क्योंकि शत्रु इन स्टील्थ लड़ाकू विमानों का पता लगाने में असमर्थ रहते हैं.
- स्टील्थ तकनीकी के विमानों में जान-माल का कम नुकसान होता है.

स्टील्थ प्रौद्योगिकी से हानि :-

- स्टील्थ प्रौद्योगिकी से निर्मित विमान, पा. रम्परिक विमानों की तुलना में कम गतिशील होते हैं.
- स्टील्थ एयरक्राफ्ट, पारंपरिक एयरक्राफ्ट की तुलना में कम पेलोड या वहन करने की क्षमता होती है.
- एक स्टील्थ विमान की लागत बहुत अधिक होती है **A B-2** ($2 बिलियन) और **F-22** ($100 मिलियन) जैसे लड़ाकू विमान दुनिया के सबसे महंगे स्टील्थ विमान हैं.

NOTES

आर्थिक

1 'भारत की आयात शुल्क नीति'

चर्चा में क्यों :-

विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के अनुसार 2021 के लिए भारत का टैरिफ प्रोफाइल, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में 15% के उच्चतम औसत टैरिफ में से एक है.

प्रमुख बिंदु :-

- 2022-23 के केंद्रीय बजट में, भारत के लिए एक दूरदर्शी विजन, "अमृत काल" की चर्चा की गई है, जिसमें 2047 तक भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान व्यक्त किया गया है.
- सरकार "मेक इन इंडिया" को बढ़ावा देकर, आयात पर निर्भरता कम कर निर्यात को बढ़ावा देना चाहती है.

उठाए गए कदम :-

- घरेलू विनिर्माण को बढ़ाने के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है.
- मेक इन इंडिया में बाधा डालने वाले चिकित्सा उपकरणों जैसे क्षेत्रों में इनवर्टेड ड्यूटी को कम करने के प्रयास किए गए है.
- 75% से अधिक चिकित्सा उपकरणों की मांग आयात के माध्यम से पूरी की जाती है और कई अध्ययनों ने पुष्टि की है कि तैयार चिकित्सा उपकरणों की तुलना में कच्चे माल/ मध्यवर्ती उत्पादों पर उच्च आयात शुल्क घरेलू उत्पादन में बाधा उत्पन्न कर रहे थे.
- 30 से अधिक उद्योगों को कवर करते हुए स्वायत्त टैरिफ बनाम व्यापार समझौ. तों पर आईसीआरआईईआर द्वारा आयोजित हितधारक परामर्श ने पुष्टि की कि इनवर्टेड ड्यूटी से संबंधित अधिकांश मुद्दों का समाधान किया गया है.
- मादक पेय पदार्थों जैसे कुछ क्षेत्र जहां अंतिम और मध्यवर्ती दोनों उत्पादों पर कुल मिलाकर लगभग 150 प्रतिशत शुल्क और उपकर हैं, जो भारत के व्यापारिक भागीदारों और घरेलू उद्योग के लिए समान रूप से चिंता का विषय बना हुआ है.
- हालांकि, इसका व्यापारिक वार्ताओं में सौदेबाजी के उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है.
- पिछले कुछ वर्षों में इनवर्टेड ड्यूटी की समस्या का समाधान करते हुए सीमा शुल्क छूट को युक्तिसंगत बनाया गया है, नए शुल्क लगाए गए हैं और कुछ उत्पादों के लिए शुल्क में कमी की गई है.
- इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे कुछ क्षेत्रों में, इसके सकारात्मक परिणाम दिखाई दिए हैं. उदाहरण के लिए, भारत ने स्मार्टफोन का निर्माण शुरू कर दिया है.

आगे की राह :-

- भारत के पिछले व्यापार समझौते ज्यादातर भू-रणनीतिक थे, लेकिन नई दिल्ली अब आर्थिक रणनीति पर ध्यान देते हुए, प्रमुख निर्यात स्थलों में अधिक से अधिक बाजार पहुंच पर ध्यान केंद्रित कर रही है.
- मेगा-रीजनल एग्रीमेंट, रीजनल कॉम्प्रिहें. सव इकोनॉमिक पार्टनरशिप (आरसीईपी) से पीछे हटने और चीन से आयात को प्रतिबंधित करने के लिए कई उपायों को लागू करने के बाद, भारत ट्रांसशिपमेंट हब, यूएई के साथ एक समझौते पर आगे बढ़ रहा है.
- रत्न, आभूषण और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्र पहले से ही इसे एक प्रमुख निर्यात-संवर्धन समझौते के रूप में देखते हैं.
- ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत का 'अर्ली हार्वेस्ट समझौता' हो चुका है, जो जापान के साथ आपूर्ति-श्रृंखला पहल में एक प्रमुख भागीदार है, जो चीन पर अधिक निर्भरता के बारे में समान रूप से चिंतित है.
- यूके के साथ वार्ता का पहला दौर, जनवरी 2022 में पूरा हो गया था. जिसके साथ भारत का माल और सेवाओं दोनों में सकारात्मक व्यापार संतुलन है. इसके साथ ही भारत ने यूरोपीय संघ के साथ व्यापार वार्ता फिर से शुरू कर दी है.
- व्यापार वार्ता अमेरिका के साथ भी शुरू की जा सकती है, लेकिन वाशिंगटन दुनिया का सबसे कठिन व्यापार वार्ताकार है और इस तरह की बातचीत से पहले डेटा साझा करने जैसे क्षेत्रों के लिए बेहतर घरेलू नीति का होना अत्यंत आवश्यक है.
- व्यापार-समझौता भागीदारों के रूप में निर्यात स्थलों के चयन के संदर्भ में, भारत ने सही रणनीति का पालन किया है.
- भारत अपनी घरेलू सब्सिडी/प्रोत्साहन व्यवस्था को विश्व व्यापार संगठन के अनुरूप बनाने का प्रयास कर रहा है.
- गुणवत्ता में सुधार, उत्पाद मानकीकरण और बुनियादी ढांचे और रसद (लाजिस्टि. टक्स) विकास पर अत्यधिक जोर दिया गया है, ताकि लागत कम हो जिससे हमारी निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाया जा सके.
- उच्च टैरिफ को एक उपकरण के रूप में प्रयुक्त करने का प्रयास.

1. भारतीय सेना ने "सैन्य रणक्षेत्रम" नाम का हैकाथॉन आयोजित किया

भारतीय सेना ने "सैन्य रणक्षेत्रम" के नाम से पहला हैकाथॉन का आयोजन 01 अक्टूबर 2021 से 31 दिसंबर 2021 के बीच किया था. यह अपनी तरह का पहला हैकाथॉन है. इसका आयोजन मिलिट्री कॉलेज ऑफ टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियरिंग (एमसीटीई), महू में किया गया था. यह हैकाथॉन शिमला स्थित सेना प्रशिक्षण कमान के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था. इसी क्रम में थल सेनाध्यक्ष जनरल एमएम नरवणे ने 10 फरवरी 2022 को एक ऑनलाइन समारोह में हैकाथॉन के विजेताओं को सम्मानित किया. बता दें कि हाल ही में भारतीय सेना ने मप्र के महू में मिलिट्री कॉलेज ऑफ टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियरिंग में क्वांटम लैब तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) केंद्र की स्थापना की है.

2. पैकेज्ड खाद्य पदार्थों पर 'हेल्थ स्टार रेटिंग'

हाल ही में भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण **(FSSAI)** ने खाद्य पदार्थों की पैके. जिंग को लेकर एक निर्देश जारी किया है. इसके तहत अब पैकेज्ड खाद्य पदार्थों पर 'हेल्थ स्टार रेटिंग' दर्शाई जाएगी. सितारों की संख्या इस बात को दिखाएगी कि वस्तु स्वास्थ्य के लिहाज से कितनी अच्छी है या खराब है. यह रेटिंग खाद्य पदार्थ में मौजूद वसा, चीनी और नमक की मात्रा पर आधारित होगी. इसके लिए सहायक अध्ययन भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद द्वारा किया गया था। बता दें कि भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण **(FSSAI)** स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है. इसकी स्थापना खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के तहत की गई है, जो भारत में खाद्य सुरक्षा और विनियमन से संबंधित एक समेकित कानून है.

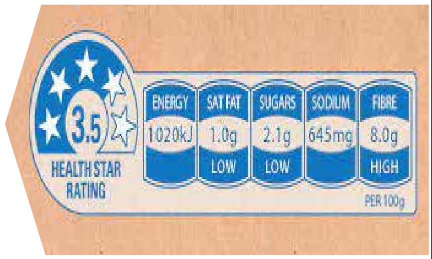

3. भारत सरकार ने आजीविका और उद्यम के लिए सीमांत व्यक्तियों के लिए स्माइल योजना शुरू की है

भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग ने स्माइल योजना की शुरूवात की है. स्माइल योजना ट्रांसजेंडर समुदाय और भिखारियों के कल्याण के लिए एक केंद्रीय योजना है. योजना के लिए सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 365 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं. इस योजना के अन्तर्गत दो उप-योजनाएं शामिल हैं. पहली 'ट्रांसजेंडर समुदाय के व्यापक पुनर्वास के लिए और दूसरी 'भीख मांगने के कार्य में लगे व्यक्तियों के व्यापक पुनर्वास के लिए.

ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के कल्याण के लिए योजना के घटक निम्न हैं :-

- नौवीं कक्षा तथा स्नातकोत्तर तक के ट्रांसजेंडर छात्रों के लिए छात्रवृत्ति.
- विभाग में पीएम-दक्ष योजना के तहत कौशल विकास और आजीविका के साधन उपलब्ध करना.
- 'गरिमा गृह' के रूप में आवास उपलब्ध करना.
- प्रत्येक राज्य में ट्रांसजेंडर सुरक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना करना.
- ई-सेवाएं और अन्य कल्याणकारी उपाय उपलब्ध कराना .

वहीं भीख मांगने के कार्य में लगे व्यक्तियों के व्यापक पुनर्वास के लिए योजना का फोकस सर्वेक्षण और पहचान, लामबंदी, आश्रय गृह और व्यापक पुनर्वास पर है.

4. ई.आई.यू के डेमोक्रेसी इंडेक्स में भारत 46 वें स्थान पर

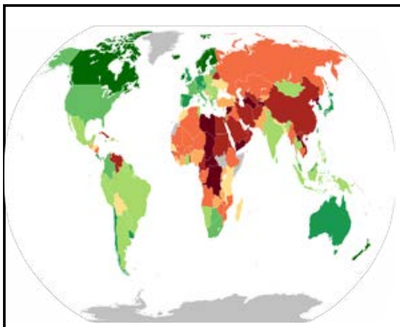

इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट (ई.आई.यू) के डेमोक्रेसी इंडेक्स 2021 में भारत 6.91 स्कोर के साथ 167 देशों में 46वें स्थान पर है. इंडेक्स में भारत ने राजनीतिक संस्कृति के मानदंड पर सबसे कम स्कोर (5) और चुनावी प्रक्रिया और बहुलवाद के मानदंड पर उच्चतम स्कोर (8.67) पाया है. भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश ने 2021 में डेमोक्रेसी इंडेक्स में एक रैंक का सुधार कर 75वां स्थान हासिल किया है. इंडेक्स में दावा किया गया है कि, दुनिया की एक तिहाई से अधिक आबादी सत्तावादी (ऑथॉरिटारियन) शासन में रहती है. लोकतंत्र सूचकांक में नॉर्वे पहले स्थान पर है, उसके बाद न्यूजीलैंड, फिनलैंड और आइसलैंड हैं. वहीं अफगानिस्तान सूचकांक में अंतिम स्थान पर है, उसके बाद म्य. ांमार (नीचे से दूसरा स्थान) और उत्तर कोरिया (नीचे से तीसरा स्थान) है. जाम्बिया ने अपने कुल सूचकांक स्कोर में विश्व स्तर पर सबसे बड़ा सुधार दिखाया है. वहीं इंडोनेशिया ने अपने कुल सूचकांक स्कोर में विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा सुधार दिखाया है. सूचकांक में शामिल 167 देशों में से 21 को पूर्ण लोकतंत्र की श्रेणी में और 53 को त्रुटिपूर्ण लोकतंत्र की श्रेणी में रखा गया है. वहीं 34 को हाइब्रिड लोकतंत्र श्रेणी में रखा गया है और 69 को सत्तावादी (ऑथॉरिटारियन) सरकारों के तहत रखा गया है.

5. प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए 'जीवा' कार्यक्रम की शुरूवात

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने वाटरशेड और वाडी कार्यक्रमों के तहत प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए 'जीवा' कार्यक्रम शुरू किया है. इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्राकृतिक खेती को व्यावसायिक खेती के रूप में बढ़ावा देना है. बता दें कि 'जीवा' नाबार्ड के वाटरशेड कार्यक्रम के तहत कई परियोजनाओं का सम्मिलन है. इस कार्यक्रम को पायलट आधार पर पांच कृषि पारिस्थितिक क्षेत्रों में लागू किया जाएगा. नाबार्ड इस कार्यक्रम के तहत प्रति हेक्टेयर 50,000 रुपये का निवेश करेगा.

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक **(NABARD)** एक नजर में :-

- इसकी स्थापना 1982 में हुई थी.
- यह भारत में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी बैंकों के नियमन के लिए एक शीर्ष बैंक है.
- यह वित्त मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में काम करता है.

6. भारतीय कंपनियों में बोर्ड की सीटों में महिलाओं की हिस्सेदारी मात्र 17.1%

डेलॉयट इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय कंपनियों में बोर्ड की सीटों में महिलाओं की हिस्सेदारी 2018 के 13.8 फीसदी से बढ़कर 2021 में 17.1 फीसदी हो गई हैं. रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि भारतीय कंपनियों में 4.7% मुख्य कार्यकारी अधिकारी और 3.9% मुख्य वित्तीय अधिकारी महिलाएं हैं. वहीं 2018 की तुलना में 2021 में महिला चेयरपर्सन की संख्या में कमी आई है. वैश्विक आंकड़े बताते हैं कि विश्व स्तर पर, बोर्ड की सीटों में महिलाओं कि हिस्सेदारी 19.7% है. जो 2018 के आंकड़ों से 2.8% की वृद्धि को दर्शाते हैं. रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अगर आंकड़ों में यही वृद्धि जारी रही तो 2045 तक बोर्ड की सीटें पर महिलाओं की हिस्सेदारी 50% तक पहुंच जाएंगी. रिपोर्ट में बताया गया है कि कॉरपोरेट्स में प्रमुख पदों पर महिलाओं के प्रतिनिधित्व को प्रोत्साहित करने के लिए भारतीय नियामकों ने एक समग्र ढांचा तैयार किया है. भारत में महिला निदेशकों का औसत कार्यकाल भी 2021 में 5.0 साल से बढ़कर 5.1 साल हो गया है. बता दें कि बोर्डरूम रिपोर्ट के इस संस्करण में 72 देशों से डेटा एकत्र किया गया है.

7. भारत ने चीनी के 54 ऐप्स पर प्रतिबंध लगाया

भारत ने सुरक्षा कारणों से चीनी मूल के 54 ऐप्स पर प्रतिबंध लगा दिया है. प्रतिबंधित ऐप्स में सी लिमिटेड का मार्की गेम फ्री फायर और टेनसेंट, अलीबाबा और नेटईज जैसी तकनीकी फर्मों से संबंधित अन्य ऐप शामिल हैं. बता दें कि इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रतिबंधित ऐप्स, 2020 में भारत द्वारा प्रतिबंधित ऐप्स के री-ब्रांडेड संस्करण हैं. फ्री फायर की तुलना पबजी से की जाती है जिसे पहले ही प्रतिबंधित किया गया था.

कब और कितने चीनी ऐप पर लगाई गयी पाबंदियां :-

- पबजी मोबाइल, टिकटॉक, वीबो, वीचैट, अलीएक्सप्रेस समेत चीनी ऐप्स को भारत ने पिछले साल बैन कर दिया था.
- जून 2020 में, टिकटॉक, यूसी ब्राउजर और कैम स्कैनर सहित 59 चीनी ऐप को आईटी अधिनियम की धारा 69ए के तहत ब्लॉक कर दिया गया था.
- नवंबर 2020 में आईटी एक्ट की धारा 69ए के तहत एक आदेश के जरिए 43 मोबाइल ऐप पर प्रतिबंध लगाया गया था.

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम, 2000 की धारा 69ए किसी भी कंप्यूटर संसाधन के माध्यम से किसी भी जानकारी की सार्व. जनिक पहुंच को अवरुद्ध करने के लिए निर्देश जारी करने के लिए सरकार को शक्ति प्रदान करती है. यह धारा सरकार को वेबसाइटों को ब्लॉक करने की अनुमति देती है.

8. कनाडा में सरकार विरोधी प्रदर्शनों को दबाने के लिए आपातकाल लगाया गया

कनाडा के प्रधान मंत्री ट्रूडो ने सरकार विरोधी प्रदर्शन से निपटने के लिए पिछले 50 वर्षों में पहली बार आपातकालीन अधिनियम लागू किया है. बता दें कि कनाडा सरकार ने ट्रक ड्राइवरों के लिए टीका लगवाना अनिवार्य कर दिया है. जिसका कनाडा के लोग विरोध कर रहे हैं. बता दें कि विरोध ने कनाडा की अर्थव्यवस्था और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ उसके संबंधों को प्रभावित किया है. कनाडा में आपातकालीन अधिनियम 1988 में पारित किया गया था और इसका उपयोग कनाडा की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किया जा सकता है. अधिनियम में चार स्थितियाँ शामिल हैं जिनके आधार पर आपातकाल लगाया जा सकता है. ये आधार हैं लोक कल्याण आपातकाल, सार्वजनिक व्यवस्था आपातकाल, युद्ध आपातकाल और अंतर्राष्ट्रीय आपातकाल. आपातकाल के प्रावधानों के अनुसार सरकार विरोध प्रदर्शन से जुड़े किसी भी व्यक्ति के बैंक खातों को फ्रीज कर सकती है.

9. सरकार ने डीएनटी के आर्थिक सशक्तिकरण की योजना सीड शुरू की

केन्द्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने विमुक्त जनजातियों (डीएनटी) के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए 'सीड' योजना प्रारम्भ की है. इस योजना के तहत डीएन. टी/एनटी/एसएनटी समुदायों के सदस्यों को सामुदायिक स्तर पर अच्छी गुणवत्ता वाली को. चिंग, स्वास्थ्य बीमा, आजीविका पहल और मकान निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी. डीएनटी छात्रों के लिए नि:शुल्क कोचिंग उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने में मदद करेगा. इस योजना के चार घटक होंगे और 5 वर्षों में लगभग 200 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे. यह योजना सामाजिक न्याय एवं अधि कारिता विभाग द्वारा विकसित पोर्टल के माध्यम से क्रियान्वित की जाएगी. बता दें इससे पहले सरकार ने 2014 में विमुक्त, घुमंतू और अर्ध घुमंतू जनजातियों के लिए एक राष्ट्रीय आयोग का गठन किया था और आगे सरकार ने इस वर्ग के लिए 2019 में विकास और कल्याण बोर्ड का गठन भी किया था. आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 1,500 खानाबदोश और अर्ध-घुमंतू जनजातियाँ और 198 विमुक्त जनजातियाँ हैं.

10. ईएसपीएन क्रिकइन्फो अवाड्र्स का 'टेस्ट बैटिंग अवार्ड' ऋषभ पंत को

भारतीय क्रिकेटर ऋषभ पंत को ईएसपीएन क्रिकइन्फो अवाड्र्स में श्टेस्ट बैटिंग" पुरस्कार प्रदान किया गया है. उन्हें यह पुरस्कार बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के दौरान गाबा में नाबाद 89 रनों की पारी खेलने के लिए दिया गया है. वहीं न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन कैप्टन ऑफ द ईयर का पुरस्कार दिया गया है. जबकि टेस्ट बॉलिंग पुरस्कार काइल जैमीसन को और इंग्लैंड के तेज गेंदबाज ओली रॉबिन्सन को 'डेब्युटेंट ऑफ द ईयर' का पुरस्कार मिला. शाहीन अफरीदी ने टी-20 विश्व कप में भारत के खिलाफ अपने प्रदर्शन के लिए 'टी-20 गेंदबाज' का पुरस्कार जीता है.इसी क्रम में फखर जमान को वांडरर्स में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उनके प्रदर्शन के लिए 'वनडे बल्लेबाजी' पुरस्कार मिला.

11. पीएम मोदी ने टेरी के विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन का उद्घाटन किया

TERI (ऊर्जा और संसाधन संस्थान) द्वारा आयोजित विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन **(WSDS)** का उद्घाटन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी 16 फरवरी को किया. शिखर सम्मेलन की थीम 'टूवड्र्स ए रेजीलियंट प्लैनेट: एनश्योरिंग ए सस्टेनेबल एंड इक्वीटेबल फ्यूचर' (परिस्थिति अनुकूल ग्रह की ओर: सतत और समतावादी भविष्य को सुनिश्चित करना) है. यह सम्मेलन 16-18 फरवरी तक आयोजित हुआ. इस सम्मेलन में विशेषज्ञों द्वारा जलवायु परिवर्तन, सतत उत्पादन, ऊर्जा संक्रमण, संसाधन सुरक्षा आदि सहित कई मुद्दों पर चर्चा की जाएगी. तीन दिवसीय इस शिखर सम्मेलन में डोमिनिकन गणराज्य के राष्ट्रपति और गुयाना के राष्ट्रपति भाग लेंगे. इस शिखर सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य सरकारों, व्यापार जगत के नेताओं, शिक्षाविदों, जलवायु वैज्ञानिकों को जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक साझा मंच पर लाना है.

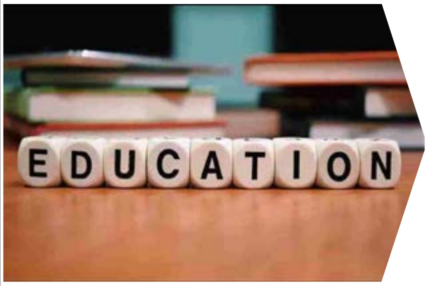

12. केंद्र सरकार द्वारा नव भारत साक्षरता कार्यक्रम को मंजूरी दी गई

वित्तीय वर्ष 2022 से 2027 की अवधि के लिए एक नई योजना "न्यू इंडिया साक्षरता कार्यक्रम (नव भारत साक्षरता कार्यक्रम)" को सरकार द्वारा अनुमोदित किया गया है. इस योजना में वयस्क शिक्षा के सभी पहलू शामिल होंगे.बता दें कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन सीखने की सिफारिश की गई है. इस योजना का उद्देश्य न केवल आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि 21वीं सदी के नागरिक के लिए आवश्यक अन्य घटकों को भी शामिल करना है. देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के गैर-साक्षर इस योजना के दायरे में आएंगे. योजना ऑनलाइन मोड के माध्यम से स्वयंसेवकों के माध्यम से लागू की जाएगी. "नव भारत साक्षरता कार्यक्रम" का अनुमानित कुल परिव्यय 1037.90 करोड़ रुपये है.

13. एशिया के सबसे बड़े बायो-सीएनजी प्लांट का उद्घाटन

19 फरवरी, 2022 को इंदौर में एशिया के सबसे बड़े बायो-सीएनजी का प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा उद्घाटन किया गया. इस प्लांट को पूरी तरह शत-प्रतिशत गीले कचरे से संचालित किया जाएगा। इससे रोजाना 18,000 किलोग्राम गैस के उत्पादन होने का अनुमान है. प्लांट की कुल क्षमता 550 मीट्रिक टन है जो 96 प्रतिशत शुद्ध मीथेन गैस के साथ सीएनजी का उत्पादन करेगा. अनुमान है कि इससे इंदौर नगर निगम को सालाना 2.5 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त होगा. बात इसके अन्य फायदों की करें तो यह कैलोरी मान में सुधार करेगा; बायो-सीएनजी की प्रभावशीलता को बढ़ाएगा; और यह घनी आबादी वाले शहरों की वायु गुणवत्ता को शुद्ध करने में मदद करेगा। इस तरह यह सालाना 1,30,000 टन कार्बन डाइऑक्साइड को कम करने में मदद करेगा। इंदौर नगर निगम के अनुमान के मुताबिक इस प्लांट से उत्पादित बायो-सीएनजी से आने वाले कुछ सालों में इंदौर में करीब 400 बसें चलायी जा सकेंगी.

समसामयिकी घटनाएं एक नजर में

- 72वें बर्लिनेल यूरोपियन फिल्म मार्केट 2022 में इंडिया पवेलियन का उद्घाटन किया गया।

- 'कोआला' को ऑस्ट्रेलिया ने लुप्तप्राय प्रजातियों के रूप में सूचीबद्ध किया.

- "हाउ टू प्रिवेंट द नेक्स्ट पैनडेमिक" (बिल गेट्स की नई किताब) का विमोचन 3 मई को होगा.

- क्वाड विदेश मंत्रियों की चौथी बैठक मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में संपन्न. क्वाड की स्थापना 2007 में हुई थी. वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका इसके सदस्य हैं.

- फिक्की कैसकेड ने तस्करी रोधी दिवस लॉन्च किया. इस सन्दर्भ में बताया गया कि हर साल 11 फरवरी को तस्करी रोधी दिवस मनाया जाएगा. इसे कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच समन्वय और सहयोग बढ़ाने के लिए लॉन्च किया गया है.

- पॉल-हेनरी सांडोगो दामिबा को बुर्किना फासो का राष्ट्रपति घोषित किया गया.

- इजरायल नागरिक हवाई क्षेत्र में ड्रोन की अनुमति देने वाला पहला देश बना.

- विनीत जोशी को सीबीएसई के नए अध्यक्ष होंगे.

- ष्होप एक्सप्रेसष की शुरुवात महाराष्ट्र में कैंसर से बचाव के लिए किया गया.

- "इल्कर आयसी" एयर इंडिया के नए एमडी और सीईओ नियुक्त किए गए.

- मनोज तिवारी बिहार के खादी और अन्य हस्तशिल्प के ब्रांड एंबेसडर बने.

- केंद्रीय बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्री ने मुंबई में वाटर टैक्सी सेवा का अनावरण किया.

- वर्ष 2021-22 में खाद्यान्न उत्पादन 316 मिलियन टन रहने का अनुमान.

- लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद ने विकलांग व्यक्तियों के लिए एक नई योजना 'कुनस्योम्स' शुरू की है.

- स्थानीय ऋण बाजार में निवेश करने के लिए एफपीआई की सीमा 2.5 लाख करोड़ रुपये की गई.

- वेदांता ने भारत में सेमीकंडक्टर (अर्धचालक) के निर्माण के लिए फॉक्सकॉन के साथ एक समझौता किया.

- भारत ओलंपिक 2023 सत्र की मेजबानी करेगा, जो मुंबई में आयोजित होगा.

- पुष्पा : द राइज फिल्म को दादा साहब फाल्के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में फिल्म ऑफ द ईयर का पुरस्कार मिला.

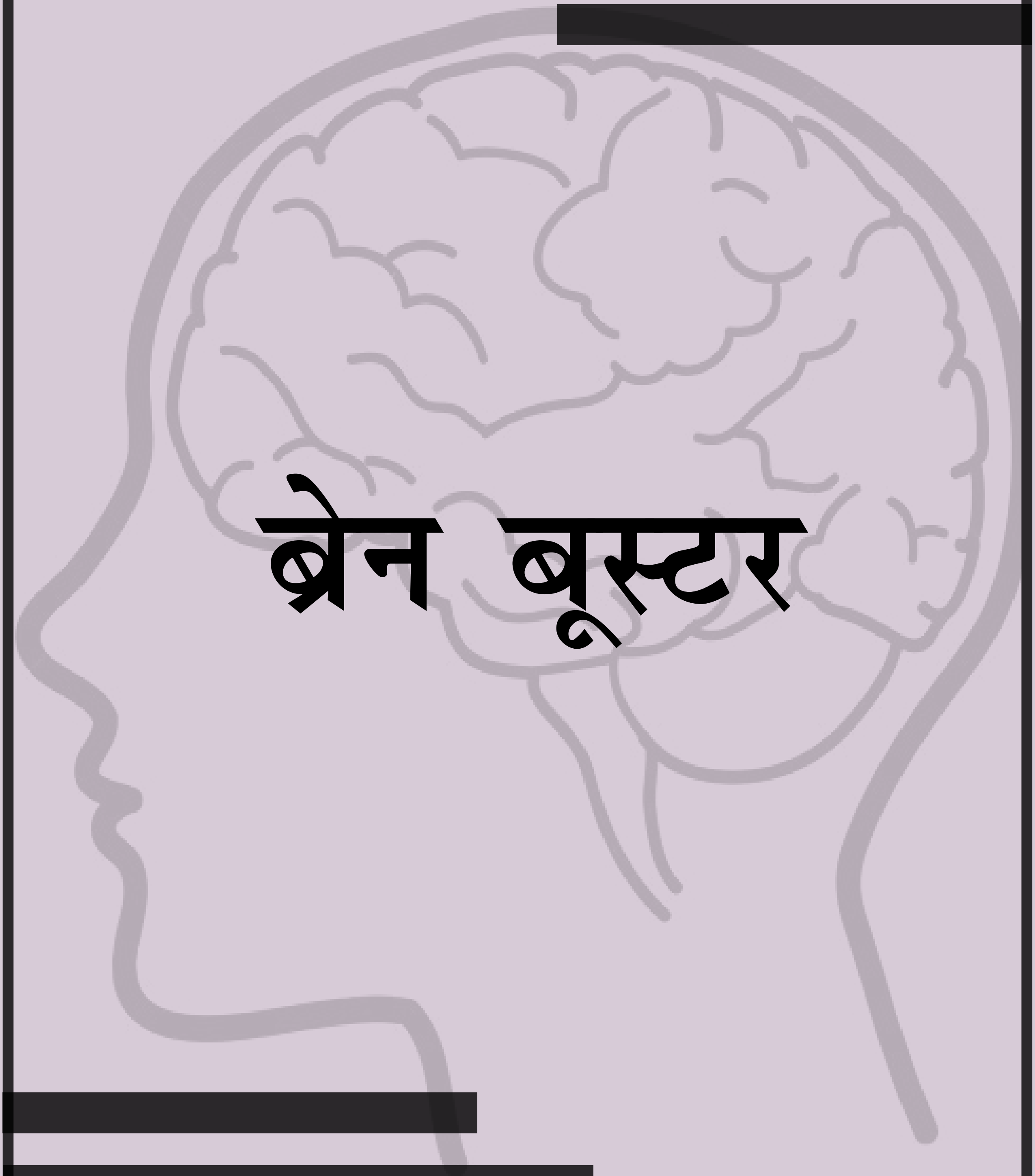

ब्रेन बूस्टर

चुनाव अभियान

1. खबरों में क्यों:
उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा में चुनाव हो रहे हैं. चुनावों में आजकल बड़े पैमाने पर धन का उपयोग किया जाता है. अलग-अलग अनुमानों के अनुसार, एक उम्मीदवार निर्वाचन क्षेत्र में करोड़ों में खर्च करता है.

2. चुनावों की अखंडता
- चुनाव लोकतांत्रिक वैधता का आधार हैं.
- चुनाव नागरिकों को प्रतियोगियों को वोट देकर अपने नेताओं को जवाबदेह बनाने का एक माध्यम हैं.
- एक विश्वसनीय चुनाव वह होता है जिसमें समावेशिता, पारदर्शिता, जवाबदेही और प्रति. स्पर्धात्मकता की विशेषता होती है.

3. विश्वसनीय चुनाव
विश्वसनीय चुनावों में समावेशिता, पारदर्शिता, जवाबदेही और प्रतिस्पर्धात्मकता की विशेषता होती है.
- समावेशी चुनाव सभी पात्र नागरिकों को अपने प्रतिनिधियों के चयन में और सरकार के चुनाव के लिए उम्मीदवारों के रूप में मतदाताओं के रूप में भाग लेने के समान अवसर प्रदान करते हैं.
- चुनाव पारदर्शी होते हैं जब प्रत्येक चरण जांच के लिए खुला होता है, और हितधारक स्वतंत्र रूप से सत्यापित कर सकते हैं कि प्रक्रिया ईमानदारी से और सटीक रूप से आयोजित की गई है या नहीं.
- चुनावों में जवाबदेही का तात्पर्य सरकार, चुनाव प्रबंधन निकायों (ईएमबी), राजनीतिक दलों, उम्मीदवारों और सुरक्षा बलों सहित अन्य चुनावी हितधारकों के आचरण के संबंध में नागरिकों के अधिकारों से है.
- चुनाव प्रतिस्पर्धी होते हैं जब नागरिकों के पास सरकारी कार्यालयों के लिए चुने जाने के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए उचित और न्यायसंगत अवसर होते हैं.

4. चुनाव एक प्रक्रिया है
- चुनाव एक प्रक्रिया है, घटना नहीं.
- प्रत्येक चुनाव में कई तत्व शामिल होते हैं और चुनाव पूर्व, चुनाव के दिन और चुनाव के बाद की अवधि में कई संस्थान शामिल होते हैं.

5. ओपन इलेक्शन डेटा सिद्धांत
जब चुनाव डेटा ष्खुला" (ओपन) होता है, तो यह निम्न कर सकता है:
- व्यक्तिगत चुनाव प्रक्रियाओं की पारदर्शिता बढ़ाना.
- चुनाव प्रबंधन निकाय की प्रभावशीलता में सुधार करना.
- चुनाव में मतदाताओं की भागीदारी बढ़ाना
- नागरिक जुड़ाव बढ़ाना.
- परंपरागत रूप से हाशिए पर पड़े समूहों की समावेशिता में सुधार करना.
- तनाव कम करना.
- नई अंतर्दृष्टि उत्पन्न करना

6. चुनावो में प्रचार हेतु वित्त की व्यवस्था
- प्रतियोगी चुनावों के लिए यह आवश्यक है कि चुनावी प्रतियोगियों के पास अपने चुनावो में प्रचार हेतु और नियमित कार्यों के वित्तपोषण के लिए एक साधन हो.
- चुनावो में प्रचार हेतु वित्त, व्यापक राजनी. तिक वित्त का एक तत्व है जो उम्मीदवारों, राजनीतिक दलों द्वारा चुनावो , जनमत संग्रह, पहल, पार्टी गतिविधियों और पार्टी संगठनों की नीतियों को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए और खर्च किए गए सभी धन को संदर्भित करता है.

7. प्रचार व्यय का महत्व
- प्रचार व्यय में आम तौर पर चुनावी उद्देश्यों के लिए किसी उम्मीदवार या पार्टी द्वारा मौ. द्रिक या वस्तु के रूप में किया गया कोई भी खर्च शामिल होता है.
- प्रतियोगियों के बीच अधिक सूचित विकल्प का चुनाव करने के लिए नागरिक, प्रचार व्यय की जानकारी का उपयोग कर सकते हैं.

8. चुनाव अभियान
- चुनाव अभियान वह माध्यम है जिसके द्वारा उम्मीदवार और राजनीतिक दल मतदान दिन से पहले की अवधि में मतदाताओं को मुद्दों पर अपने विचार और स्थिति तैयार करते हैं और प्रस्तुत करते हैं.
- प्रतियोगी पारंपरिक और नए मीडिया, सार्व. जनिक कार्यक्रमों, लिखित सामग्री या अन्य माध्यमों सहित मतदाताओं तक पहुंचने और अपने संदेश देने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं.

9. चुनाव प्रचार का महत्व
- लोकतांत्रिक चुनावों के लिए एक सूचित और साथ ही एक स्वतंत्र वोट, चुनावी प्रतियो. गियों द्वारा जीत हासिल करने के लिए एक उचित अवसर की आवश्यकता होती है.
- उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए चुनाव अभियान महत्वपूर्ण हैं.
- चुनाव जो वास्तव में प्रतिस्पर्धी हैं, प्रतियोगि. यों को नागरिकों को अपनी स्थिति बताने और वोट के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए समान अवसर प्रदान करते हैं.

10. एक नागरिक और मतदाता के कर्तव्य
- सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण है मतदान करना, और उतना ही महत्वपूर्ण है, सोच-समझकर चुनाव करना.
- इसका अर्थ है उम्मीदवार के बारे में सभी प्रासंगिक जानकारी, फंडिंग, खर्च आदि एकत्र करना.
- राजनीतिक दलों, चुनाव आयोग और कुछ गैर-पक्षपाती गैर सरकारी संगठनों की आधिकारिक वेबसाइटों पर जानकारी होती है.
- अगर इस तरह की जानकारी दोस्तों के साथ व्यापक रूप से साझा की जाती है तो इससे भी मदद मिलती है.

- बहुत अधिक खर्च करने वाले किसी भी उम्मीदवार या पार्टी को वोट देने पर बहुत सावधानी से विचार किया जाना चाहिए.
- यह मतदाता के अपने हित के खिलाफ जा सकता है.

1. खबरों में क्यों:

एलसीए तेजस ने सिंगापुर एयरशो 2022 में चांगी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एरोबेटिक प्रदर्शन किया. एलसीए तेजस, जिसने दुबई एयर शो में दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया था, ने सिंगापुर में शानदार प्रदर्शन किया और भारतीय वायु सेना ने ट्वीट कर इसे 'ए डायमंड इन द स्काई' कहा.

2. एलसीए तेजस के बारे में

- एलसीए तेजस एकल इंजन वाला, हल्का वजन, अत्यधिक फुर्तीला, बहु-भूमिका वाला सुपरसोनिक लड़ाकू विमान है.
- यह 4.5 पीढ़ी का मल्टीरोल लड़ाकू विमान है.
- इसमें संबद्ध उन्नत उड़ान नियंत्रण के साथ क्वाड्रुप्लेक्स डिजिटल फ्लाई-बाय-वायर फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम (FCS) है.
- डेल्टा विंग वाले विमान को 'एयर कॉम्बैट' और 'ऑफेंसिव एयर सपोर्ट' के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें 'टोही' और 'एंटी-शिप' इसकी द्वितीयक भूमिकाएँ हैं.
- एयरफ्रेम में उन्नत कंपोजिट का व्यापक उपयोग वजन अनुपात, लंबी फटीग लाइफ और रडार पर कम दिखने की क्षमता के लिए एक उच्च शक्ति देता है.
- वैमानिकी विकास एजेंसी एलसीए के विकास के लिए नामित परियोजना प्रबंधक है.

3. शुरुआत

- हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए) तेजस की संकल्पना वर्ष 1984 में की गई थी.
- एलसीए प्रौद्योगिकी प्रदर्शक की पहली उड़ान जनवरी 2001 में थी.
- मई 2003 में तत्कालीन प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा स्वदेशी जेट को 'तेजस' नाम दिया गया.
- बार-बार होने वाली देरी और लागत अधिक होने के बावजूद प्लेटफॉर्म की परिपक्वता के साथ-साथ समग्र विमान विकास कार्यक्रम दोनों के मामले में इसने एक लंबा सफर तय किया है.

एलसीए तेजस

4. एलसीए कार्यक्रम की स्थिति

- पहली उड़ान के दो दशक बाद, फरवरी 2021 में, रक्षा मंत्रालय ने **IAF** को 83 एलसीए एमके1ए की आपूर्ति करने के लिए **HAL** के साथ 48,000 करोड़ के सौदे पर हस्ताक्षर किए.
- एमके1ए में नया इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम, एडवांस्ड इलेक्ट्रॉनिकली स्कैनिंग एरे (एईएसए) रडार, बियॉन्ड विजुअल रेंज (बीवीआर) मिसाइल और सॉफ्टवेयर डिफा. इंड रेडियो (एसडीआर) सहित नेटवर्क वा. रफेयर सिस्टम होगा.
- एलसीए ने दिसंबर 2013 में आरंभिक संचालन मंजूरी (आईओसी) और फरवरी 2019 में अंतिम संचालन मंजूरी (एफओसी) हासिल की.
- **IAF** में पहला एलसीए स्क्वाड्रन नंबर 45 "फ्लाइंग डैगर्स" जुलाई 2016 में बनाया गया था.
- दूसरा एलसीए स्क्वाड्रन नंबर 18 'फ्लाइंग बुलेट्स' मई 2020 में चालू किया गया था.

5. एलसीए कार्यक्रम की लागत

- सरकार ने दो प्रौद्योगिकी प्रदर्शकों (टीडी) को डिजाइन और विकसित करने के लिए पूर्ण पैमाने पर इंजीनियरिंग विकास (एफएस. ईडी)-चरण-**I** कार्यक्रम के लिए मूल रूप से 2,188 करोड़ और एफएसईडी-चरण-**II** कार्यक्रम के लिए 5,777.56 करोड़ मंजूर किए थे.
- सरकार ने मार्च 2020 में संसद को सूचित किया की, समग्र परियोजना लागत पर स्वदेशी एलसीए और कावेरी जेट इंजन (अब स्थगित) विकास कार्यक्रमों पर अब तक कुल 11,096 करोड़ खर्च किए गए हैं. कुल राशि में से 9,063.96 करोड़ एलसीए पर और 2,032 करोड़ कावेरी इंजन पर खर्च किए गए.

6. भविष्य

- रक्षा मंत्रालय के अनुसार, अनुबंध के अनुसार, एचएएल को 2024 में **IAF** को पहले तीन **MK1A** विमान और उसके बाद अगले पांच वर्षों के लिए प्रति वर्ष 16 विमान देने हैं.
- उत्पादन में तेजी लाने के लिए, एचएएल ने पहले से ही दो अतिरिक्त असेंबली लाइनें स्थापित की हैं जो चालू हैं. एचएएल के अनुसार, कुछ बैक एंड गतिविधियां भी इस समय समाप्त की जा रही हैं.
- एलसीए में स्वदेशी सामग्री वर्तमान में लग. भग 52% है और एचएएल ने कहा कि वह इसे 65% तक बढ़ाने के प्रयास कर रहा है.
- एलसीए एमके2, एक अधिक सक्षम इंजन वाला एक बड़ा विमान साल के अंत तक या 2023 की शुरुआत में शुरू होने की उम्मीद है, जिसके बाद इसकी पहली उड़ान के लिए एक साल लगेगा.
- एक महत्वाकांक्षी पांचवीं पीढ़ी के लड़ा. कू विमान उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (एएमसीए), और नौसेना के विमान वाहक से संचालित करने के लिए एक नया ट्विन इंजन डेक आधारित लड़ाकू (टीडीबीएफ) रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) और वैमानिकी विकास एजेंसी (एडीए) द्वारा विकसित किया जा रहा है.
- टीडीबीएफ को नौसेना एलसीए कार्यक्रम से सीखे गए सबक के आधार पर डिजाइन किया जा रहा है और पहली उड़ान की योजना 2026 में है.

Specification	Measurement
Length	13.2 m
Span	8.2 m
Height	4.4 m
Max Take of Weight	13.5 t
Payload	5.3 t
Speed	1.6 M
Radius of Action	300 Km
Take off distance	1700 m
Landing Distance	1300 m
Service ceiling	16 Km

आर्थिक सर्वेक्षण

1. वित्तीय स्थिति

- सर्वेक्षण में कहा गया है कि कर राजस्व में वृद्धि और सरकारी नीतियों ने अतिरिक्त राजकोषीय नीतिगत हस्तक्षेप करने के लिए जगह बनाई है.
- पूंजीगत व्यय पर ध्यान जारी रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए, इसने संकेत दिया है कि सरकार चालू वर्ष के लिए सकल घरेलू उत्पाद के 6.8% के राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है.
- अप्रैल-नवंबर 2021 के दौरान केंद्र की रा. जस्व प्राप्तियां 2021-22 के बजट अनुमानों में 9.6% की अनुमानित वृद्धि के मुकाबले 67.2% **(YoY)** बढ़ी हैं.
- अनुमानित कर संग्रह अगले वर्ष विकास को समर्थन देने के लिए सहारा प्रदान करता है.

2. वैक्सीन अर्थशास्त्र

- सर्वेक्षण में कहा गया है की टीकाकरण की प्रगति को न केवल स्वास्थ्य प्रतिक्रिया संकेतक के रूप में देखा जाना चाहिए, बल्कि बार-बार महामारी की लहरों के कारण होने वाले आर्थिक व्यवधानों के खिलाफ एक बफर के रूप में भी देखा जाना चाहिए.
- यह आंशिक रूप से इस धारणा पर आध ारित है की टीकाकरण में तेजी से कव. रेज और आर्थिक गतिविधियों के तेजी से सामान्यीकरण, और संपर्क-गहन क्षेत्रों को फिर से खोलने में टीकाकरण के महत्व के साथ निजी खपत में मजबूत सुधार देखने की ओर अग्रसर है.

3. मुद्रास्फीति दबाव

- सर्वेक्षण मुद्रास्फीति को एक मुद्दे के रूप में चिह्नित करता है.
- यह नोट किया गया है कि 2021-22 (अप्रैल-दिसंबर) में भारत की सीपीआई मुद्रास्फीति 5.2% लक्षित सहिष्णुता बैंड के भीतर है, जबकि डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति दोहरे अंकों में चल रही है.
- यह आंशिक रूप से आधार प्रभावों के कारण है; हालाँकि, भारत को आयातित मुद्रास्फीति से सावधान रहने की आवश्यकता है, विशेष रूप से उच्च वैश्विक ऊर्जा कीमतों से.

4. वैश्विक अनिश्चितता

- विदेशी मुद्रा भंडार में बड़ी वृद्धि , (31 दिसंबर, 2021 तक 633.6 बिलियन डॉलर) भारत के आयातों को लचीला बनाता है. सर्वेक्षण बताता है कि वैश्विक व्यापार के लिए जोखिमों का समग्र संतुलन भारत की ओर झुका हुआ है.
- सबसे बड़ा नकारात्मक जोखिम महामारी से आता है.
- लंबे समय तक बंदरगाह विलंब, उच्च माल ढुलाई दर, और शिपिंग कंटेनरों की कमी और अर्धचालक जैसे इनपुट. मांग में सुधार के कारण आपूर्ति पक्ष में व्यवधान, वैश्विक व्यापार के लिए महत्वपूर्ण जोखिम पैदा करते हैं.

5. ऊर्जा जोखिम

- रिपोर्ट में "ऊर्जा के स्रोतों के विविध मिश्रण का आह्वान किया गया है, जिनमें से जीवाश्म ईंधन एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं", लेकिन साथ ही साथ मांग पर ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सौर पीवी और पवन खेतों से रुक-रुक कर बिजली उत्पादन के लिए भंडारण के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहते हैं.

6. आपूर्ति पक्ष सुधार

- इसमें आपूर्ति पक्ष की रणनीति विकसित करने पर जोर देने की जरूरत है.
- यह मुख्य रूप से उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तन, तकनीकी-तार्किक विकास, भू-रा. जनीति, जलवायु परिवर्तन, और उनके संभा. वित अप्रत्याशित अंत:क्रियाओं जैसे कारकों से उत्पन्न होने वाले, कोविड के बाद की दुनिया की दीर्घकालिक अप्रत्याशिता से निपटेगा.

7. औद्योगिक विकास

- सर्वेक्षण में कहा गया है की महामारी की वजह से प्रभावित हुए औद्योगिक क्षेत्र के 2021-22 में 11.8% की वृद्धि दर्ज करने की संभावना है.
- उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआ. ई) जैसे उपायों/योजनाओं के अलावा विभिन्न संरचनात्मक, वित्तीय और ढांचागत सुधार लाने के सरकार के लगातार प्रयासों के कारण विकास की गति में वृद्धि जारी रहने की संभावना है.

8. सार्वजनिक खर्च

- सर्वेक्षण के अनुसार चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में मंदी के बाद, केंद्र द्वारा पूंजीगत व्यय अक्टूबर-दिसंबर के दौरान पुनर्जीवित किया गया.
- पहली छमाही में मंदी मुख्य रूप से को. विड-19 के प्रतिबंधों के कारण थी.
- अप्रैल-नवंबर 2021 के दौरान, पूंजीगत व्यय में 13.5% (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई, जिसमें सड़कों और राजमार्गों, रेलवे, और आवास और शहरी मामलों जैसे बुनियादी ढांचे-गहन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया.

9. भविष्य

- वृहद-आर्थिक स्थिरता संकेतकों के आधार पर, सर्वेक्षण का मानना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था 2022-23 की चुनौतियों का सामना करने के लिए "अच्छी स्थिति" में है.
- सरकार की रणनीति कमजोर वर्गों के लिए सुरक्षा चक्र का उपयोग करते समय "कठोर प्रतिक्रिया" के लिए पूर्व-प्रतिबद्ध नहीं है, और सूचना के बायेसियन-अद्यतन के आधार पर पुनरावृत्त रूप से प्रतिक्रिया करना है.
- सर्वेक्षण "अत्यधिक अनिश्चितता" के वातावरण में 80 उच्च आवृत्ति संकेतकों के साथ नीति निर्माण के लिए चुस्त दृष्टिकोण के उपयोग का प्रस्ताव करता है.

ईवीएम

1. खबरों में क्यों:

भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा में चुनाव करा रहा है. मतदाताओं ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के जरिए अपना वोट डाला.

2. ईवीएम के बारे में

- इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) संसद, विधायिका और स्थानीय निकायों जैसे पंचायतों और नगर पालिकाओं के चुनाव कराने के उद्देश्य से एक पोर्टेबल उपकरण है.
- ईवीएम एक माइक्रोकंट्रोलर-आधारित उपकरण है जिसे चुनाव प्रक्रिया को आधुनिक बनाने के लिए डिजाइन किया गया है.
- अमान्य वोटों की कोई गुंजाइश नहीं है और वोटिंग डेटा की कुल गोपनीयता बनाए रखी जाती है.
- यह त्वरित और सटीक गिनती की सुविधा भी प्रदान करता है.
- ईवीएम में दर्ज मतदान डेटा को वर्षों तक रखा जा सकता है और यदि आवश्यक हो तो निकाला जा सकता है.
- ईवीएम को एक पद और एक मत के लिए डिजाइन किया गया है.
- 1999 के गोवा राज्य विधानसभा चुनाव में पहली बार ईवीएम का इस्तेमाल किया गया था.

3. ईवीएम की पृष्ठभूमि

- मतपत्रों के उपयोग से जुड़ी कुछ समस्याओं को दूर करने और प्रौद्योगिकी के विकास का लाभ उठाने की दृष्टि से, आयोग ने दिसंबर, 1977 में ईवीएम के विचार को प्रस्तुत किया.
- संसद द्वारा दिसंबर, 1988 में कानून में संशोधन किया गया था और एक नई धारा 61ए को लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 में शामिल किया गया था जो आयोग को वोटिंग मशीनों का उपयोग करने का अधिकार देता है.
- संशोधित प्रावधान 15 मार्च 1989 से लागू हुआ.
- केंद्र सरकार ने कई मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और राज्य दलों के प्रतिनिधियों को मिलकर जनवरी, 1990 में चुनाव सुधार समिति की नियुक्ति की.

4. ईवीएम की उपयोग विधि

- एक मतदाता को अपनी पसंद के उम्मीदवार के सामने बटन दबाने की जरूरत होती है और फिर उस उम्मीदवार के चुनाव चिन्ह और नाम के सामने एक लाल बत्ती चमकती है जिसे वोट दिया गया है. साथ ही, एक लंबी बीप सुनी जा सकती है, जो किसी विशेष मत के मतदान की पुष्टि करती है.

5. ईवीएम का वर्किंग मॉड्यूल

- एक ईवीएम में एक कंट्रोल यूनिट, बैलेट यूनिट और एक वीवीपैट होता है जो एक केबल द्वारा जुड़ा होता है.
- कंट्रोल यूनिट एक मतदान अधिकारी के पास होती है जबकि बैलेट यूनिट को वोट डालने के लिए एक कक्ष में रखा जाता है.
- ईवीएम का उपयोग उन क्षेत्रों में भी किया जा सकता है जहां बिजली नहीं है, क्योंकि उन्हें बैटरी पर संचालित किया जा सकता है.

6. चुनाव आयोग द्वारा उपयोग की जाने वाली ईवीएम की तकनीकी सुरक्षा

- किसी भी प्रकार की छेड़छाड़/हेरफेर को रोकने के लिए मशीन को इलेक्ट्रॉनिक रूप से संरक्षित किया जाता है.
- इन मशीनों में प्रयुक्त प्रोग्राम (सॉफ्टवेयर) को वन टाइम प्रोग्रामेबल (ओटीपी)/मास्क्ड चिप में डाला जाता है ताकि इसे बदला या छेड़छाड़ न किया जा सके.
- इसके अलावा इन मशीनों को या तो तार या वायरलेस द्वारा किसी अन्य मशीन या सिस्टम से नेटवर्क नहीं किया जाता है. इसलिए, इसके डेटा छेड़छाड़ की कोई संभावना नहीं है.
- ईवीएम का सॉफ्टवेयर बीईएल और ईसीआईएल में इंजीनियरों के चयनित समूह द्वारा इन-हाउस विकसित किया गया है.

7. ईसीआई-ईवीएम की विशिष्टता

- ईसीआई ईवीएम स्टैंड अलोन मशीन हैं.
- अन्य देशों में उपयोग की जाने वाली अधिकांश प्रणालियाँ इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ कंप्यूटर आधारित हैं. इसलिए, ये हैकिंग की चपेट में आ सकते हैं.
- ईसीआई-ईवीएम चिप में सॉफ्टवेयर वन टाइम प्रोग्रामेबल (ओटीपी) है और निर्माण के समय चिप में दिया जाता है.

8. वीवीपीएटी

- वोटर वेरिफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपीएटी) इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों से जुड़ी एक स्वतंत्र प्रणाली है जो मतदाताओं को यह सत्यापित करने की अनुमति देती है कि उनके वोट उनके इरादे के अनुसार डाले गए हैं.
- जब कोई वोट डाला जाता है, तो वीवीपैट प्रिंटर पर एक पर्ची छपी होती है जिसमें उम्मीदवार का क्रमांक, नाम और प्रतीक होता है और 7 सेकंड के लिए एक पारदर्शी विंडो के माध्यम से खुला रहता है.
- यह छपी हुई पर्ची अपने आप कट जाती है और वीवीपीएटी के सीलबंद ड्रॉप बॉक्स में गिर जाती है.

परमाणु संलयन सफलता

1. खबरों में क्यों:

यूनाइटेड किंगडम में वैज्ञानिकों ने परमाणु संलयन प्रतिक्रिया से अब तक की सबसे बड़ी मात्रा में ऊर्जा का उत्पादन करने में सफलता प्राप्त की है. इस परिणाम को फ्यू. जन न्यूक्लियर रिएक्टर बनाने के लिए चल रहे वैश्विक प्रयासों में एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है.

2. परमाणु संलयन

- नाभिकीय संलयन अभिक्रिया में दो हल्के नाभिक आपस में मिलकर एक अपेक्षाकृत भारी नाभिक बनाते हैं.
- इस प्रक्रिया में भारी मात्रा में ऊर्जा भी निकलती है.
- तापमान जिस पर प्रोटॉन में कूलम्ब के अवरोध को पार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा होगी, वह बहुत अधिक है.

3. थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन

- सामग्री का तापमान तब तक बढ़ाना जब तक की कूलम्ब बाधा को दूर करने के लिए कणों में केवल उनकी तापीय गतियों के कारण पर्याप्त ऊर्जा न हो.
- थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन के लिए ता. पमान और दबाव की चरम स्थितियों की आवश्यकता होती है.
- तारों में ऊर्जा का उत्पादन थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन का उदाहरण है.

4. सूर्य में ऊर्जा उत्पादन

- एक हाइड्रोजन परमाणु का द्रव्यमान 1.007825 परमाणु द्रव्यमान इकाई (एएमयू) है.
- जब चार हाइड्रोजन परमाणु संयुक्त होते हैं, तो यह हीलियम परमाणु में परिवर्तित हो जाता है.
- चार हाइड्रोजन परमाणुओं के द्रव्यमान का योग 4.03130 **AMU** है, जबकि एक हीलियम परमाणु का द्रव्यमान 4.00268 **AMU** है.
- जैसा कि हम जानते हैं, पदार्थ न तो निर्मित होता है और न ही नष्ट होता है; इसलिए द्रव्यमान अंतर 0.02862 **AMU** आइंस्टीन के प्रसिद्ध सूत्र **E¾mc**^{2} के माध्यम से शुद्ध ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है.
- अंतिम प्रतिक्रिया है :- **411H \$2e- --> 42He \$6 \$2 \$26-7MeV**

5. हाल की प्रगति

- चीन के एक्सपेरिमेंटल एडवांस्ड सुपर. कंडक्टिंग टोकामक (ईएएसटी) ने जनवरी 2022 में 1,056 सेकंड के लिए प्लाज्मा को 70 मिलियन डिग्री सेल्सियस पर बनाए रखा.
- फरवरी 2022 में, ऑक्सफोर्डशायर, यूके में जॉइंट यूरोपीय टोरस (जेईटी) संलयन प्रयोग ने थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन से 59 मेगा. जूल (**MJ**) ऊर्जा का उत्पादन किया .

6. टोकामक के बारे में

- संलयन होने के लिए, पहला कदम गर्म प्लाज्मा का निर्माण होना चाहिए.
- हाइड्रोजन की एक छोटी सी गोली को लाखों डिग्री तक गर्म करना और प्लाज्मा उत्पन्न करना इतना कठिन नहीं है; लेजर यह अच्छी तरह से कर सकता है.
- लाखों डिग्री तापमान पर मौजूद गर्म प्ला. ज्मा को कंटेनर की दीवार को छूने से रोकना मुख्य कार्य है.
- सोवियत भौतिक विज्ञानी इगोर टैम और आंद्रेई सखारोव ने संकल्पना की कि यदि कोई टोरस के आकार में एक चुंबकीय क्षेत्र बना सकता है, तो गर्म प्लाज्मा को अदृश्य चुं. बकीय बोतल में समाहित किया जा सकता है.
- इस सिद्धांत के आधार पर, मास्को के कुर्च. तोव संस्थान में लेव आर्टसिमोविच के नेतृत्व में एक सोवियत टीम द्वारा एक प्रयोगात्मक रिएक्टर का निर्माण और प्रदर्शन किया गया.
- टोकामक रूसी शब्द 'टोरोग्दलनाका कामेरस मैग्निटनीमी काटुश्कामी' के लिए एक संक्षिप्त शब्द है, जिसका अर्थ है "चुंबकीय कॉइल के साथ टॉरॉयडल कक्ष".
- वैकल्पिक डिजाइन तैयार और परीक्षण किए जाने के बावजूद, टोकामक फ्यूजन हासिल करने के मामले में बहुत आगे है.
- भारत, रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, यूरोपीय संघ सहित 35 देश, अंतर्राष्ट्रीय थर्मोन्यूक्लियर प्रायोगिक रिएक्टर (आईटीईआर) के हिस्से के रूप में संयुक्त रूप से सबसे बड़ा टोकामक बनाने के लिए सहयोग कर रहे हैं.
- 2035 में, संयंत्र द्वारा 500 मेगावाट बिजली उत्पन्न करने और इसके संचालन के लिए 50 मेगावाट की खपत की उम्मीद है, जिसके परिणामस्वरूप शुद्ध 450 मेगावाट बिजली उत्पादन होगा.
- दुनिया भर में किसी भी टोकामक्स ने इनपुट से अधिक शुद्ध ऊर्जा उत्पादन का प्रदर्शन नहीं किया है.

7. हाल की उपलब्धि का महत्व

- यदि व्यावसायिक ऊर्जा प्राप्त करनी है तो उच्च तापमान पर प्लाज्मा को लंबे समय तक बनाए रखने की आवश्यकता होती है.
- जेईटी प्रयोग इनपुट ऊर्जा का एक तिहाई उत्पादन के रूप में प्राप्त कर सका है, जो पहले के परिणामों से एक महत्वपूर्ण कदम है.

8. भारत में परमाणु संलयन

- बहुत पहले 1955 में, जिनेवा में पहली 'शांति के लिए परमाणु' बैठक में, होमी जे. भाभा ने थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन से आने वाली ऊर्जा में एक भविष्य देखा.
- गांधीनगर में इंस्टीट्यूट फॉर प्लाज्मा रिसर्च (आईपीआर) और साहा इंस्टीट्यूट ऑफ न्यू. क्लयर फिजिक्स (एसआईएनपी), कोलकाता में हॉट प्लाज्मा प्रोजेक्ट ने भारत में परमाणु संलयन अनुसंधान में अग्रणी भूमिका निभाई.

- इस जेईटी के प्रयोगात्मक परिणाम दर्शाते हैं कि आईटीईआर को डिजाइन करने के लिए इस्तेमाल किए गए मॉडल मजबूत हैं, जो उन पर हमारा विश्वास बढ़ाते हैं. ये प्रयोग आईटीईआर के डिजाइनों को मान्य करने में मदद करेंगे.

इनक्वलिटी किल्स : ऑक्सफैम रिपोर्ट

1. खबरों में क्यों

COVID-19 महामारी ने दुनिया भर में आर्थिक असमानताओं को बढ़ा दिया है. इस महामारी ने दुनिया भर में लाखों लोगों की जान ले ली. इसने दुनिया भर में लोगों के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों और सामाजिक और आय सुरक्षा की कमजोरी को भी उजागर किया है.

2. " इनक्वलिटी किल्स" रिपोर्ट के बारे में

- "इनक्वलिटी किल्स" जनवरी 2022 में ऑक्सफैम द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट है, जो यूके स्थित 21 धर्मार्थ संगठनों का एक संघ है, जिनकी वैश्विक उपस्थिति है.
- रिपोर्ट में महामारी को समाप्त करने, वैश्विक असमानता को दूर करने और जलवायु आपातकाल से निपटने के लिए ठोस उपाय शुरू करने के लिए निरंतर और तत्क. ाल कार्रवाई का तर्क दिया गया है.
- रिपोर्ट का केंद्रीय तर्क यह है कि असमानता उन लोगों के लिए मौत की सजा है जो सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं से हाशिए पर हैं और राजनीतिक निर्णय लेने से हटा दिए गए हैं.

3. भारत का असमानता संकट

- फोर्ब्स की अरबपतियों की रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर 2021 में, भारत के 100 सबसे अमीर लोगों की सामूहिक संपत्ति 775 बिलियन अमरीकी डालर के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गई और इनमें से 80% से अधिक परिवारों ने 2020 की तुलना में अपनी संपत्ति में वृद्धि देखी.
- इन अरबपतियों में से लगभग तीन-पांचवें (61 %) ने अपनी सामूहिक संपत्ति में 1 बिलियन अमरीकी डालर या उससे अधिक की वृद्धि की.
- इस बीच, भारत में 84 % परिवारों को महामारी की शुरुआत में उनकी आय में गिरावट का सामना करना पड़ा. धन की असमानता बढ़ रही है, यह एक वास्तविकता प्रतीत हो रही है.

- असमानता स्वाभाविक नहीं है, बल्कि पक्षपातपूर्ण आर्थिक और सामाजिक नीतियों की अभिव्यक्ति है.
- अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन या गैर-आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृ. तिक या अन्य क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन का असमानता पर व्यापक प्रभाव पड़ता है.

4. प्रगतिशील कराधान

- प्रगतिशील कराधान यह सुनिश्चित करता है कि कम आय वाले लोगों की तुलना में अमीरों के लिए कर का बोझ अधिक हो.
- इस तरह की प्रणाली के पीछे विचार यह है कि यह अमीरों को कुछ अर्थों में, करों के माध्यम से धन, निम्न-आय वाले परिवारों के लिए एक बुनियादी जीवन स्तर, आश्रय, भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा और परिवहन जैसी बुनियादी चीजों के लिए भुगतान करने की अनुमति देता है.
- एक प्रगतिशील कराधान प्रणाली कम आय वाले परिवारों को अपनी अल्प आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा जीवन यापन खर्च पर खर्च करने की अनुमति देती है, और इस तरह से विकास के लाभ को पुनर्वितरित करके असमानता में वृद्धि को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए नीति उपकरण में से एक है.

5. सामाजिक खर्च को कम करना

- **स्वास्थ्य**
  - क्रमिक सरकारों द्वारा इस क्षेत्र के लिए खराब बजटीय आवंटन, भारत में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की उपेक्षा को स्पष्ट करता है.
  - देश में सार्वजनिक वित्त पोषित स्वास्थ्य सेवा की खराब स्थिति ने अधिकांश आबादी को स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने के लिए निजी क्षेत्र का सहारा लेने के लिए मजबूर किया है.
  - स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा में अधिक निवेश से COVID-19 के प्रसार को कम किया जा सकता था.
- **शिक्षा**
  - असमानता के खिलाफ लड़ाई में शिक्षा महत्वपूर्ण है.
  - विश्व स्तर पर, उच्च माध्य वर्षों की स्कूली शिक्षा वाले देशों में आय असमानता कम होती है.
  - स्कूलों के बंद होने और विलय ने भारत के गरीब और हाशिए के समुदायों को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है.
- **सामाजिक सुरक्षा**
  - श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं (श्रम और रोजगार मंत्रालय के तहत) और राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम की केंद्र प्रायोजित योजना पर खर्च 2021-22 में कुल संघ व्यय के 0.6 प्रतिशत कम है.
  - ई-श्रम पोर्टल, जिसका उद्देश्य सभी प्रवासी और गिग श्रमिकों को पंजीकृत करना है, ऐसे श्रमिकों का केवल 24% ही पंजीकृत कर पाया है.
  - केवल 8% ने आयुष्मान भारत के बारे में सुना था और सिर्फ 1% के पास हेल्थ कार्ड है.

6. भविष्य की राह

- असमानता वास्तविक है और इसे मापने के लिए सहमत हों .
- बहुसंख्यकों के लिए संसाधन उत्पन्न करने के लिए भारत के धन को अति-अमीरों से पुनर्वितरित करें.
- भावी पीढ़ियों की शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश करने के लिए राजस्व उत्पन्न करना.
- अनौपचारिक क्षेत्र के कामगारों के लिए वैध ानिक सामाजिक प्रावधानों को अधिनियमित और लागू करना.

भारत की एमआरएनए वैक्सीन

1. खबरों में क्यों:

पुणे स्थित जेनोवा बायोफार्मास्युटिकल्स अप्रैल तक भारत का पहला देसी एमआ. रएनए (मैसेंजर राइबोन्यूक्लिक एसिड) वै. क्सीन तैयार करने की कोशिश कर रहा है. **COVID**-19 महामारी के कारण **RNA** थैरेपी चर्चा में आई. 2020 के अंत में सामने आए दो टीके, फाइजर-बायोएनटेक और मॉडर्न ने इस तकनीक का इस्तेमाल किया.

2. एमआरएनए वैक्सीन के बारे में

- अन्य टीकों की तरह, एमआरएनए वैक्सीन एंटीबॉडी का उत्पादन करने के लिए प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय करने का प्रयास करता है जो एक जीवित वायरस से संक्रमण का मुकाबला करने में मदद करता है.
- जबकि ऐसा करने के लिए पारंपरिक तरीके में एक हिस्से या पूरे वायरस को इस तरह से पेश करना शामिल है कि यह दोहरा नहीं सकता है, ॅै-ब्वट-2 वायरस के मामले में प्रतिकूल प्रतिक्रिया का जोखिम हमेशा बना रहता है.
- सिद्धांत यह है कि शरीर में किसी विदेशी निकाय को जितना कम इंजेक्शन लगाया जाएगा, प्रतिकूल प्रतिक्रिया की संभावना उतनी ही कम होगी.
- महामारी के दौरान टीका निर्माताओं का एक सामान्य तरीका यह था कि वैक्सीन के हिस्से के रूप में स्पाइक प्रोटीन के एक हिस्से को पेश किया जाए.
- कुछ निर्माताओं, जैसे कि एस्ट्राजेनेका या स्पुतनिक वी ने स्पाइक प्रोटीन के लिए कोड करने वाले जीन को एक निष्क्रिय वायरस में लपेट दिया जो चिंपैंजी को प्रभावित करता है, जिसे चिंपैंजी एडेनोवायरस कहा जाता है.
- इसका उद्देश्य दिए गए आनुवंशिक कोड से स्पाइक प्रोटीन बनाने के लिए शरीर को अपनी मशीनरी का उपयोग कराना है.
- प्रतिरक्षा प्रणाली, जब यह स्पाइक प्रोटीन को पंजीकृत करती है, तो इसके खिलाफ एंटीबॉडी बनाएगी.
- अन्य टीके स्पाइक प्रोटीन जीन को ढकने के लिए डीएनए के एक टुकड़े का उपयोग करते हैं.

- एक एमआरएनए वैक्सीन इसी तरह से काम करता है कि यह भी एक आनुवंशिक कोड का एक टुकड़ा है जो शरीर में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए डाला जाता है.

3. एमआरएनए टीके कैसे भिन्न होते हैं

- स्पाइक प्रोटीन का निर्माण करने में सक्षम होने के लिए डीएनए के एक टुकड़े को आरएनए में परिवर्तित किया जाना चाहिए।
- जबकि एमआरएनए वैक्सीन कोशिका को आवश्यक प्रोटीन बनाने के लिए एक अधिक प्रत्यक्ष दृष्टिकोण की तरह लग सकता है, एमआरएनए बहुत नाजुक होता है और इंजेक्शन लगाने पर कमरे के तापमान पर या शरीर के एंजाइमों द्वारा नष्ट हो सकता है.
- इसकी अखंडता को बनाए रखने के लिए, एमआरएनए को तैलीय लिपिड, या वसा कोशिकाओं की एक परत में लपेटने की आवश्यकता होती है.
- एक एमआरएनए लिपिड इकाई सबसे बा. रीकी से नकल करती है कि कैसे एक वाय. रस शरीर के सामने खुद को प्रस्तुत करता है, सिवाय इसके कि यह एक की तरह दोहरा नहीं सकता है.
- डीएनए बहुत अधिक स्थिर है और इसे वैक्सीन वेक्टर में अधिक लचीले ढंग से एकीकृत किया जा सकता है.
- एमआरएनए के टीकों के साथ एक चुनौती यह है कि उन्हें **-90C** से **-50C** तक फ्रीज करने की आवश्यकता होती है.
- भारत में एमआरएनए के टीकों के कभी नहीं आने का एक प्रमुख कारण फ्रीजर की अति आवश्यकता थी जिसने उन्हें महंगा बना दिया.

4. जेनोवा की एमआरएनए वैक्सीन

- जेनोवा ने कहा था कि संभावित टीका लि. पिड और एंजाइमों के मिश्रण का उपयोग करता है जो टीके को **2C** से **8C** पर संग्रहीत करने की अनुमति देता है.
- हालांकि, टीके के निर्माण के लिए आवश्यक अधिकांश सामग्री आयात पर निर्भर करती है.
- कंपनी के अधिकारियों का यह भी कहना है कि भारतीय एमआरएनए टीका उनके आया. तित संस्करणों से सस्ता होगा लेकिन शायद कोविशील्ड या कोवैक्सिन से महंगा होगा.

5. भारतीय प्रगति

- सुरक्षा, सहनशीलता और प्रतिरक्षीजनन क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए एमआ. रएनए वैक्सीन वर्तमान में चरण 2/3 परीक्षण में है.
- परीक्षण के लिए लगभग 4,000 स्वयंसेवकों की भर्ती की गई है.
- चरण 1 के परीक्षण के परिणाम जल्द ही प्रकाशित होने की उम्मीद है.
- जेनोवा को बायोटेक्नोलॉजी विभाग से 125 करोड़ मिले हैं.
- भारत ने अब अपनी आधी से अधिक आबादी को पूरी तरह से टीका लगाया है और अधिकारियों द्वारा कम से कम सात घरेलू टीकों को मंजूरी दे दी गई है.

- वैक्सीन निर्माता 15 साल से कम उम्र के लोगों को आपूर्ति करने के साथ-साथ तीसरी खुराक की मांग को पूरा करने की उम्मीद कर रहे हैं.

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण से संबंधित प्रश्न

Q1. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

1. प्रारम्भिक उम्र में मृत्यु की भेदता
2. व्यस्क साक्षरता दर
3. उपयोगी जल श्रोतों का उपयोग नहीं करने वाले जनसंख्या का प्रतिशत
4. जल बंद प्रसाधन वाले परिवारों का प्रतिशत

यू.एन.डी.पी. के अनुसार उपर्युक्त में से कौन से परिमाण/परिमाणों का प्रयोग मानव गरीबी सूचकांक-1 (एच.पी.आई.-1) को मापने के लिए किया जाता है?

(a) केवल 1, 2 और 3
(b) केवल 3 और 4
(c) 1, 2, 3 और 4
(d) केवल 4

Q2. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

1. कार्बनडाईऑक्साइड
2. मिथेन
3. ओजोन
4. सी.एफ.सी.
5. नाइट्रस ऑक्साइड

निम्नलिखित में से कौन-सा एक मानव निर्मित हरितगृह प्रभाव के सापेक्षिक योगदान का सही क्रम है?

(a) 1, 2, 3, 4, 5
(b) 1, 2, 4, 5, 3
(c) 2, 1, 5, 3, 4
(d) 1, 2, 4, 3, 5

Q3. भारत में प्राचीनकाल से जल संग्रह किया जाता रहा है. हमारे पूर्वज जल प्रबंधन की कला में निपुण थे. निम्नलिखित में से कौन से भारत में पारम्पारिक जल संग्रहण तंत्र के प्रकार हैं?

1. कट्टा
2. कुण्ड
3. जिंग
4. सुरंगम
5. वाउली या डिंगिस

कूट:

(a) 1, 2, 3, 4 और 5
(b) केवल 2, 3 और 4
(c) केवल 1, 2, 4 और 5
(d) केवल 2, 3, 4 और 5

Q4. सतत आवास पर राष्ट्रीय मिशन का मुख्य मिशन है.

(a) भूमि प्रयोग के ढंग में क्रमागत परिवर्तन
(b) अवनत जंगल भूमि पर वनीकरण निश्चित करना तथा वन क्षेत्र का विस्तार
(c) जलवायु प्रतिरोधी फसलों का विकास तथा कृषि व्यवहारों को उन्नत करना.
(d) शहरी नियोजन के मुख्य अवयव के रूप में ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना

Q5. एकीकृत बाल विकास योजना के तहत निम्नलिखित में से कौन सी सेवाएं प्रदान की जाती हैं?

1. आक्रमणों से मुक्तिकरण
2. पोषण की कमी पुरा करना
3. प्राथमिक स्कूल शिक्षा
4. स्वास्थ्य जांच

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) 1, 2 और 3
(b) 3 और 4
(c) 1, 2 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

Q6. खाद्य में विषैलेपन को कम करने के लिए निम्नलिखित में से कौन से रोकथाम के मापदण्ड अपनाना चाहिए?

1. फसलों में रसायनिक खाद के प्रयोग को छोड़ना
2. फसलों में कार्बनिक खादों का प्रयोग
3. फसलों में जैवपीड़कनाशी का प्रयोग

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए:

कूट:

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

Q7. डिब्बाबंद खाद्य उत्पाद के पैकेट पर, क्या संकेत है, जो बतलाता है कि भोजन शकाहारी है?

(a) एक हरा प्लस चिन्ह
(b) वृत में एक हरा वर्ग
(c) पादप की एक हरी पत्ति
(d) वर्ग में एक हरा वर्तुलाकार बिन्दु

Q8. भारत में पैकेट पूर्व वस्तुओं के संदर्भ में, खाद्य सुरक्षा तथा स्टैण्डर्ड (पैकेजिंग एण्ड लेवलिंग) रेगुलेशन 2011 के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सी सूचना मुख्य लेबल पर विनिर्माता

को प्रकाशित करना अनिवार्य (मैनडेटरी) है?
1. अतिरिक्त मिलावट अंश की सूची
2. पोषण सूचना
3. चिकित्सा व्यवसाय के अनुसार कोई संस्तुति
4. शकाहारी/मांसाहारी (हरे या भूरे रूप में संकेत या लोगो)
नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए.
(a) 1, 2 और 3
(b) 3 और 4
(c) 1, 2 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

Q9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. चारों ओर के वायु में ओजोन का उच्च सांद्रण श्वासरोगियों में लक्षणों की आवृत्ति को तीव्र करता है.
2. चारों ओर के वायु में कणिकीय पदार्थों में छोटी अवधि की बढ़त तीव्र हार्ट अटैक के अवसर को बढ़ाती है.
उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

Q10. कीटभक्षी वनस्पति सामान्यतया मृदा में वृद्धि करते हैं जो अपूर्ण होते है-
(a) जल में
(b) नाइट्रोजन में
(c) सोडियम में
(d) कैल्सियम में

Q11. यूट्रोफिकेशन (पोषकतत्वों की अधिकता) कमी लाता है-
(a) विद्यटित नाइट्रोजन
(b) विद्यटित लवण
(c) विद्यटित ऑक्सीजन
(d) इनमें से सभी

Q12. जलीय पर्यावरण में उच्च बी.ओ.डी. मूल्य संकेतक है-
(a) एक प्रदूषणमुक्त प्रणाली
(b) पोषकों की अधिकता के कारण एक उच्च प्रदूषित प्रणाली
(c) प्रचुर हेटेरोट्राफ्स के कारण उच्च प्रदूषित प्रणाली
(d) आटोट्राफ्स की प्रचुरता के साथ एक उच्चस्तरीय शुद्ध जल

Q13. पारिस्थितिकी पिरामिड जो कि सदैव सीधे होता है-
(a) ऊर्जा के पिरामिड
(b) बायोमास के पिरामिड
(c) संख्या के पिरामिड
(d) जनसंख्या पिरामिड

Q14. ग्लोबल वार्मिंग के संदर्भ में 'ग्रीन हाउस गैस' संकेत करता है-
(a) शीतलन एवं आर्द्र दशाओं की तरफ
(b) उष्णन प्रभाव
(c) बढ़ी हुई वर्षा और हरियाली
(d) सहारा के मरूस्थलीकरण की वृद्धि

Q15. भारत में उष्णकटिबंधीय वर्षा वन पाये जाते हैं-
(a) पंजाब में
(b) अंडमान व निकोबार में
(c) उत्तर प्रदेश में
(d) हरियाणा में

उत्तर

1.	(c)	12.	(b)
2.	(d)	13.	(a)
3.	(a)	14.	(b)
4.	(d)	15.	(b)
5.	(d)		
6.	(d)		
7.	(d)		
8.	(d)		
9.	(c)		
10.	(b)		
11.	(c)		

समसामायिक आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

Q1. केन-बेतवा लिंक परियोजना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. बजट 2022-23 में केन-बेतवा लिंक परियोजना को पूरा करने के लिए 4000 करोड़ रुपये की अनुमानित राशि आवंटित की गई है.

2. केन-बेतवा लिंक परियोजना बेतवा नदी से केन नदी में पानी स्थानांतरित करने का प्रस्ताव करती है.

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिये.

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: d

Q.2 निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

1. संयुक्त अरब अमीरात वैश्विक स्तर पर भारत का पांचवां सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है.

2. संयुक्त अरब अमीरात को भारत के प्रमुख निर्यात में पेट्रो लियम उत्पाद, कीमती धातुएं, पत्थर, रत्न और गहने सम्मिलित हैं.

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए.

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: b

Q.3 स्टील्थ टेक्नोलॉजी एयरक्राफ्ट के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. स्टील्थ विमान, विमान के प्रभावी ढंग से पता लगाने या ट्रैक करने के रडार के कार्य को और अधिक कठिन बनाते हैं.

2. अभी तक केवल **US (F-35 or F-22 Raptor)** और रूस **(Su-57 Felon)** के पास ही पांचवीं पीढ़ी के विमान हैं.

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही नहीं है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: b

Q.4 भूस्थिर परिचालन पर्यावरण उपग्रह **(GOES)** किस संगठन द्वारा संचालित किया जाता है?

(a) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
(b) राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन
(c) यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी
(d) भारत मौसम विज्ञान विभाग

उत्तर: b

Q.5 विश्व टैरिफ प्रोफाइल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें :

1. यह एक सांख्यिकीय वार्षिक पुस्तक है जो केवल विश्व व्यापार संगठन के सदस्यों द्वारा लगाए गए टैरिफ और गैर-टैरिफ उपायों पर व्यापक जानकारी प्रदान करती है.

2. इसे केवल विश्व व्यापार संगठन द्वारा प्रकाशित किया जाता है.

3. इसमें कहा गया है कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र में भारत का सबसे अधिक औसत शुल्क है.

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) केवल 3

उत्तर : d

Q.6 निम्नलिखित में से कौन सी भाषा 21 वें संशोधन कानून 1967 द्वारा संविधान की 8वीं अनुसूची में जोड़ी गई थी ?

(a) कोंकणी
(b) डोगरी
(c) मणिपुरी
(d) सिंधी

उत्तर : d

Q.7 निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. कोविड-19 में, केवल अनैच्छिक-पुश आधारित रिवर्स माइग्रेशन होता है.

2. भारत में, अंतिम निवास के स्थान से, अंतर्राज्यीय ग्रामीण से ग्रामीण प्रवासन में महिलाओं का प्रभुत्व देखा जाता है.

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिये.

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर : b

Q.9 निम्नलिखित में से स्माइल योजना किसके लिए लायी गयी है?
(a) बच्चों के लिए
(b) ट्रांसजेंडर और भिक्षा मांगने वालों के लिए
(c) गरीबी रेखा के नीचे वालों के लिए
(d) महिलाओं के लिए
उत्तर : b

Q10. संकल्प और स्ट्राइव योजना किस क्षेत्र से संबंधित हैं
(a) स्वास्थ्य
(b) शिक्षा
(c) कौशल विकास
(d) लोक प्रशासन
उत्तर : c

Q11. निम्नलिखित में से हाल ही में कहाँ एशिया का सबसे बड़ा बायो-सीएनजी प्लांट लगाया गया है?
(a) अहमदाबाद
(b) कोलकाता
(c) इंदौर
(d) चेन्नई
उत्तर : c

Q12. निम्नलिखित में से हाल ही में किस संस्था द्वारा 'हेल्थ स्टार रेटिंग' पहल की शुरुआत की गई है?
(a) विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
(b) भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण
(c) भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद
(d) युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय
उत्तर : b

Q13. हाल ही में **"Intracortical Visual Prosthesis" (ICVP)** सुर्खियों में रहा है. यह निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से संबंधित शब्द है?
(a) सूर्य के प्रकाश की गति नियंत्रित करने की एक तकनीक
(b) व्यक्ति को मृत्यु के बाद कुछ देर तक कृत्रिम तरीके से जिंदा रखने की एक नई तकनीक
(c) एलियन से प्राप्त संदेशों को समझने की एक नई तकनीक
(d) कृत्रिम दृष्टि प्रदान करने की एक तकनीक
उत्तर: d

Q14. **"Giant Metrewave Radio Telescope (GMRT)"** भारत के किस राज्य में स्थित है?
(a) तमिल नाडु
(b) आंध्र प्रदेश
(c) जम्मू कश्मीर
(d) महाराष्ट्र
उत्तर: b

Q15. हरित हाइड्रोजन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
1. हरित हाइड्रोजन को बायोमास से उत्पादित हाइड्रोजन के रूप में परिभाषित किया जाता है जैसे पेड़ और पौधों से उत्पादित हाइड्रोजन.
2. भारत के लिए अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (आईएनडीसी) को पूरा करने में हरित हाइड्रोजन ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका है.
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) दोनों 1 और 2
(d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर: b

Q16. निम्नलिखित में से हाल ही में कहाँ देश की पहली जल टैक्सी सेवा की शुरुआत की गई?
(a) अहमदाबाद
(b) कोलकाता
(c) मुंबई
(d) चेन्नई
उत्तर: c

Q17. '**DefEñpo**-2022' के संबंध में निम्नलिखित में कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?
1. इस वार्षिक कार्यक्रम को 10-13 मार्च के बीच गुजरात के गांधीनगर में आयोजित किया जाएगा.
2. यह एशिया की सबसे बड़ी रक्षा प्रदर्शनी होने जा रही है.
3. इसका उद्देश्य देश को एक उभरते रक्षा विनिर्माण केंद्र के रूप में पेश करना है.
(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3
उत्तर: b

Q18. आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 के अनुसार भारत का सबसे बड़ा निर्यात किस देश के साथ है?
(a) यूएसए
(b) संयुक्त अरब अमीरात
(c) चीन

(d) यूके

उत्तर: (a)

Q19. हाल ही में निम्नलिखित में से किस स्थान पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा आयोजित "देवायतनम - भारतीय मंदिर वास्तु कला का भ्रमण" शीर्षक से भारतीय मंदिर वास्तुकला पर सम्मेलन का उद्घाटन किया गया था ?

(a) कर्नाटक

(b) महाराष्ट्र

(c) केरल

(d) तमिलनाडु

उत्तर: a

Q20. "हाउ टू प्रिवेंट द नेक्स्ट पैनडेमिक" किताब किसके द्वारा लिखी गई है ?

(a) बिल गेट्स

(b) साइरस पूनावाला

(c) सत्या नडेला

(d) डॉक्टर टैड्रोस ऐडरेनॉम गैबरेयेसस

उत्तर: a

मार्च के महत्वपूर्ण दिवस

दिनांक	महत्त्व
1 मार्च	विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस
3 मार्च	विश्व वन्यजीव दिवस
8 मार्च	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
10 मार्च	सीआईएसएफ स्थापना दिवस
13 मार्च	धूम्रपान निषेध दिवस
15 मार्च	विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस
18 मार्च	ऑर्डनेंस फैक्ट्री डे
20 मार्च	अंतर्राष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस
	विश्व गौरैया दिवस
21 मार्च	विश्व वानिकी दिवस
	विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस
22 मार्च	विश्व जल दिवस
23 मार्च	विश्व मौसम विज्ञान दिवस
24 मार्च	विश्व क्षय रोग (टीबी) दिवस

Paper IV केस स्टडी

आप उत्तर-प्रदेश के एक जिले में जिलाधिकारी हैं. कोरोना महामारी की दूसरी लहर को नियंत्रित करने के पश्चात, उत्तर-प्रदेश सरकार ने विभिन्न चरणों में लॉकडाउन को समाप्त कर दिया है. व्यापक स्तर पर लोगों को वैक्सीन लगाई जा रही है. सभी शिक्षण-संस्थान खुल गए हैं. अर्थव्यवस्था गति पकड़ रही है.

एक दिन आप, अपने जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित कुछ प्राथमिक विद्यालयों का निरीक्षण करते हैं. आप को भारी संख्या में विद्यार्थी अनुपस्थित मिलते हैं. प्रारम्भिक कक्षाओं में नये विद्यार्थियों के दाखिले में भी भारी गिरावट आयी है.

बेसिक शिक्षा अधिकारी से आपको इस समस्या के दो कारण ज्ञात होते हैं. प्रथम लोगों में अभी तक 'कोरोना-महामारी' का डर व्याप्त है. दूसरा यह कि कोरोना के कारण लोगों की आय में कमी आयी है, इसलिए विद्यार्थी धान की रोपाई एवं अन्य कृषि कार्यों में अपने परिवार का हाथ बंटा रहे हैं. कुछ विद्यार्थी, पैसों के लिए समूह बनाकर बड़े किसानों के खेत में धान की रोपाई कर रहे हैं.

(a) अब आप प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की पुन: उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय करेंगे?

(b) प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन करके बताइए कि आप कौन सा विकल्प चुनेंगे? उसके कारण भी बताइए।

दिए गए मामले में मैं एक जिले का जिलाधिकारी हूं और मेरे सामने निम्नलिखित चुनौतियां हैं-

- ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की अत्यधिक अनुपस्थिति
- माता-पिता का डर, अपने बच्चों को स्कूली शिक्षा फिर से शुरू करने से रोकना
- बाल श्रम में लगे बच्चे
- गांवों में लोगों की आर्थिक कठिनाई

(a) उपाय जो मेरे द्वारा अपनाए जा सकते हैं -

- मैं संबंधित गांवों में कोरोना की रोकथाम और साक्षरता के लाभों के बारे में जागरूकता अभियान शुरू कर सकता हूं. यह विकल्प ग्रामीणों के बीच एक सकारात्मक संदेश फैलाएगा, लेकिन उनकी आर्थिक कठिनाइयों के कारण, वे बच्चों को स्कूली शिक्षा फिर से शुरू नहीं करने देंगे क्योंकि उनके पास खेत में काम करने के लिए कम हाथ होंगे.
- मैं संबंधित अधिकारियों को गांवों में बाल श्रम की जांच करने और इसके लिए जिम्मेदार लोगों को दंडित करने के लिए बुला सकता हूं. इससे बच्चों को खेतों से बचाया जा सकेगा लेकिन उनकी स्कूल वापसी सुनिश्चित नहीं होगी और यहां तक कि माता-पिता को भी बाल श्रम के हतोत्साहित नहीं किया जा सकेगा.
- मैं स्कूलों के लिए कड़े कोरोना सुरक्षा और रोकथाम के दिशा-. निर्देशों को लागू कर सकता हूं, साथ ही मुफ्त में सैनिटाइजर और मास्क की उपलब्धता का भी प्रावधान करता हूं. मैं बाल श्रम के खिलाफ और स्कूली शिक्षा के पक्ष में जागरूकता अभियान चला सकता हूं और ग्रामीण आबादी को आर्थिक तंगी से बाहर निकालने में भी मदद कर सकता हूँ. इससे माता-पिता के मन से संक्रमण के डर को रोकने में मदद मिलेगी और उन्हें आर्थिक रूप से भी मदद मिलेगी.

(b) मैं तीसरा विकल्प चुनूंगा क्योंकि यह बच्चों को स्कूली शिक्षा फिर से शुरू करने और माता-पिता के बीच संक्रमण के डर को कम करने में सक्षम करेगा. मास्क और सैनिटाइजर की मुफ्त उपलब्धता से उपरोक्त दोनों कारणों में मदद मिलेगी क्योंकि इन वस्. तुओं की मुफ्त उपलब्धता से ग्रामीणों की जेब पर असर नहीं पड़ेगा. इसी उद्देश्य से मनरेगा एवं अन्य योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से ग्रामीणों का आर्थिक कल्याण सुनिश्चित होगा. इससे बच्चे भी खेतों से दूर हो जाएंगे. बाल श्रम के लिए जिम्मेदार भूस्वामियों को सख्त चेतावनी भी उक्त कार्य को सुनिश्चित करेगी.

NOTES

व्यक्ति विशेष : शांति स्वरूप भटनागर

डॉ शांति स्वरूप भटनागर एक ऐसे स्वप्नद्रष्टा वैज्ञानिक थे, जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में देश को मजबूत स्थिति में खड़ा करने का स्वप्न देखा, और उसे साकार करने में जुट गए. कहना गलत न होगा कि उन्हें भारतीय शोध प्रयोगशालाओं के जनक के रूप में अनायास ही याद नहीं किया जाता. वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान पर्िषद (सीएसआईआर), जिसकी देशभर में आज 38 वैज्ञानिक शोध प्रयोगशालाएं विज्ञान के विविध क्षेत्रों में काम कर रही हैं, की स्थापना का श्रेय डॉ शांति स्वरूप भटनागर को जाता है. वह मशहूर भारतीय वैज्ञानिक और अकादमिक प्रशासक थे. उनका जन्म 21 फरवरी, 1894 को शाहपुर में हुआ, जो अब पाकिस्तान में है.

वर्ष 1913 में पंजाब यूनिवर्सिटी से इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के पश्चात उन्होंने लाहौर के फॉरमैन क्रिस्चियन कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ से उन्होंने वर्ष 1916 में बीएससी और 1919 में एमएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की. स्नातकोत्तर डिग्री पूर्ण करने के उपरांत, शोध फेलोशिप पर, वे इंगलैंड चले गये, जहाँ उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन से 1921 में, रसायन शास्त्र के प्रोफेसर फेड्रिक जी. डोन्नान की देखरेख में, विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की. इंग्लैंड प्रवास के दौरान वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग, लंदन की ओर से उन्हें 250 यूरो सालाना की छात्रवृत्ति मिलती थी.

अगस्त, 1921 में वे भारत वापस आए, और उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर के तौर पर तीन साल तक अध्यापन कार्य किया. इसके बाद, उन्होंने लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय में 'फिजिकल केमिस्ट्री' के प्रोफेसर के साथ-साथ विश्वविद्यालय की रासायनिक प्रयोगशालाओं के निदेशक के तौर पर काम किया. यह समय उनके वैज्ञानिक जीवन की सबसे महत्वपूर्ण समय था, जिसमें उन्होंने मौलिक वैज्ञानिक शोध किये. उन्होंने इमल्सन, कोलायड्स और औद्योगिक रसायन शास्त्र पर कार्य के अतिरिक्त 'मैग्नेटो-केमिस्ट्री' के क्षेत्र में अहम योगदान दिया. वर्ष 1928 में उन्होंने के.एन. माथुर के साथ मिलकर 'भटनागर-माथुर मैग्नेटिक इन्टरफेरेंस बैलेंस' का प्रतिपादन किया. यह चुम्बकीय प्रकृति ज्ञात करने के लिए सबसे संवेदनशील यंत्रों में से एक था, जिसका बाद में ब्रिटिश कंपनी ने उत्पादन भी किया.

वर्ष 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली तब देश में विज्ञान और तकनीक की नींव रखने का कार्य आरंभ हुआ. इसके लिए डॉ शांति स्वरूप भटनागर ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आधारभूत ढांचे और नीतियों को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. उन्होंने कई युवा और प्रतिभाशील वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन किया और उन्हें प्रोत्साहित किया. उन्होंने शिक्षा मंत्रालय में सचिव के पद पर कार्य किया, और भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार भी रहे. उनके नेतृत्व में तेल शोधन केंद्र शुरू हुए, टाइटेनियम जैसी नई धातुओं और जिरकोनियम उत्पादन के कारखाने बने तथा खनिज तेल (पेट्रोलियम) का सर्वेक्षण भी शुरू किया गया.

शांति स्वरूप भटनागर ने व्यावहारिक रसायन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया. उन्होंने 'नेशनल रिसर्च डेवलपमेंट कारपोरेशन' (एनआरडीसी) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. एनआरडीसी की भूमिका शोध एवं विकास के बीच अंतर को समाप्त करने से संबंधित रही है. उन्होंने देश में 'औद्योगिक शोध आंदोलन' के प्रवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. उनके नेतृत्व में भारत में कुल बारह राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई. जिस सीएसआईआर की स्थापना उन्होंने की थी, आज वह वैश्विक पटल पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विविध क्षेत्रों में भारत का नेतृत्व कर रहा है. आज सीएसआईआर का संपूर्ण भारत में 38 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, 39 दूरस्थ केन्द्रों, 3 नवोन्मेषी कॉम्प्लेक्सों और 05 यूनिटों के साथ एक सक्रिय नेटवर्क है. सीएसआईआर, रेडियो एवं अंतरिक्ष भौतिकी, महासागर विज्ञान, भू-भौतिकी, रसायन, औषध, जीनोमिकी, जैव प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में में कार्य कर रहा है.

वर्ष 1954 में भारत सरकार ने डॉ शांति स्वरूप भटनागर को विज्ञान एवं अभियांत्रिकी क्षेत्र में अहम योगदान के लिए पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया. 1 जनवरी, 1955 को दिल का दौरा पड़ने के कारण डॉ शांति स्वरूप भटनागर की मृत्यु हो गई. उनके मरणोपरांत वर्ष 1957 में सीएसआईआर ने उनके सम्मान में शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार की घोषणा की. यह पुरस्कार विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले वैज्ञानिकों को दिया जाता है.

राजव्यवस्था शब्दावली

संविधान की मुख्य विशेषताएं

संविधान के बारे में

भारतीय संविधान अपनी तत्वों और भावना में अद्वितीय है. इसमें दुनिया के लगभग हर संविधान से कई उधार की विशेषताएं हैं लेकिन भारत के संविधान में कई मुख्य विशेषताएं हैं जो इसे अन्य देशों के संविधानों से अलग करती हैं.

मुख्य विशेषताएं

1. सबसे लंबा लिखित संविधान

संविधानों को 2 प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है

- लिखित जैसे भारत, जर्मनी, फ्रांस, यूएस
- अलिखित जैसे यूके, न्यूजीलैंड और इजराइल

भारतीय संविधान के विस्तृत होने के प्रमुख कारण

✴ **भौगोलिक कारक :-** देश की विशालता और विविधता के कारण

✴ **ऐतिहासिक कारक:-** सभारत शासन अधिनियम 1935 के कारण जो की विस्तृत था.

✴ केंद्र और राज्यों दोनों के लिए एकल संविधान

✴ संविधान सभा में विधि विशेषज्ञों की प्रमुखता

2. विभिन्न स्त्रोतों का प्रभाव

- **भारत शासन अधिनियम, 1935 :-** संघीय तंत्र, राज्यपाल का पद, न्यायपालिका, लोक सेवा आयोग, आपातकालीन प्रावधान तथा प्रशासनिक विवरण
- **ब्रिटिश संविधान :-** संसदीय शासन व्यवस्था, कानून का शासन, विधायी प्रक्रिया, एकल नागरिकता, कैबिनेट प्रणाली, , संसदीय विशेषाधिकार, परमाधिकार लेख और द्विसदनीयता
- **अमेरिकी संविधान :-** मौलिक अधिकार, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, न्यायिक समीक्षा, राष्ट्रपति पर महाभियोग, सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को हटाना और उपराष्ट्रपति का पद
- **आयरलैंड का संविधान :-** राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत, राज्यसभा के लिए सदस्यों का नामांकन और राष्ट्रपति के चुनाव की विधि.
- **जापान संविधान :-** विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया.

3. नम्यता तथा अन्मयता के गुण

- अनुच्छेद 368 के तहत संविधान में 2 तरह से संशोधन किया जा सकता है
- केशवानंद भारती केस (1973) में, सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि अनुच्छेद 368 के तहत संसद संविधान में संशोधन कर सकती है लेकिन यह संविधान के 'मूल ढांचे' को नहीं बदल सकती है

4. सरकार का संसदीय स्वरूप

संसदीय प्रणाली को सरकार के 'वेस्टमिंस्टर' मॉडल, उत्तरदायी सर. कार और मंत्रिमंडल सरकार के रूप में भी जाना जाता है. सरकार के संसदीय स्वरूप की विशेषताएं हैं

✴ नाममात्र और वास्तविक कार्यपालको की उपस्थिति

✴ बहुमत वाले दल का शासन

✴ विधायिका के प्रति कार्यपालिका की सामूहिक जिम्मेदारी

✴ मंत्री किसी भी सदन के सदस्य होते हैं

✴ प्रधानमंत्री का नेतृत्व

✴ मात्र निचला सदन भंग होता है

5. मौलिक अधिकार

भारतीय संविधान का भाग 3, छह मौलिक अधिकारों की गारंटी देता है

6. राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत

राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र के आदर्श को बढ़ावा देने के लिए हैं. इनका लक्ष्य भारत में एक 'कल्याणकारी राज्य स्थापित करना है.

7. संघीय व्यवस्था

भारत का संविधान सरकार की एक संघीय प्रणाली की स्थापना करता है. इसमें दो सरकारें, शक्तियों का विभाजन, लिखित संविधान, संविधान की सर्वोच्चता, संविधान की कठोरता, स्वतंत्र न्यायपालिका और द्विसदनीयता शामिल हैं.

8. एकात्मक की ओर झुकाव

एकात्मक की ओर झुकाव एक मजबूत केंद्र, एकल संविधान, एकल नागरिकता, संविधान का लचीलापन, एकीकृत न्यायपालिका, केंद्र द्वारा राज्य के राज्यपाल की नियुक्ति, अखिल भारतीय सेवाओं, आपातकालीन प्रावधानों आदि द्वारा देखा जा सकता है.

9. मौलिक कर्तव्य

42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा स्वर्ण सिंह समिति की सिफारिश पर मौलिक कर्तव्यों को जोड़ा गया. 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 द्वारा एक और मौलिक कर्तव्य जोड़ा गया.

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Target IAS Prelims 2022

हिन्दी माध्यम

Starts from 16th Feb. 2022

भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सेवा होने के कारण सिविल सेवा देशभर से अभ्यर्थियों को आकर्षित करती हैं। लेकिन सीटों की संख्या सीमित होने से इस परीक्षा में सफलता हेतु उच्चतम स्तर की प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता हैं। ऐसे मे एक नियोजित तैयारी और प्रभावी रणनीति सफलता की कुंजी बन जाती हैं। इस विचार और इरादे के साथ हमारे अत्यंत ही कुशल, दक्ष एवं अनुभवी शिक्षकों के द्वारा ऐसी विशिष्ट एवं प्रभावी रणनीति तैयार की जाती हैं, जिससे सुपरिभाषित तरीके से सभी टॉपिक को कवर किया जा सके। बेहतर अवधारणात्मक समझ हेतु हम अभ्यर्थियों की सहायता करते हैं। साथ ही अन्तर-अनुशासनात्मक दृष्टीकोण के विकास हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। हमारी नवोन्मेषी अध्ययन प्रणाली एक विश्वासयुक्त रोड मैप तैयार करती है ताकि इस सुनहरे लक्ष्य को प्रभावी ढंग से हासिल किया जा सके। सपनों को साकार करने और आकांक्षाओं को पूरा करने हेतु हम आपको सशक्त बनाते हैं, साथ ही परिश्रम, समर्पण, विश्वास एवं सही दिशा जैसे अव्यय के विकास में आपके साथ हर कदम पर खड़े रहते हैं। UPSC के तेजी से बदलते पैटर्न के अनुरूप अपने प्रदर्शन में समायानुकूल बदलाव हेतु हम सदैव अभ्यर्थियों के साथ प्रो-ऐक्टिव होकर कार्य भी करते हैं।

छात्र अपनी आवश्यकता अनुरूप निम्नलिखित में से किसी भी कोर्स का चयन कर सकते है।

Target IAS Prelims 2022

Fee: 28,000/-

Objective

कोर्स में सामान्य अध्ययन के सभी भागों को विस्तार से कवर किया जायेगा जिसमें करेंट अफेयर्स भी शामिल रहेगा। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) और अद्यतन (Dynamic) भाग की गहन समझ प्रदान किया जाएगा। इस प्रोग्राम में विषय विशेषज्ञों के द्वारा live class में विभिन्न मुद्दों और उनसे तत्संबंधी हाल के नवीन घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही लाइव/डिलेड लाइव या रिकॉडेड क्लास के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) हिस्से पर गुणवत्तापूर्ण कंटेंट भी दिया जाएगा।

इस कोर्स में सी-सैट भी शामिल होगा। इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा।

CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा।
- 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉडेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा।
- 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।
- Perfect 7 की 24 कॉपियां (2000 रुपये मूल्य वाली) भी कोर्स के साथ प्रदान की जाएगी।
- कोर्स के साथ एक Prelims टेस्ट सीरीज (2500 रुपये मूल्य वाली) भी शामिल रहेगा।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Static	
Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
Economy	Kumar Amit
General Science	Raghvendra Singh
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag
CSAT	
Maths and Reasoning	Mukesh Singh
Comprehension	Shweta Singh

Call : 9205274741 / 42 / 44

CLICK HERE FOR ENROLLMENT

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

General Studies - Target IAS Prelims 2022

Fee: 18,000/-

Objective

कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करेंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय- विशेषज्ञों के द्वारा Live Class के माध्यम से मुद्दों और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही Live/Delayed Live या Recorded classes के माध्यम से करेंट अफेयर्स के परम्परागत भाग पर गुणवत्ता पूर्ण सामग्री भी प्रदान की जाएगी, जिससे छात्र असीमित समय तक देख सकेंगे।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा।
- 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉर्डेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Static	
Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
Economy	Kumar Amit
General Science	Raghvendra Singh
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag

Spotlight Current Affairs - IAS Prelims 2022

Fee: 10,000/-

Objective

कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करेंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय- विशेषज्ञों के द्वारा live class के माध्यम से मुद्दो और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag

UPSC CSAT

Fee: 10,000/-

Objective

इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा। CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।

Features

- 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।

Course Content	Faculty Name
Maths and Reasoning	Mukesh Singh
Comprehension	Shweta Singh

3 दिन की अतिरिक्त कक्षाये संचालित की जाएगी जिसमें खेल, पुरस्कार, स्थान, वर्तमान में चर्चित पुस्तकों से सबंधित विषय शामिल होंगे।

ध्येय स्टूडेंट्स के लिए आकर्षक छूट

- 100% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 को या उसके बाद एडमिशन लिया है।
- 50% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 से पहले एडमिशन लिया है।

प्रथम चरण (प्रारंभिक परीक्षा)

प्रश्न पत्र 1 (अंकः 200) अवधिः 2 घंटे

- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाएँ
- भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
- भारत एवं विश्व भूगोल - भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल
- भारत राजव्यवस्था और शासन व्यवस्था - संविधान, राजनीतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोक नीति, अधिकार संबंधी मुद्दे आदि।
- आर्थिक और सामाजिक विकास - सतत् विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहल आदि।
- पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी, जैव-विविधता और जलवायु परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिए विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है।
- सामान्य विज्ञान

प्रश्न पत्र 2 (अंकः 200) अवधिः 2 घंटे

- बोधगम्यता
- संचार कौशल सहित अंतर - वैयक्तिक कौशल
- तार्किक कौशल एवं विश्लेषणात्मक क्षमता
- निर्णयन और समस्या समाधान
- सामान्य मानसिक योग्यता
- आधारभूत संख्यात्मक अभियोग्यता (संख्याएँ और उनके संबंध, विस्तार क्रम, आदि-दसवीं कक्षा का स्तर), आंकड़ों का निर्वचन (चार्ट, ग्राफ, तालिका, आंकड़ों की पर्याप्तता, आदि - दसवीं कक्षा का स्तर)

ध्येय IAS®
most trusted since 2003

Target UPPCS Prelims 2022

हिन्दी माध्यम

भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सेवा होने के कारण सिविल सेवा देशभर से अभ्यर्थियों को आकर्षित करती हैं। लेकिन सीटों की संख्या सीमित होने से इस परीक्षा में सफलता हेतु उच्चतम स्तर की प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता हैं। ऐसे मे एक नियोजित तैयारी और प्रभावी रणनीति सफलता की कुंजी बन जाती हैं। इस विचार और इरादे के साथ हमारे अत्यंत ही कुशल, दक्ष एवं अनुभवी शिक्षकों के द्वारा ऐसी विशिष्ट एवं प्रभावी रणनीति तैयार की जाती हैं, जिससे सुपरिभाषित तरीके से सभी टॉपिक को कवर किया जा सके। बेहतर अवधारणात्मक समझ हेतु हम अभ्यर्थियों की सहायता करते हैं। साथ ही अन्तर-अनुशासनात्मक दृष्टीकोण के विकास हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। हमारी नवोन्मेषी अध्ययन प्रणाली एक विश्वासयुक्त रोड मैप तैयार करती है ताकि इस सुनहरे लक्ष्य को प्रभावी ढंग से हासिल किया जा सके। सपनों को साकार करने और आकांक्षाओं को पूरा करने हेतु हम आपको सशक्त बनाते हैं, साथ ही परिश्रम, समर्पण, विश्वास एवं सही दिशा जैसे अव्यय के विकास में आपके साथ हर कदम पर खड़े रहते हैं। UPPCS के तेजी से बदलते पैटर्न के अनुरूप अपने प्रदर्शन में समायानुकूल बदलाव हेतु हम सदैव अभ्यर्थियों के साथ प्रो-ऐक्टिव होकर कार्य भी करते हैं।

छात्र अपनी आवश्यकता अनुरूप निम्नलिखित में से किसी भी कोर्स का चयन कर सकते है।

Target UPPCS Prelims 2022

Fee: 28,000/-

Objective

कोर्स में सामान्य अध्ययन के सभी भागों को विस्तार से कवर किया जायेगा जिसमें करेंट अफेयर्स भी शामिल रहेगा। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) और अद्यतन (Dynamic) भाग की गहन समझ प्रदान किया जाएगा। इस प्रोग्राम में विषय विशेषज्ञों के द्वारा live class में विभिन्न मुद्दों और उनसे तत्संबंधी हाल के नवीन घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही लाइव/डिलेड लाइव या रिकॉडेड क्लास के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) हिस्से पर गुणवत्तापूर्ण कंटेंट भी दिया जाएगा।

इस कोर्स में सी-सैट भी शामिल होगा। इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा।

CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा।
- 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉडेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा।
- 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।
- Perfect 7 की 24 कॉपियां (2000 रुपये मूल्य वाली) भी कोर्स के साथ प्रदान की जाएगी।
- कोर्स के साथ एक Prelims टेस्ट सीरीज(2500 रुपये मूल्य वाली) भी शामिल रहेगा।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Static	
Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
Economy	Kumar Amit
General Science	Raghvendra Singh
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag
CSAT	
Maths and Reasoning	Mukesh Singh
Comprehension	Shweta Singh
English Language	Athar Abbasi
General Hindi	Sandeep Sahil

Call : 9205274741 / 42 / 44

CLICK HERE FOR ENROLLMENT

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

General Studies - Target UPPCS Prelims 2022 — Fee: 18,000/-

Objective

कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करेंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय- विशेषज्ञों के द्वारा Live Class के माध्यम से मुद्दों और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही Live/Delayed Live या Recorded classes के माध्यम से करेंट अफेयर्स के परम्परागत भाग पर गुणवत्ता पूर्ण सामग्री भी प्रदान की जाएगी, जिससे छात्र असीमित समय तक देख सकेंगे।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा।
- 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉर्डेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमेट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Static	
Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
Economy	Kumar Amit
General Science	Raghvendra Singh
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag

Spotlight Current Affairs - UPPCS Prelims 2022 — Fee: 10,000/-

Objective

कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करेंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय - विशेषज्ञों के द्वारा live class के माध्यम से मुद्दो और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमेट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag

UPPCS CSAT — Fee: 10,000/-

Objective

इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा। CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।

Features

- 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमेट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।

Course Content	Faculty Name
Maths and Reasoning	Mukesh Singh
Comprehension	Shweta Singh
English Language	Athar Abbasi
General Hindi	Sandeep Sahil

जिन विद्यार्थियों ने पहले तीन कोर्स में से किसी भी कोर्स में एडमिशन लिया है उन्हें UP स्पेशल की 10 दिन की क्लास अतिरिक्त दी जाएगी।

ध्येय स्टूडेंट्स के लिए आकर्षक छूट

- 100% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 को या उसके बाद एडमिशन लिया है।
- 50% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 से पहले एडमिशन लिया है।

SYLLABUS OF PRELIMS

प्रश्न पत्र 1 (अंक: 200) — अवधि: 2 घंटे

- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाएँ
- भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
- भारत एवं विश्व भूगोल - भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल
- भारत राजव्यवस्था और शासन व्यवस्था - संविधान, राजनीतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोक नीति, अधिकार संबंधी मुद्दे आदि।
- आर्थिक और सामाजिक विकास - सतत् विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहल आदि।
- पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी, जैव-विविधता और जलवायु परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिए विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है।
- सामान्य विज्ञान

प्रश्न पत्र 2 (अंक: 200) — अवधि: 2 घंटे

- काम्प्रिहेन्शन (विस्तारीकरण)
- अन्तर्वैयक्तिक क्षमता जिसमें सम्प्रेषण कौशल भी समाहित होगा।
- तार्किक एवं विश्लेषणात्मक योग्यता।
- निर्णय क्षमता एवं समस्या समाधान।
- सामान्य बौद्धिक योग्यता।
- प्रारम्भिक गणित हाईस्कूल स्तर तक - अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित व सांख्यिकी।
- सामान्य अंग्रेजी हाईस्कूल स्तर तक।
- सामान्य हिन्दी हाईस्कूल स्तर तक।

AN INTRODUCTION

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

DhyeyaIAS, one and half decade old institution, was founded by Mr.Vinay Singh and Mr. Q. H. Khan. Ever since its emergence it has unparallel track record of success. Today, it stands tall among the reputed institutes providing coaching for Civil Services Examination (CSE). The institute has been very successful in making potential aspirants realize their dreams which is evident from the success stories of the previous years.

As the nation progresses, the young generations become more conscious and aware about their career options. There is plethora of jobs and one among them is civil services, the most prestigious service in the country, which needs no introduction. It attracts many young minds hailing from almost all spectra of academic disciplines. The popular belief that the examination for this service is only meant for the brilliant lots has become a taboo as it also attracts the hardworking, sincere and disciplined minds. The saying- "In the end passion and hard work can substitute natural talent" holds true. It gives immense power and opportunity for young folks to bring about the positive changes in the society which would bring harmony and development. It inculcates values, moral, ethos and feeling of national integrity.

Quite a large number of students desirous of building a career for themselves are absolutely less equipped for the fairly tough competitive tests they have to appear in. Several others, who have a brilliant academic career, do not know that competitive exams are vastly different from academic examination and call for a systematic and scientifically planned guidance by a team of experts. Here one single move may invariably put one ahead of many others who lag behind. Dhyeya IAS is manned with qualified & experienced faculties besides especially designed study material that helps the students in achieving the desired goal.

Civil Services Exam requires knowledge base of specified subjects. These subjects though taught in schools and colleges are not necessarily oriented towards the exam approach. Classes at Dhyeya IAS are different from classes conducted in schools and colleges with respect to their orientation. Classes are targeted towards the particular exam. Classroom guidance at Dhyeya IAS is about improving the individuals' capacity to focus, learn and innovate as we are comfortably aware of the fact that you can't teach a person anything, you can only help him find it within himself.

We feel that despite brilliance and diligence, most of the students are lacking proper guidance and aptitude needed to clear Civil Services Examination. This is why, we at Dhyeya IAS amalgamated the traditional as well as modern approach of teaching by incorporating best educators of the industry ably supported by Academic Associates, Class Notes and printed Study Material, routine as well as surprise Tests. Due to its arduous efforts, Dhyeya IAS is able to carve a niche among all the civil services coaching institutes in India. Access to an institution is as important as the quality of Institution. Our faith in this philosophy made us grow. With 12 Face to Face Centers located in different parts in India, Distance Learning Program , Live Streaming Centers and Residential Academy, we have made truly pan India presence. Ever since the foundation the institute has produced a heavy pool of bureaucrats both at central and state level. Dhyeya IAS not only aims at imparting the content of civil services in best way but also nurturing the aspirants as leaders of tomorrow who have a responsibility of fulfilling the dreams of around 1.4 billion Indians. Dhyeya IAS has guided over 50,000 aspirants with more than 4000 selections in civil services. Our journey is a small contribution for the development of the society and nation by nurturing the potential civil services aspirants.

Considering the toughness of Civil Services Exam, where success rate is a meager 0.1 percent, Dhyeya IAS has continuously produced phenomenal results over the years. Year after Year Dhyeya IAS is being recognized for imparting guidance to civil services aspirants using benchmarked quality practices. On the basis of scalability, innovation, achievements, impact potential our efforts and contribution have been acknowledged and rewarded with Education Excellence Awards by ET NOW, Brands Academy, Times of India, etc. This has enhanced motivation, pride and self-esteem of entire Dhyeya family.

dhyeyaias.com

Face to Face Centres

North Delhi : A 12, 13, Ansal Building, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi - 110009, Ph: 9205274741/42/44 | **Laxmi Nagar :** 1/53, 2nd floor, Lalita Park, Near Gurudwara, Opposite Pillar no.23, Laxmi Nagar, Delhi -110092, Ph: 9205212500/9205962002 | **Greater Noida :** 4th Floor Veera Tower, Alpha 1 Commercial Belt., Greater Noida, UP - 201310, Ph: 9205336037/38 | **Prayagraj :** II & III Floor, Shri Ram Tower, 17C, Sardar Patel Marg, Civil Lines, Prayagraj, UP - 211001, Ph: 0532-2260189/8853467068 | **Lucknow (Aliganj) :** A-12, Sector-J, Aliganj, Lucknow, UP- 226024, Ph: 0522-4025825/9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar) :** CP-1, Jeewan Plaza, Viram Khand-5, Near Husariya Chauraha, Gomti Nagar, Lucknow , UP - 226010, Ph: 7234000501/ 7234000502 | **Kanpur :** 113/154 Swaroop Nagar, Near HDFC Bank, Kanpur, UP - 208002, Ph: 7887003962/7897003962 | **Gorakhpur :** Narain Tower, 2nd floor, Gandhi Gali, Golghar, Gorakhpur, Uttar Pradesh 273001, Ph: 7080847474 | **Bhubaneswar :** OEU Tower, Third Floor, KIIT Road, Patia, Bhubaneswar, Odisha - 751024, Ph: 9818244644/7656949029

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.com/hindi

ध्येयIAS most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

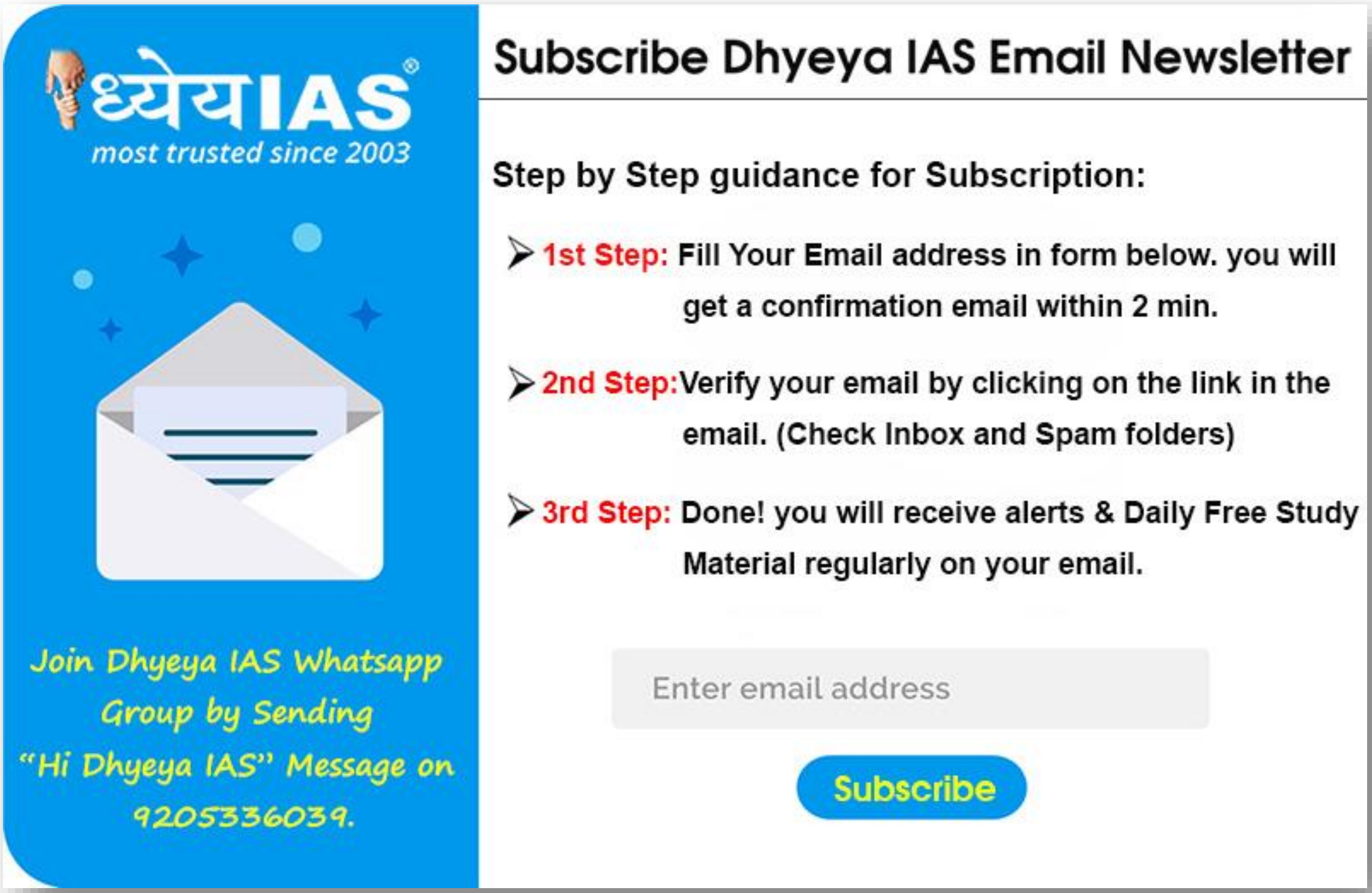

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744